ॐ

जुड़ने और जोड़ने के लिए

कान्यकुब्ज वाणी

2014

ब्राह्मणो दरिद्रः न च शूरवीरः, भग्नं महानन्दहि वंशसमूलं।
गठितं तदा एव मौर्य साम्राज्यं, सत्वेनयुक्तः चणकस्य पुत्रः।
साम्राज्यमन्त्रीऽपि कुटी निवासी, रचितं विपन्नोऽपि हि अर्थशास्त्रं।
नीतिप्रणेता कवि विष्णुगुप्तः, सत्वेन युक्तः चणकस्य पुत्रः।

आवरण कथा पृष्ठ 17

होली मिलन समारोह 2013

दीप प्रज्ज्वलन

सम्मान एवं पुरस्कार

ओम ब्रह्मण सभा

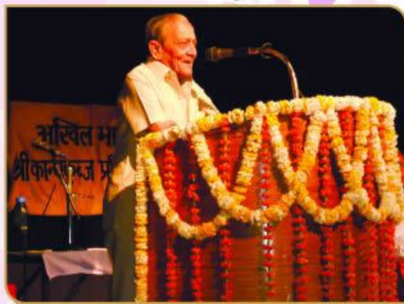

सारस्वत समाज

कान्य कुब्ज विदुषी

कान्य कुब्ज - रत्न

फुल हाउस

मेरी प्लेट कहाँ ?

महाकाल उज्जैन

मृत्युंजय मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

भावार्थ

हम उन भगवान शंकर की पूजा करते हैं जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं। जो सम्पूर्ण जगत् का पालन-पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं।

हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें जिससे मोक्ष प्राप्त हो जावे। जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार कें बंधनों से मुक्त हो जाती है, उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाये और आप के चरणों की अमृतधारा का पान करते हुये शरीर त्याग कर आप में लीन हो जावें।

इस प्रकार संक्षेप में यह महामृत्युंजय मंत्र :-

१. शरीर के अमरत्व प्रदान करने हेतु नहीं है।

२. व्यक्ति के अकाल मृत्यु से बचनें की प्रार्थना है।

३. इसमें शरीर की एक पीड़ा रहित बिना कष्ट से मुक्ति की प्रार्थना है।

४. आपकी नाशहीन आत्मा को परमआत्मा में समाहित कर पूर्ण अमरत्व प्रदान करता है जो मोक्ष कहलाता है।

डा० यू.डी. शुक्ला
आशियाना, लखनऊ

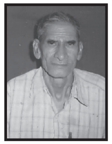

अवधी पन्ना

सुदामा चरित

शम्भू प्रसाद पाण्डेय ''शम्भु''
मलिहाबाद, लखनऊ

रमई काका के शताब्दी वर्ष पर आधुनिक सुदामा चरित अवधी पन्ने में प्रस्तुत है।

सुदामा पत्नी -

पाउडर क्रीम न माँगा कबऊँ, तन ढाकै का नाहिन पोढ़ि है धोती।
याक अंगरखी मिली बहड़ौर माँ, जहिमाँ जड़ाऊ रहै दुई जोती।
लरिकन क्यार खिलौना हैं पिल्लवा, बिटियन का घर तोता और तोती।
ऐसी जवानी मा बूढ़ भयेव, लरिका बिटिया लगैं पोता और पोती। ।१।
तुमतौ विद्यालय मा बनाये रहूयो आपन संघ, कृष्ण अध्यक्ष रहैं तुम रहौ मंत्री।
तुमका न पेटु भरि न अन्न है नसीब यहाँ, उनके पास राजतंत्र वुई है राजतंत्री।
तुमरे घर कुत्ता फरिका तोरि कै देवाल फाँदै, उनके हैं द्वार पर डटे डबल संत्री।
उनते मिलि यंत्रन के बनो तुम सप्लायर, कुछ दिनन बाद बनेव बड़े तुम यंत्री।२।
ठेका लई आव जाय, ठेका लई आव जाय, दिन रात रटती हौ जनती हौ वसूल का।
पार्टी का चन्दा हुआँ परति है करोड़न माँ, हियाँ एक टका नहीं है महसूल का।
धोती और कुर्ता हुआँ पहिरै का लकालक चही, धोती मा लागिति हव पुतरा तुम धूलि का।
बोली सुशीला है जुगाड़ याक हमरे पास, भ्यांट मा देव जाय गुच्छा तुम फूल का।३।

सुदामा -

बिना टिकट ट्रेन चढ़ि पहुँचे जाय द्वारिका मा, कैसे करी सामना यू मनमा बिचारै लाग।
महलन मा प्रवेश का न कउनौ जुगाड़ देखिनि, बाहर कहूँ मिलै क्यार मारग तलाशै लाग।
तीनि बजे पढ़िकै उद्घाटन याक बस्ती क्यार, हुवैं सामना क्यार साधन तलाशै लाग।
आवति खन समुहे दौरि गुच्छा दै फूलन क्यार, भइया कृष्ण भइया कृष्ण कहिकै पुकारै लाग।४।
सहना सिपाही सब दउरे भगावै बरे, सबका हटकि कहिनि काम का है मनई।
छाती ते कसिकै दोनों हाथन ते अगोटि लिहिन, कहै लाग तुम हौ बड़े खुद्दार मनई।
तुमका करोड़न क्यार मनई बनाय देइति, तुमरी आड़ लईकै बतिति अरबपति मनई।
अपने रनिवास मा सुन्दर सुपास दइकै, रानिन तै मिलाई कहिन खास है यह मनई। ५।
उनके नाम टेण्डर भे माफिया सरण्डर भे, ठेका मिले पुलन क्यार बिना नदी नाला के।
गुमनाम फर्मे उनकी सब चलै लागीं, बैंक वाले नौकर बने उनकी सब खाला के।
बड़े-बड़े ट्रकन ते पाथर सब ढोय लिखे, परचिन पर नम्बर रहैं मोपेड औ डाला के।
दुपहर औ संझा का न उनकी थकान मिटै, जब लग न साथु होय प्याला औ बाला के। ६।
हियाँ बैठी सुशीला बिचार करैं, महिना भरि बीति न आये सुदामा।
की कहूँ राह मा ध्वांखा भवा, या कहू ट्रक ते टकरान सुदामा।
या तौ वुई भटकि कै पहुँचि गये सीमा पार, पाक की जेलन मा बन्द भे सुदामा।
याक-याक दाना का त्राहि-त्राहि मची हियाँ, मैके ते न आये हमरे लरिकन कै मामा। ७।
द्वापर मा सुदामा रहैं अब श्रीदामा भये, मनमोहन साथु दिहिन फिरति हैं गड्डिन मा।
लोहा होय, कोयला होय, चाहे गुल्ली डण्डा होय, आन्धरि कमाई है सब जगह गड्डिन मा।
मेहनत की कमाई न सुदामा का नीकि लागै, उनके हराम घुसा याक-याक हड्डी मा।
खाली सुशीला है नहीं अपन रूप बदलिनि, लरिकन सहित आजौ मिल जाती झोपड़पट्टिन मा। ८।

पत्रिका का मुख पृष्ठ मात्र कलेवर ही न होकर एक विचार और संदेश होता जो आवरण कथा में स्पष्ट किया जाता है।

सम्पादकीय निवेदन

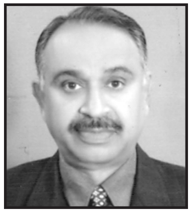

डा० डी० एस० शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

इस पाँचवें अंक के साथ ''कान्यकुब्ज वाणी'' शैशव अवस्था को पार कर बाल्यावस्था में प्रवेश कर रही है। जुड़ने और जोड़ने के अपने मुख्य उद्देश्य को यह पत्रिका पाने में शायद बहुत कुछ सफल हुई है। पहले वर्ष में मात्र तीन सदस्यों के साथ शुरू होने वाली ''वाणी'' की आजीवन सदस्यता आज लगभग २० गुना से ज्यादा हो चुकी है। २०१० में दी गई छात्रवृत्ति के निमित्त राशि इस वर्ष तीन गुनी से ज्यादा हो गई। छात्रवृत्ति के अलावा सभी छात्राओं को स्कूल जाने के लिये साइकिल व कुछ डिग्री कालेज छात्राओं को वर्ष भर की फीस भी उपलब्ध करा रही है।

सम्पादक मंडल का प्रयास रहा है कि ''वाणी'' में सम-सामयिक विषयों पर सामग्री पाठकों को उपलब्ध कराई जाय। इस प्रयास के तहत १९ वीं शताब्दी की महान त्रिमूर्ति महामना मालवीय जी, गुरूदेव रविन्द्रनाथ टेगोर तथा स्वामी विवेकानन्द की १५० जयन्ती के चलते इन पर लेख तथा इस वर्ष की चर्चित घटनायें जैसे अफगानिस्तान से अमेरिका की वापसी, पी आई एल, विवादित पितृत्व व पर्यावरण पर लेख हैं। प्रथम बार आयोजित ''दीपावली मिलन समारोह'' जो नैमिषतीर्थ में सम्पन्न हुआ। इस समारोह की झलकियाँ भी सम्मिलित की गयी हैं।

इस संस्करण में पहली बार हमें पाठकों की प्रतिक्रिया मिली है। हम इसका स्वागत करते हैं। प्रशंसा के अलावा कोई सुझाव अथवा सकारात्मक आलोचना को भी हम उसी उत्फुल्ल मन से लेंगे।

दुःख .... प्रशासनिक सेवा के पूर्व सदस्य एवं प्रसिद्ध साहित्यकार पं भवानी शंकर शुक्ल, सभा के कुलगान के रचयिता व ''वाणी'' के विशिष्ट सदस्य पं विजय शंकर जी शुक्ल व सीतापुर से ''वाणी'' के आजीवन सदस्य पं. भारतेन्दु त्रिवेदी जी अब हमारे बीच नही हैं। हम उनके व्यक्तित्व, कृतव्य एवं स्मृति को नमन करते हैं।

मंहगाई की वजह से छपाई की लागत और वेब साइट का किराये में अत्यधिक वृद्धि हुई है। केवल श्रद्धांजली और विज्ञापन से ही इस व्यय की आपूर्ति होती है। अभी तक केवल सम्पादक मंडल के प्रयास से ही ''वाणी'' छप रही है। अतएव विज्ञापन हेतु सहयोग की आवश्यकता है जिससे ''वाणी'' व वेब साइट की निरन्तरता बनी रहे।

अन्त में मैं सभी से अनुरोध करूँगा कि हमें छात्रवृत्ति के लिये ज्यादा से ज्यादा जरूरतमंद छात्राओं के नाम व पत्रिका के लिये रचनायें भेजने का प्रयास करें।

डा० डी.एस. शुक्ला
१८/३७८, इन्दिरा नगर
लखनऊ - २२६०१६

Mob.: 9415469561, 9792692413
e-mail: dsumeshdp@rediffmail.com
Kanyakubj website address: kanyakubj.org

Upendra Mishra
Advocate

Res./Off.: 'SAKURA'
4/53, Vishal Khand
Gomti Nagar, Lucknow-226010
Ph.: 0522-2395394

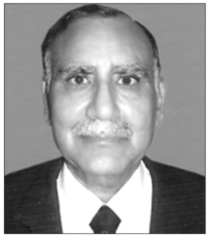

'कान्यकुब्ज वाणी' के एक और रोचक अंक हेतु पत्रिका के सम्पादक मंडल को बधाई। जुड़ने एवं जोड़ने के उद्देश्य से प्रकाशित इस पत्रिका के लेखक जातिवाद से हट कर समाज के सभी वर्गो के उपयोग हेतु है।

डा० डी० एम० शुक्ल के नेतृत्व में आयोजित निःशुल्क चिकित्सा शिवरों में अनेक लोगों ने ई०सी०जी०, बोन डेन्सिटी ब्लड शुगर की जाँच के साथ-साथ विशेषज्ञ परामर्श की सराहना करी।

सभा की वेबसाईट **www.ranyakuly.org** की बढ़ती हुई लोक प्रियता से हम सभी उत्साहित हैं और आशा करते हैं कि वेबसाईट पर मैट्रिमोनियल के अन्तर्गत दिये गये विवरण से अधिकाधिक लोग लाभन्वित होंगे।

सभी सदस्यों को शुभकामनाओं सहित

(उपेन्द्र मिश्र)

पाठकों की प्रतिक्रिया

सम्पादक ''कान्यकुब्ज वाणी''

श्री तिलक शुक्ल की कहानी ''प्रज्ञा चक्षु'' अपनी सशक्त कथा वस्तु, शीर्षक, प्रस्तुतीकरण पक्ष से अद्वितीय है। उसमें न्यायालय द्वारा भावनात्मक पृष्ठभूमि से अधिक व्यवहारात्मक पृष्ठभूमि को वरीयता देना भी उचित है। कहानीकार एक विलक्षण प्रतिभा का धनी है। उसका उपरोक्त बिन्दुओं पर प्रस्तुतिकरण बहुत सशक्त है। जिस दिन उसमें मुंशी प्रेमचन्द और शिवानी की भाँति भावनात्मक पक्ष को उभार कर अपने विशिष्ठ शब्द सौष्ठव से कहानी को हृदय में गुन्जायमान कर के विचारों में कुछ समय तक आच्छादित कर देने की कला को विकसित कर लेगा यह एक विशिष्ठ कहानीकार इस युग का होगा।

अतः मैं श्री शुक्ल को आशीर्वाद देता हूँ कि वह उपरोक्त बिन्दुओं पर विचार करते हुए एक विशिष्ट कहानीकार के रूप में स्वयं का विकास करें।

दिनांक ८ अक्टूबर २०१३

डा० यू० डी० शुक्ला
अध्यक्ष बरगद संस्थान

सुन्दरी के अन्तर्तम में शून्यता, रिक्तता और दृढ़ता को लेखक ने इतने सहज और मार्मिक ढंग से उकेरा है जो मानव मन में टीस व कसक की अनुभूति होती है। इस कहानी में लेखक ने नारी के त्याग व समर्पण का सजीव चित्रण किया है।

वर्तमान परिस्थितियों में सीरत की अपेक्षा सूरत को ही प्रधानता दी जाती है । इसकी अन्तिम परिणिति का भी चित्रण न्यायिक प्रक्रिया के माध्यम से सहज ढंग से तारतम्यता पूर्वक किया गया है।

ए० के० तिवारी
एच० जे० एस०

प्रिय डा० शुक्ला
सम्पादक ''कान्यकुब्ज वाणी''
प्रिय डा० शुक्ला

''कान्यकुब्ज वाणी'' में प्रकाशित रचना 'काला पन्ना' ने दिल को छू लिया। यह पन्ना समाज के उस गलीज सोच को इंगित करती है जिससे कि हमारी बहन और बेटियों को त्रासित करती हैं । काला पन्ना उस वर्ष की ऐसी घटना थी जिसकी भर्त्सना किये बगैर कोई भी पत्रिका अपने दायित्व का निर्वहन नहीं कर सकती। आपका प्रयास स्तुत्य है। इस पन्ने को प्रेरित अपनी पत्नी की एक रचना प्रेषित कर रहा हूं। उचित हो तो वाणी में स्थान दें। सादर !

एक पिता और भाई
निवेदन पांडे, अलीगंज, लखनऊ

संदेश

रमेश चन्द्र दीक्षित
पूर्व महानिदेशक पुलिस
उत्तर प्रदेश

प्रिय डा० शुक्ल

''कान्यकुब्ज वाणी'' अपने पुर्नजन्म के पश्चात निरन्तरता से समाज को प्राप्त हो रही है। यह अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है। इस सद्प्रयास से जुड़े सभी सम्मानित सदस्य निश्चय ही बधाई के पात्र हैं।

'अखिलभारतीय श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा' एक लम्बी अवधि से ब्राह्मणों का प्रतिनिधित्व करती आ रही है। इस सभा ने समाज को जगाने, कर्तव्यबोध कराने एवं उनका मार्गदर्शन करनें में गौरवमयी भूमिका का निर्वहन किया है। समाज के विभिन्न स्तरों को संगठित करने में गौरवमयी भूमिका का निर्वहन किया है। समाज के विभिन्न स्तरों को संगठित कर एक मंच प्रदान कर एक साथ आगे बढ़ने के लिए उत्प्रेरित करने सत्कार्य में यह सदा सदैव अग्रण्य रही है। आज भी सभा निर्धन मेधावी छात्र/छात्राओं की विभिन्न प्रकार से सहायता करने के अतिरिक्त विभिन्न आयोजनों द्वारा समरसता एवं सहभागिता स्थापित करने के अति उपयोगी कार्य में प्रयासरत है। समाज के स्वर्णिम इतिहास को वर्तमान सरोकारों के संदर्भ प्रस्तुत करने के महत्वपूर्ण कार्य को सुचारु रूप से आगे बढ़ाने के लक्ष्य को लेकर 'कान्यकुब्ज वाणी' का प्रकाशन निश्चय ही स्तुत्य प्रयास है। पत्रिका समाज की भावना का प्रतिनिधित्व तो करती है, उसके इतिहास को आधुनिक जीवन के सन्दर्भ में देखने की दृष्टि भी प्रदान करती है, जिससे भावी पीढ़ियाँ आगे बढ़ने का सम्बल प्राप्त कर सकें।

पत्रिका अपने कृश कलेवर में भी बहुत सम्वृद्धि संजोये है। 'कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा' की पत्रिका होने की सीमाओं के होते हुये भी साहित्य की विभिन्न विधाओं का समावेश, हर वर्ग के अनुरूप साहित्य का संयोजन, देश और काल के अनुरूप किसी की भावनाओं को ठेस न पहुँचाते हुये अपनी बात स्पष्ट कर सकना कदाचित एक शल्य चिकित्सा की प्रवृत्ति के सम्पादक के बूते की बात है। संभवतः इसी लिये सर्जन डा० डी० एस० शुक्ल को सम्पादक चुना गया है।

कामना करता हूँ कि पत्रिका डा० शुक्ल के नेतृत्व में निरंतर यजुर्वेद के दृष्टा के भाँति ''उत्काम महते सौभाग्याय (महान सौभाग्य के लिये ऊँचे उठो)'' का उद्घोष करती सफलता के अन्यतम सोपान पार करे।

मैं पुनः पत्रिका की निरन्तरता की कामना करते हुये प्रधान सम्पादक तथा सम्पादक मंडल को बधाई देता हूँ।

"सार्ध शताब्दी अथवा लगभग 150 वर्ष पहले"

आज से एक सौ पचास वर्ष पहले सोचते ही हम १८६० के दशक में पहुँच जाते हैं। उन्नीसवीं सदी के छठे दशक की स्थिति में। क्या था उस समय का भारत ? और क्या थी हमारी स्थिति और राजनैतिक परिस्थितियां ? ''क्या थे और क्या होंगे अभी ?'' प्रथम स्वतंत्रता संग्राम विफल हो चुका था। १८५७ को तीन चार वर्ष हो गये थे। भारत का सम्मान और स्वतंत्रता पूर्णरूप से समाप्त हो गये थे। बहादुरशाह 'जफर' पराजित और बंदी रंगून भेज दिये गये थे। रानी लक्ष्मीबाई, नानासाहब, तात्या टोपे, हजरतमहल, सभी के प्रयास निरर्थक ही रहे। अंग्रेजी शासन का वर्चस्व पूर्णरूप से स्थापित हो गया था। भारत महारानी विक्टोरिया के मुकुट का चमकता मणि बन गया था।

१९वीं सदी का छठवां दशक भारत की अस्मिता और पुनरुत्थान का दशक कहा जा सकता है। दादा भाई नौरोजी और योगेशचन्द्र चटर्जी जैसे भारतीय लंदन में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। भारत में इसी दशक में गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर (७ मई १८६१ – ७ अगस्त १९४१) मोती लाल नेहरू (६ मई १८६१) मदन मोहन मालवीय (२५ दिसम्बर १८६१) स्वामी विवेकानन्द (नरेन्द्र नाथ दत्त १२ जनवरी १८६३) और महात्मा गांधी (२ अक्टूबर १८६९) को भारतभूमि पर अवतरित हो रहे थे। ऐसी दिव्य विभूतियों ने अपने सतत् प्रयास से भारतवर्ष को विश्व पटल पर वह स्थान दिया था जिसका वह हकदार रहा है। स्वामी विवेकानन्द की १५०वीं वर्षगांठ भारतवर्ष मना रहा है। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ और महामना मदन मोहन मालवीय के १५० वर्ष अभी पूरे होकर १५१ वर्ष चल रहे हैं। अपना देश और समाज इन विभूतियों से कभी उऋण नहीं हो सकेगा। इनकी सार्धसदी के अवसर पर इन्हें अपने श्रद्धासुमन अर्पित करने के साथ उनसे संदेश एवं कार्यवृत्त को आगे बढ़ाने का दायित्व हमारे सब के ऊपर है।

गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर सम्भ्रान्त परिवार में जन्मे और स्वाध्याय से आगे बढ़े। विलायत की शिक्षा उन्हें रास नहीं आयी। बाल्यावस्था से ही कविता प्रस्फुटित हुई और ''भानुसिंह'' के संग्रह रूप में प्रकाशित हुई। प्रतिभा के धनी का यह काव्य प्राचीन ग्रन्थ की खोज और प्रकाशन के रूप में चर्चित हुआ। बंगाल के अभ्युदय काल में कविता, गीत, नाटक, कहानी और चित्रकला को

गुरुदेव ने नई दिशा दी। 'मानसी', 'गल्पगुच्छ', 'गल्पशल्य', 'पुनश्च', 'शेषसप्तक', 'चन्डालिका', 'चार अध्याय' जैसी तमाम रचनाओं के साथ 'गीताञ्जलि' गुरुदेव काव्य की शिरोमणि हैं। इसी ग्रंथ पर गुरुदेव को १६१३ साहित्य का ''नोबेल'' पुरस्कार मिला। गुरुदेव पहले गैर योरोपीय हैं जिन्हें ऐसा पुरस्कार मिला।

मात्र साहित्य ही गुरुदेव की साधना नहीं थी। भारत के समाज के उत्थान के लिये शिक्षा और संस्कृति का महत्व प्रतिपादित करते हुये गुरुदेव ने 'शान्तिनिकेतन महाविद्यालय' की स्थापना की जो आज विश्व भारती विश्वविद्यालय है। गुरुदेव परम मानवतावादी, विश्वबन्धुत्व और साम्राज्यविरोधी विचारों के अद्‌भुत सम्मिश्रण थे। अध्यात्म और सकारात्मकता उनकी जीवन शैली थी। १६१५ में ब्रिटिश सरकार ने गुरूदेव को 'सर' (Knighthood) की उपाधि दी थी पर १६१६ के जलियाँवाला हत्याकाण्ड के विरोध में उन्होंने 'नाइटहुड' की उपाधि लौटा दी।

पं० मदन मोहन मालवीय अत्यन्त सामान्य परिवार में जन्मे और अपनी प्रतिभा से आगे बढ़े। महामना मालवीय जी के पिता 'रामायण' और 'भागवत' के कथावाचक थे। प्रारम्भिक शिक्षा संस्कृत और सनातन धर्म के परिवेश में हुयी। इन के गुरु पं० आदित्य राम महाचार्य ने मालवीय जी की प्रतिभा को निखारा और उन्हें विभिन्न सामाजिक और राष्ट्रहित के कार्यक्रमों के लिये प्रेरित किया। लार्ड रिपन की विदाई समारोह (१८८४) में मालवीय जी की प्रतिभा सामने आयी। १८८६ के कांग्रेस के दूसरे सेशन, कलकत्ता में पं० आदित्यराम महाचार्य मदनमोहन जी को कलकत्ता ले गये थे। ए०ओ० ह्यूम मालवीय जी के भाषण और शैली से बहुत प्रभावित हुये। १८८६ से १६४६ तक जीवनपर्यन्त मालवीय जी कांग्रेस से जुड़े रहे और सक्रिय सहयोग करते रहे।

इसी प्रतिभा को देखा और राजा रामपाल सिंह बालाशंकर ने मालवीय जी को 'हिन्दोस्तान' पत्र का सम्पादक बना दिया। 'प्रदीप' में उनके लेख प्रकाशित होते थे। साप्ताहिक 'इण्डियन यूनियन' के प्रकाशन में उन्होंने अपने गुरु आदित्यराम महाचार्य को सहयोग दिया। मालवीय जी ने 'सनातन धर्म' और अंग्रेजी दैनिक 'दि लीडर' की स्थापना की और सफलतापूर्वक चलाया। १८६१ से

इलाहाबाद हाइकोर्ट में प्रभावी वकालत की और १६०५ में सफलता के शिखर वकालत से संन्यास ले लिया और १६१३ के बाद केवल ''चौरी-चौरा'' केस और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति (१६२०) के मामले में ही अदालत गये। अब उनका जीवन समाज को समर्पित था और पैसे की उन्हें चिन्ता नहीं थी। १६ दिसम्बर १६४६ को महामना मालवीय के चित्र के भारतीय संसद में अनावरण के समय राजर्षि टण्डन ने कहा था कि मालवीय जी ने जिस शुचिता और पवित्रता से अपना जीवन जिया उसी सुचिता के साथ उन्होंने वकालत की और यह उसी के लिये सम्भव है जो दौलत के पीछे न भागता हो। १६०३ में हिन्दू बोर्डिंग हाउस (इलाहाबाद) की स्थापना और मिन्टोपार्क (१६१०) (जो अब महामना पं० मदन मोहन मालवीय पार्क के नाम से जाना जाता है)। मालवीय जी की कृतियों के प्रतीक हैं। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना है। उनका विश्वास था कि मानव मूल्यों का विकास ही देवत्व है। स्वतंत्र भारत, संगठित भारत और आधुनिक भारत मालवीय जी का सपना था और उनका जीवन इसी के लिये समर्पित रहा। मालवीय जी अखिल भारतीय कांग्रेस के १६०६ (लाहौर) १६१८ (दिल्ली) १६३२(दिल्ली) १६३३ (कलकत्ता) के कांग्रेस के प्रेसीडेन्ट (राष्ट्रपति) रहे। १६३२ और १६३३ में सरकार द्वारा जेल में बंद होने के कारण वह कांग्रेस के सेशन में शामिल नहीं हो सके। अन्य सभी उपलब्धियों के साथ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की कल्पना, रचना और उपलब्धि मालवीय जी की ख्याति सजीव रखेगी और भारतीय समाज, दर्शन और संस्कृति के लिये उनका जीवन प्रकाश स्तम्भ रहेगा।

नरेन्द्रनाथ दत्त साधारण परिवार के प्रतिभाशाली सन्तान थे। बचपन से उनमें जिज्ञासा और सत्य जानने की चाह थी। ब्रह्मसमाज आदि उनकी जिज्ञासा शान्त नहीं कर पा रहे थे। ऐसे में उन्हें स्वामी रामकृष्ण परमहंस का सम्पर्क मिला। नरेन्द्र की जिज्ञासा और प्रश्नों को उत्तर मिला और उनका विश्वास रामकृष्ण उपासना और दर्शन के साथ भारतीय संस्कृति और धर्म के लिये समर्पित हो गया। दिसम्बर २४, १८८६ को नरेन्द्र ने घर छोड़ दिया। निर्णय कठिन था। १८८४ में पिता का देहान्त हो गया था। बड़े बेटे होने के नाते सारा दायित्व उन्हीं का था। संन्यासी का जीवन कठिन और अभावों से भरा था। १८६० में गुरु भाइयों को बेलूर में छोड़ते हुये भारत यात्रा पर निकल पड़े और

छोटे-बड़े जहां आश्रय मिला, निवास करते भारत और भारत की आत्मा को देखा। इसी अवधि में विवेकानन्द ने 'दरिद्र नारायण' को पहचाना और उनके विमुक्ति के लिये कार्य करने की योजनायें बनाई। खेती के महाराजा अजीत सिंह की सहायता से वह शिकागो की "विश्वधर्म सभा" में भाग लेने के लिये जा सके और अपने सम्बोधन में "अमेरिका के भाइयों और बहनों" के उद्बोधन से सभा का दिल जीत लिया। तीन वर्ष तक अमेरिका में भिन्न-भिन्न स्थानों पर अपने वक्तव्यों से भारतीय धर्म, वेदान्त और संस्कृति की ज्योति को प्रज्ज्वलित और स्थापित किया। १८९८ में वेलूर मठ और उससे एक वर्ष पूर्व १८९७ में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की । आज रामकृष्ण मिशन अगणित दीनदुखियों की सहायता कर रहा है। शिक्षा और भारतीय संस्कृत और वेदान्त दर्शन के प्रकाश को अक्षुण्ण बनाये हुये हैं। १८९९-१९०० में अपनी दूसरी विदेश यात्रा से विवेकानन्द भारत वापस लौट आये। चालीस वर्ष से कम की अवस्था में जुलाई ४, १९०२ को विवेकानन्द जी ने वेलूर मठ में अन्तिम साँस ली थी और भारत की युवा पीढ़ी के लिये चिन्तन संदेश छोड़ गये कि "वही ईश्वर की पूजा करता है जो प्राणिमात्र की सेवा करता है"। स्वामी विवेकानन्द अपने संदेश को किसी राजनीति से नहीं जोड़ते थे और सदा उन्होंने ऐसे संकुचित विचार का खण्डन किया। सत्य और ईश्वर स्वामी विवेकानन्द की दृष्टि विश्व की एकमात्र सही नीति के दिशा निर्देशक हैं।

१९वीं सदी के छठे दशक की इन विभूतियों में विश्वबन्धुत्व, प्रेम और सौहार्द की त्रिवेणी का निरन्तर प्रवाह है। भारतीय संस्कृति के स्वाभिमान और आत्मसम्मान को जागृत करने में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महामना पं० मदन मोहन मालवीय और स्वामी विवेकानन्द का अनन्त योगदान है और इसे सदा याद किया जाता रहेगा। आज का भारत इन महापुरुषों के जीवन, कार्य और समर्पण से प्रकाशित है। इन विभूतियों के कृत्यों को आत्मसात् करके सत्य, प्रेम और शुचिता के आधार पर देश को आगे बढ़ाने का प्रयास करें। यही सभी भारतीयों की इनके लिये सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

रमेशचन्द्र त्रिपाठी
A-1055, लेखराज मार्ग
इन्दिरा नगर, लखनऊ-२२६०१६
मो. 9415012040

ड्राइंग रूम वार्ता 3

जो लोग राय-बरेली रह चुके हैं जानते हैं कि इस शहर में मेज़बान को बहुत ही विनम्र होना पड़ता है । कोई चाहे जितना मुंह-फट, कटु वचन-दक्ष हो फिर भी यदि उसके यहाँ मेहमान होकर जायें तो वह आपको विनम्रता की प्रतिमूर्ति बना मिलेगा। एक शाम मेरे यहां लार्ड मैकाले के भक्त, ऐंग्लो फिल(अंग्रेज प्रेमी) लोगों का जमावड़ा था। वह अंग्रेजी भाषा की प्रशंसा कर रहे थे। एक कह रहा था Nothing is impossible in the word (World), दूसरे ने फर्माया किंग ब्रूस और स्पाइडर जैसी उत्साहवर्धक कथा हिन्दी तो क्या किसी भी अन्य भारतीय भाषा में है? जितने मुंह उतनी बातें। मेजबान के धर्म की विवशता मेरी वाणी को रोके थी। गोष्ठी में स्थानीय डिग्री कालेज के अंग्रेजी के आचार्य भी उपस्थित थे। परन्तु वह स्वयं मुह में पान दबाये मौन तो थे। केवल मुंडी हिला कर बीच-बीच में उन सज्जनों की हाँ में हाँ मिला रहे थे। मेरे एक चाचा जी जो कि पेशे से वकील हैं वहाँ मौजूद थे। वह एकाएक जोश में आ गये और उन सभी लोगों को रोकते हुए तेज़ स्वर में बोले "अच्छा बहुत ज्ञान बघार लीन्ह्यौं। अबहिन् एक ट्रान्सलेशन दै देई तो करत न बनी। बड़े अंग्रेज़ी दाँ बनि रहे हौ "।

वार्तालाप का माहौल बिगड़ने न पाये इस लिये श्री देवी दयाल शास्त्री* उठकर खड़े हुए और हँसते हुये बोले "डा० साहब अब मैं चलूँगा। यहाँ बतकहाव होने लगी"।

मैंने उन्हें साग्रह बैठाते हुए कहा " शास्त्री जी आप बिल्कुल न जायें। आप के जाने से इन आंग्ल प्रेमियों के बीच मैं असहाय महसूस करूँगा"। शास्त्री जी मेरे आग्रह का मान रखने के लिये बैठे ही थे कि अंग्रेजी भाषा के प्राचार्य जो अभी तक चुप थे एकाएक शास्त्री जी को चुनौती वाले स्वर में बोले "शास्त्री जी आप तो शिक्षक होने के साथ ही विद्वान् भी हैं। आप ही बतायें कि ऐसी उक्तियाँ किसी अन्य भारतीय भाषा में हैं क्या "?

शास्त्री जी बैठते हुए शालीनता से बोले "प्रोफेसर साहब हर भाषा बहुत ही सक्षम और सशक्त होती है। भाषाओं की सामर्थ्य की विवेचना वही कर सकता है जिसे उन भाषाओं का सम्यक् ज्ञान हो। मैं अपने को अभी भी एक छात्र ही

मानता हूँ। परन्तु आपकी इन दोनों उक्तियों से कई गुनी सुन्दर उक्तियाँ हिन्दी और संस्कृत भाषा में उपलब्ध हैं । स्वयं डा० साहब के पिता जी का मूल मंत्र ''जो इच्छा करिहौ मन माँहीं प्रभु प्रताप कछु दुर्लभ नांहीं '' नेपोलियन के वाक्य से अधिक सारगर्भित है। तथा राज ब्रूस की कहानी से ''गीता'' का ''उद्धरेदात्मानं नात्मानमवसादयेत्'' तथा ''भोज-प्रबन्ध'' में के चार श्लोक ''क्रियां सिद्धिः सत्वे भवति महाताम् नोपकरणे'', हताश व्यक्ति के लिये रामबाण हैं।

मुझे याद आया कि मैने ''क्रियां सिद्धिः सत्वे भवति'' शीर्षक का पाठ शायद हाईस्कूल की पाठ्य पुस्तक में पढ़ा है। अतएव मैंने उसी को विस्तार से बतानें का शास्त्री जी से आग्रह किया।

शास्त्री जी ने अपनी शान्त गम्भीर वाणी में कहना शुरू किया ......

राजा भोज का नाम तो आप सभी ने सुन रखा होगा। वह बहुत ही योग्य एवं प्रतापी राजा थे। उनके राज्य में बहुत सुख एवं शांति थी। एकक्षत्र राज्य में बहुत सुख और शान्ति कभी-कभी हानिकारक भी हो जाती है। सेनापति लापरवाह हो जाते जिससे सेना की लड़ने की क्षमता कम हो जाती है। यही अवस्था राजा भोज के राज्य में भी हो गयी थी। अवसर पा कर पड़ोसी देश के राजा ने भोज पर आक्रमण कर दिया। आक्रमण अप्रत्याशित था। भोज घिर चुके थे। मध्य रात्रि में सेनापति के साथ मंत्रणा कर रहे थे। वातावरण में भी हताशा व्याप्त थी। तभी प्रहरी ने आकर सूचना दी कि एक ब्राह्मण परिवार राजा को कविता सुनाने आया है। महारानी ने क्रोध करते हुए कहा ''इस गम्भीर मंत्रणा के समय तुम काव्य पाठ की सूचना लेकर आये हो। ब्राह्मण सुबह तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता''? परन्तु राजा ने प्रहरी को रोकते हुए कहा ''ब्राह्मण परिवार पता नहीं किस संकट में इतनी रात्रि को आया है। उसे बुला लो कविता सुना कर कुछ धन पा कर संतुष्ट हो जायेगा''।

ब्राह्मण के साथ उसकी पत्नी, पुत्र और पुत्रवधू भी थे। सभी पर सरस्वती की कृपा थी। आज्ञा पा कर ब्राह्मण ने कहा ....

विजेतव्या लंका चरण तरणीयो जलनिधिः,
विपक्षः पौलस्त्यो रणमुवि सहायाश्च कपयः।

तथाप्येको रामः सकलमवधीद् राक्षस कुलम्,
क्रियां सिद्धिः सत्वे भवति महतां न उपकरणे''

''लंका जैसी दुर्गम नगरी पर विजय प्राप्त करना था। समुद्र को पैरों से ही पार करना था अर्थात् अगाध समुद्र लांघने के लिये कोई समुचित साधन न था। वानर ही रणभूमि में सहायक थे (कोई प्रशिक्षित सेना नहीं थी) फिर भी राम ने समस्त राक्षसों को मार डाला (इससे सिद्ध होता है) कार्य की सफलता में स्वयं का पौरुष ही मुख्य है , उपकरण गौण है ''

राजा के मन में उत्साह का संचार हुआ। हताशा कुछ कम हुई। तभी ब्राह्मण की पत्नी ने स्वरचित श्लोक पढ़ना शुरू किया ....

घटो जन्मस्थानं मृगपरिजनो मूर्ज वसनो,
वने वासः कन्दाशनमपि च दुस्थं वपुरिदम।

तथाप्येकोऽगस्तयः सकालमपिवद् वारिधिजलम्,
क्रियां सिद्धिः सत्वे भवति महतां न उपकरणे।।

'' कवि ऋषि अगस्त्य के माध्यम से कहता है कि ....घड़े में जिनका जन्म हुआ हो हिरण्यादि पशु जिनके परिवारी जन रहे। भोजपत्र ही जिनका वस्त्र रहा। कन्दमूल फल जिनका भोजन रहा। इस प्राकर साधनों की नितान्त विपन्नता से शरीर की कोई स्थिति न रही। फिर भी अकेले ही अगस्त्य मुनि ने समुद्र को पी लिया। इससे यह सिद्ध होता है कि सफलता स्वयं के पौरुष में ही सन्निहित है साधनों या उपकरणों में नहीं।''

राजा भोज के मस्तिष्क में बिजली सी कौंध गई। वह लेटे से गाव तकिये के सहारे बैठ गये। युवा ब्राह्मण की ओर प्रश्न भरी निगाहों से देख ही रहे थे कि ब्राह्मण पुत्र-वधू ने चेहरे पर पड़े घूँघट को थोड़ा और नीचा करते हुए बहुत सुरीले स्वर में श्लोक पाठ करना शुरू कर दिया ....

धनुः पौष्पं मौर्वी मधुकरमयी चञ्चल दृशांदृशां कोणो
बाणः सुहृदापि जड़ात्माहिमकरः।

तथौयेकोऽनङ्गस्त्रिभुवनपि व्याकुलयति क्रियां
सिद्धिः सत्वेभवति महतां न उपकरणे।।

कामदेव का धनुष पुष्प है जिसमें भौंरो की प्रत्यंचा है। कामिनियों के आँखों के अपांग (कोंण) ही बाण का काम करते हैं। जड़ात्मा (चेतन नहीं) चन्द्र जिनका मित्र है और वह स्वयं अनङ्ग (बिना शरीर का) है। (इतना विपन्न साधन व असहाय होते हुए भी) कामदेव तीनों लोकों को व्याकुल करता रहता है। इससे यह सिद्ध होता है कि कार्य की सफलता स्वयं के पौरुष में ही सन्निहित है साधनों या उपकरणों में नहीं।''

राजा की हृदय गति बढ़ गई। रक्त में वीर रस का संचार होने लगा। वह अधलेटी मुद्रा से उठ कर बैठ गये। तभी युवा ब्राह्मण पुत्र ने काव्य का पाठ प्रारम्भ किया ......

रथस्यैकं चक्रं भुजग यमितः सप्त तुरगाः,
निरालम्बो मार्गश्चरणरहित सारथिरपि

रविर्गच्छत्यन्तंप्रतिदिनमपारस्य नभसः,
क्रियां सिद्धि सत्वे भवति महतां न उपकरणे।

''सूर्य के रथ में एक ही पहिया है। रथ के सात घोड़े सर्प वल्गा से नियन्त्रित हैं (नियन्त्रण के लिये कोई मजबूत रस्सी नहीं है। सर्प स्वयं सरकते रहते हैं) मार्ग निराधार है और सारथि अरुण पैरों से विकलांग हैं। फिर भी सूर्य इन न्यूनताओ के बावजूद प्रतिदिन अपार गगन को पार कर जाते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि कार्य की सफलता स्वयं के पौरुष में ही सन्निहित है साधनों या उपकरणों में नहीं।''

अन्तिम श्लोक समाप्त होते होते राजा भोज वीर रस की प्रतिमूर्ति हो गये। एकाएक उठ कर खड़े हो गये। राजा का रौद्र रूप देख ब्राह्मण परिवार भय से पीछे हट गया । महारानी भी बैठी न रह सकीं । भोज सिन्धु गर्जन स्वर में रानी से ब्राह्मण परिवार को पुरस्कृत कर अतिथि शाला में रोकने का आदेश देते हुए रण को प्रस्थान कर गये। मन्त्री भी सबको सावधान करने के लिये दौड़ा।

राजा का यह आक्रमण विरोधी राजा के लिये अप्रत्याशित था। उसके गुप्तचर तो उसे राजा की हताशा की सूचना दे रहे थे। वह भोज द्वारा समर्पण करने की बाट देख रहा था। किन्तु यह क्या इतना भयानक आक्रमण ! राजा भोज स्वयं साक्षात काल की तरह उसकी सेना को काटता चला आ रहा था।

विरोधी राजा को पलायन के अलावा कुछ और नहीं सूझा। वह युद्ध भूमि से जान बचा कर भाग गया।

विजयी राजा भोज नगर में प्रविष्ट हुए । नागरिक जयजयकार कर रहे थे। महारानी ने राजा की आरती उतारी परन्तु राजा की दृष्टि उस ब्राह्मण परिवार को खोज रहीं थी जो इस विजय का प्रणेता रहा था। ब्राह्मण परिवार अतिथिगृह में राजा का काव्य प्रेम, उदारता और वीर वेष का भय और भक्ति से स्मरण कर रहा था। राजा सीधे अतिथि गृह गये। ब्राह्मण परिवार की अभ्यर्थना की और उनको हमेशा के लिये अपनी राजधानी ''धारा नगरी'' में ही निवास करने का आग्रह किया। ब्राह्मण परिवार कृतकृत्य हो गया।

कथा समाप्त होने पर सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। शास्त्री जी ने कहा यह हमारे दैनिक जीवन की आम घटनायें ही हैं पर कवि प्रस्तुति व संदेश कितना सुन्दर है।

मैंने भी गद्‌गद होते हुए अपना विचार रखा। सन्देश और प्रस्तुति तो सुन्दर है ही परन्तु सन्देश देने के पात्रों का चयन भी कितना सोच कर किया है । सबकी निगाहों में प्रश्न देख मैंने अपनी बात पूरी की। कवि ने वय एवं पात्रता के हिसाब से श्लोकों का चयन किया। देखिये वृद्ध ब्राह्मण ने मर्यादा पुरुषोत्तम का उदाहरण दिया। माँ ब्राह्मणि ने जन्म से सम्बन्धित घटना बताई। युवा ब्राह्मण ने उग्र मार्तण्ड का जिक्र किया और नववधू ने श्रंगार और सृष्टि के आधार मन्मथ का। ये उद्धरण अनायास ही न हो कर कवि का सौष्ठव दर्शाता है।

कवि की इस अनुभूति को सभी ने सराहा।

चलते समय चाचा जी (वकील साहब) ने प्रोफेसर साहब से पूछा '' प्रोफेसर साहब यह कथा किंग ब्रूस की कथा जितनी प्रभावी है अथवा नहीं?

प्रोफेसर साहब ने शास्त्री जी को नमस्कार करते हुए कहा '' उससे कई गुना अधिक प्रभावी। आपका कहना सही है प्रत्येक भाषा सशक्त है''।

*श्री देवी दयाल शास्त्री जी पिछले दो दशकों से अध्यापक कान्स्चुयेन्सी से विधान परिषद के सदस्य हैं।

डा० डी.एस. शुक्ला

शंकर गेस्ट हाउस

ए.सी. एवं नान ए.सी. कमरे उपलब्ध हैं

प्लाट नं० 5, सरस्वती पुरम, निकट पी.जी. आई.
रायबरेली रोड, लखनऊ

सु ील दीक्षित
योगे ा कुमार
पंकज

महानायक चाणक्या

ब्राह्मणो दरिद्रः न च शूरवीरः, भग्नं महानन्दहि वंशसमूलं।
गठितं तदा एव मौर्य साम्राज्यं, सत्वेनयुक्तः चणकस्य पुत्रः।
साम्राज्यमन्त्रीऽपि कुटी निवासी, रचितं विपन्नोऽपि हि अर्थशास्त्रं।
नीतिप्रणेता कवि विष्णुगुप्तः, सत्वेन युक्तः चणकस्य पुत्रः।

''एक पुरूषार्थ से सम्पन्न दरिद्र ब्राह्मण जो कि कोई योद्धा भी नही था, ने महान नन्द साम्राज्य को नष्ट कर उसके स्थान पर एक मौर्य साम्राज्य स्थापित कर दिया। वह एक महान साम्राज्य का महामन्त्री होते हुए भी कुटी में रहता था। पुरूषार्थ से युक्त चणकपुत्र विद्वान विष्णुगुप्त ने स्वयं निर्धन रहते हुए, अर्थशास्त्र तथा एक महान नीति–शास्त्र (चाणक्य–नीति) की रचना की''

(''क्रियां सिद्धि सत्वे भवति'' से प्रेरित पंक्तियाँ)

नीतिकार, आचार्य, महामंत्री, चाणक्य, विष्णगुप्त, कौटिल्य अदि नामों से विश्रुत "चाणक्य" विश्व का सबसे दृढप्रतिज्ञ, वज्रादपि कठोर, कुसुमापि कोमल ऐसी विशिष्ठताओं से परिपूर्ण व्यक्तित्व पूरे वैश्विक इतिहास में नही होगा। विशेष कर उस काल में जबकि ज्ञात विश्व की सभ्यतायें जन्म ले रही थीं, भारत तब भी सोने की चिड़िया माना जाता था। सुदूर पश्चिम से "एलेक्ज़ेंडर" नाम की एक आंधी उठी जो मिस्र, मध्यपूर्व को ध्वस्त करते हुए भारत की ओर आ रही थी। भारत के मगध में नन्द साम्राज्य ही इस आँधी को रोकने में सक्षम था। परन्तु उसका सम्राट नन्द मघप एवं विलासी था। राज्य में कुशासन व्याप्त था। मंत्री भ्रष्ट व जनता के शोषक हो गये थे। राष्ट्र दिशा विहीन हो चुका था। ऐसे में चणकपुत्र विष्णुगुप्त जो कि नालंदा में आचार्य था एक महानायक के रूप में उठा। उसने साधारण से युवक को शिक्षित और प्रेरित कर दुराचारी नन्द को हटा कर मगध का सम्राट बना दिया। भारत की धरती से यूनानी सेना को खदेड़ कर कंधार तक साम्राज्य का विस्तार किया। चाणक्य द्वारा रचित नीति शास्त्र व अर्थशास्त्र आज भी विश्व में प्रसिद्ध है।

इस प्रकार आचार्य चाणक्य ने ईसा से 225 वर्ष पूर्व भारत के सभी गुरूकुलों को एकता के सूत्र में बांधा। परिणाम...... महान "नन्द साम्राज्य" का पतन। उन्होने नन्द के स्थान पर चन्द्रगुप्त मौर्य को सम्राट बना दिया। ब्राह्मण वर्ग चाणक्य के प्रयास से इतने सक्षम हो गये थे कि पुष्यमित्र शुंग जो कि भरद्वाज व कश्यप गोत्रीय कान्यकुब्ज ब्राह्मण था, ने मौर्य साम्राज्य को हटा कर ब्राह्मण राजवंश की नीव डाली। महर्षि चाणक्य के प्रयास का इतना व्यापक प्रभाव था कि ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से ईसा के बाद छठी शताब्दि तक ब्राह्मण सम्राटों का राज्य रहा (दक्षिण में ब्राह्मण सातवाहन वंश भी इतना ही गौरवशाली रहा)। यही काल भारत वर्ष के इतिहास में "स्वर्णिम युग" के नाम से जाना जाता है। व्यापारिक और आर्थिक स्तर पर ही नहीं इस काल में ललित कलाओं, दर्शन तथा विज्ञान का भी समुचित विकास हुआ। शुंग काल में वैय्याकरण पाणिनि, योग शास्त्र के प्रणेता पतंजली ऐसी विभूतियॉ हुईं। गुप्त काल में समुद्रगुप्त ऐसा शूर विजेता जिसे कि अंग्रेजी साहित्यकार "भारत का नेपोलियन" कहते हैं। इसके पुत्र "चन्द्रगुप्त द्वितीय" थे जिन्हे "विक्रमादित्य" के नाम से जाना जाता है। विक्रमादित्य को आज भी राम के बाद सबसे उत्कृष्ट प्रजापालक माना जाता है। इन्ही के नाम का "विक्रम संवत" कलेन्डर आज भी हिन्दू परिवारों में व्रत त्योहारों के लिये प्रयोग होता है। विक्रमादित्य के "नव रत्नों" में कालिदास, वराहमिहिर, आर्यभट आदि थे।

उपरोक्त उद्धरण का उद्देश्य इतिहास पढ़ाना नही है। मात्र इंगित करने के लिये है कि ब्राह्मण यदि संगठित हो जाय तो समाज, देश और पूरे विश्व के लिए बहुत कल्याणकारी सिद्ध हो सकता है।

ईसा के 225 वर्ष पूर्व जब सूचना संचार के माध्यम आज की तुलना में नगण्य थे ब्राह्मण एकजुट हो सके तो आज कम्यूनिकेशन सेटेलाईट इंटरनेट 3जी मोबाइल के जमाने में एकजुट क्यों नहीं ?

आइये हम सभी "एकोऽहं द्वितोयो नास्ति" के स्थान पर "एकाः वयम्" का उद्घोष करें।

ग्लोकोमा

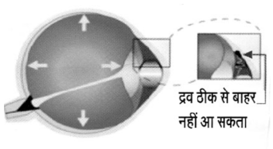

तीर के निशान आँख के भीतर के बढे हुए दबाव को दर्शाते हैं.

अलबत्ता ग्लोकोमा (सवलवाई) विश्व में दृष्टिहीनता के मुख्य कारणों में से एक है, परन्तु दुर्भाग्यवश रोगियों को इसका संज्ञान नहीं हो पाता। भारतवर्ष एवं अन्य विकासशील देशों में प्रायः रोगियों को इस बीमारी का आभास तब हो पाता है जब उनकी दृष्टि का अधिकतर भाग खो चुका होता है।

ग्लोकोमा से खोई दृष्टि किसी भी प्रकार के इलाज से वापस नहीं हो पाती।

भारतवर्ष में लगभग १.२५ करोड़ लोग ग्लोकोमा से पीड़ित हैं तथा १६ लाख लोग इस बीमारी से दृष्टिहीन हैं। वर्ष १६६६-२००१ के भारत सरकार के एक सर्वेक्षण के अनुसार जनसंख्या के लगभग ५.६ प्रतिशत लोगों में ग्लोकोमा के लक्षण (पीड़ित) मिले।

चोरी-चोरी धीरे से नजर कमजोर करने वाला ग्लोकोमा आँख की उन स्थितियों के समूह का नाम है जो नजर पर असर डालती है। ग्लूकोमा के अधिकतर मामले में आँख के भीतर का दबाव बढ़ता है, जिससे आप्टिकनर्व को नुकसान पहुँचता है तथा धीरे-धीरे नजर कमजोर होती है।

ग्लोकोमा प्रायः दोनों आँखों पर असर करता है। आमतौर पर तीव्रता में भिन्नता होती है। सम्भव है कि एक आँख में दूसरी आँख से पहले ग्लोकोमा के लक्षण आ जाये। यदि ग्लोकोमा का इलाज प्रारम्भ से ही न किया जाये तो दृष्टिहीनता आ सकती है। यदि प्रारम्भिक स्थिति से ही रोग का पता लग जाये और तत्परता से रोग का उपचार किया जाये तो रोगी की नजर को और कमजोर होने से बचाया जा सकता है।

ग्लोकोमा के प्रकार : **(१) ओपन एंगल ग्लूकोमा धीरे-धीरे पैदा होता है। जब आँख के भीतर की बहाव नलिकाएं द(ट्रैबेक्युलर में नेशवर्क)**

अवरुद्ध होने लगती है और आँख का द्रव्य ठीक तरह से बाहर नहीं निकल पाता, जिससे आँख के अन्दर का दबाव बढ़ने लगता है। दबाव बढ़ने के कारण आप्टिकनर्व तथा रैटिना के नर्व फाइवर क्षतिग्रस्त होने लगते है। प्रायः इस प्रकार के ग्लोकोमा में दर्द नहीं होता। इस प्रकार का ग्लोकोमा ही सबसे अधिक पाया जाता है।

(२) दूसरे प्रकार का ग्लोकोमा एंगल क्लोजर ग्लोकोमा कहलाता है तथा कम पाया जाता है। यदि तत्काल इलाज न कराया जाये तो इसमें दृष्टिहीनता बहुत जल्दी आ जाती है। इसमें आँख के अन्दर का बहाव एक दम से बन्द हो जाता है। रोशनी तुरन्त धुँधली हो जाती है तथा प्रकाश पुंज (बल्ब आदि) के चारों ओर इन्द्रधनुषीय गोल दिखाई देने लगते हैं। तुरन्त इलाज होना अतिआवश्यक है।

(३) इसके अतिरिक्त तीसरे प्रकार के ग्लोकोमा होते है, जो आँख की अन्य बीमारियों जैसे आँख के अन्दर रक्तस्राव होने, सूजन होने, मोतियाबिन्द के अधिक पक जाने पर अथवा आँख के ट्यूमर के कारण होता है। इनमें मूल बीमारियों के इलाज से ही ग्लोकोमा ठीक किया जा सकता है।

ग्लोकोमा के लक्षण :–

(१) अँधेरे में देख पाने में कठिनाई होना

(२) चश्मे का नम्बर तेजी से बदलना

(३) चश्मा लगने के बाद भी नजर में धुंधलापन रहना

(४) नजर का लगातार घटते चले जाना अथवा

(५) आँख में एकाएक दर्द होने के साथ धुंधलापन आना तथा लाईट के आस–पास इन्द्रधनुषीय गोले दिखाई देना।

जोखिम किससे अधिक है :–

आँख का दबाव बढ़ा होना (सामान्य दबाव १४–२० मिली० मी०)

बढ़ती उम्र ४० वर्ष से अधिक आयु के लोग

नजदीक की नजर में खराबी

ग्लोकोमा का पारिवारिक इतिहास

स्वास्थ्य समस्याएं जैसे मधुमेह, माईग्रेन, सिरदर्द आदि

स्टीराइडो का दीर्घकालीन प्रयोग

आँख में कभी ऐसी चोट लगी हो जिसके कारण आँख के अन्दर रक्तस्राव हुआ हो।

निदान :– ग्लोकोमा का पता कैसे लगे?

आँख के डाक्टर ग्लोकोमा की जाँच कर सकते हैं। इस जाँच में कोई दर्द नहीं होता है। यह जाँच तुरन्त की जा सकती है। इसके लिये पहले से किसी प्रकार की तैयारी की आवश्यकता नहीं होती। एक ही बार में सभी जाँचें करा लेनी चाहिये।

प्रायः ग्लोकोमा के लिये निम्न तीन जाँचें काफी होती हैं :–

आँख के दबाव की जाँच (आई० ओ० पी०) यह टोनोमीटर (विभिन्न प्रकार के उपलब्ध है) द्वारा की जाती है, जिससे आँख के भीतर का दबाव जाँचा जाता था।

आप्थैलमोस्कोपी के द्वारा आप्टिक डिस्क का परीक्षण किया जाता है, जिससे आप्टिकनर्व का भी ज्ञान हो जाता है।

पैरामीटरी(विजुअल फील्ड जाँच) इससे यह जाँचा जाता है कि आँख के किस भाग से दिखाई नहीं दे रहा है। रोशनी के बिन्दुओं को एक क्रम दिया जाता है। जिससे न देखने वाले भाग का ज्ञान हो जाता है।

कभी–कभी कुछ विशेष जाँचो जैसे ओ० सी० टी० की भी आवश्यकता पड़ती है।

रोकथाम :– ग्लोकोमा की रोकथाम करने तथा आँखों के स्वास्थ्य को बचाये रखने के लिये नियमित रूप से आँखों की जाँच करवाना महत्वपूर्ण है। यदि आपके आँख अथवा चश्में के डाक्टर को पता चलता है कि आपको ग्लोकोमा है तो जल्द इलाज से आपकी नजर और कमजोर होने से रुक सकती है।

उपचार :– ग्लोकोमा ठीक होने वाली बीमारी नहीं है। ग्लोकोमा का इलाज डॉक्टर्स के परामर्श पर ग्लोकोमा निरोधक आइड्राप्स तथा गोलियों द्वारा किया जाता है। आवश्यकतानुसार लैजर अथवा ऑपरेशन द्वारा भी इलाज किया जाता है। उपचार का एक ही प्रयोजन होता है कि आँख की नजर को और कमजोर होने से बचाया जा सके। यह बात तो पक्की है कि ग्लोकोमा में गई नजर को ठीक नहीं किया जा सकता। आँख के दबाव (आई० ओ० पी०) को नियंत्रित करके ही ग्लोकोमा के कारण नजर में आने वाली कमी को रोका जा सकता है। आँख के डाक्टर्स के पास ऐसा करने के कई उपाय हैं।

हालाकि नियमित उपचार से ग्लोकोमा को नियंत्रित किय जा सकता है। संभवतः ऑपरेशन न करना पड़े, परन्तु जा चुकी नजर को पुनः वापस नहीं लाया जा सकता। अतः ग्लोकोमा का शीघ्र पता लगाना और उपचार किया जाना अतिआवश्यक है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण है कि रोगी डॉक्टर द्वारा बतायी गयी दवाओं का नियमित रूप से प्रयोग परे तथा इन्हें लेने में चूक न करें।

यहाँ यह भी बताना आवश्यक है कि कुछ बच्चों को जन्म से ही ग्लोकोमा होता है। इसकी पहचान जन्म के समय अथवा एक वर्ष के अन्दर की जा सकती है। बच्चे की आँख में अधिक पानी आना, रोशनी में दिक्कत होना तथा आँखों को अधिक सिकोड़ना, मिचमिचाना ग्लोकोमा के लक्षण हो सकते हैं। ऐसे बच्चे को आँख के डाक्टर को दिखाकर सलाह लेना अति आवश्यक है।

पुनः अवगत कराना चाहूँगा कि ग्लोकोमा का उपचार प्रारम्भिक स्तर पर ही सम्भव है। अतः समय से जाँच आवश्यक है। इलाज से पूर्व गई रोशनी वापस नहीं आ सकती।

डा० वी० के० मिश्रा
निदेशक
सी० वी० नेत्रालय

Breast Cancer
(स्तन का कैंसर)

डा० परेश शुक्ल
सर्जन अवध हॉस्पिटल

(दुनिया में लगभग २० महिलाओं में एक महिला जीवन में स्तनगाँठ महसूस करती है। परन्तु इनमें से बहुत ही कम महिलाओं में यह गाँठ कैंसर की होती है। शिक्षा के स्तर के अनुरूप महिलाओं का रिसपांस मर्ज को पूरी तरह से उपेक्षित करने से ले कर आतंकित व मनोविकार से ग्रस्त होने तक होता है। जो अज्ञान से उपेक्षा करती हैं वह कैंसर होने पर बहुत देर से सर्जन से राय लेती हैं तथा कुछ अधिक जानकारी की वजह से छुपाने का प्रयास करती हैं कि लोगों को पता चलने पर इनकी बेटियों के विवाह में कठिनाई आयेगी और कुछ सौन्दर्य के खण्डित होने के डर से छुपाने की कोशिस करती हैं। यह दोनों ही एप्रोच गलत हैं। डा० परेश ने इन्हीं भ्रान्तियों को निर्मूल करते हुए लेख प्रस्तुत किया है।'')

स्त्रियों में होने वाले कैंसर का लगभग २३ प्रतिशत कैंसर स्तन कैंसर होता है। यह पश्चिमी देशों में हमारे देश से ज्यादा संख्या में होता है। वर्ष २००८ में दुनिया लगभग ४५८५०३ मौतों के लिये स्तन कैंसर जिम्मदार पाया गया।

Risk factors (कारण) :– सभी स्तन के कैंसरों में कारण नहीं पाया जाता है परन्तु कुछ स्थितियों व स्तन कैंसर में सम्बन्ध पाया जाता है।

धूम्रपान व शराब

आनुवंशिक माँ, बहन और मौसियों ब्लड रिलेटिव्ज में अगर कैंसर हुआ हो तो इसकी संभावना सभी रक्त में होने की संभावना बढ़ जाती है।

हारमोनल महिलायें जिन्होंने कभी गर्भ धारण न किया हो अथवा पहले गर्भ को ज्यादा उम्र में धारण किया हो, सम्भावना बढ़ जाती है।

बिजली की सिकाई जिनमें किसी अन्य वजह से बिजली की सिकाई या रेडियोथेरैपी की गई है, उनमें स्तन का रिस्क ज्यादा होता है।

लक्षण

गाँठ सौ में से ८० मरीज स्तन में गाँठ महसूस करती है।

निपल से डिस्चार्ज निपल से रक्त स्राव होना

निपल रिट्रैक्शन और खाल की त्वचा में परिवर्तन निपल का अन्दर की तरफ धँस जाना तथा खाल का संतरे के छिलके की तरह दानेदार हो जाना।

डायग्नोसिस मैमोग्राफी, अल्ट्रासाइन्ड, एम आर आई, पतली नीडिल से गाँठ की जाँच, मोटी नीडिल से गाँठ की जाँच, वैक्यूम एसिस्टेड बायप्सी, ऑपरेशन द्वारा गाँठ के टुकड़े या पूरी गाँठ निकाल कर जाँच।

अन्य स्थिति जिनमें कैंसर का शक हो सकता है स्तन की सभी गाँठें फाइब्रोएडीनोसिस, फाइब्रेएडीनोमा, स्तन में एकत्र पुराना पस और फैट नेकोसिस। यह सभी बीमारियाँ कैंसर नहीं होतीं। परन्तु पता चलते ही किसी कुशल सर्जन से राय अवश्य लें।

स्टेजेस एवं उपचार कैंसर की शुरूआती लक्षण में ही पकड़ जाने पर इसका पूर्ण उपचार सम्भव है।

प्रारम्भिक कैंसर कैंसर की शुरुआती लक्षण में ही पकड़ जाने पर इसका पूर्ण उपचार सम्भव है। यह स्थिति जब गाँठ बहुत छोटी हो और गाँठें बगल (**Arm pit**) तक न पहुँची हों।

१. इसमें सर्जरी एन्टी कैंसर दवाओं के साथ या

२. बगैर बिजली की सिकाई

३. हारमोन द्वारा इलाज

४. टारगेटेड उपचार।

अब प्रारम्भिक कैंसर में स्तन पूरा न निकालकर मात्र कुछ हिस्सा ही निकाला जाता है तथा बगल की गाँठ (**sentinel node**) निकाल कर जाँच की जाती है। ऐसे मरीजों को बिजली की सिकाई करानी होती है तथा लगातार सर्जन के सम्पर्क में रहना होता है।

स्तन तक ही सीमित परन्तु एडवान्स्ड कैंसर स्तन की बहुत बड़ी गाँठ छाती की माँसपेशियों अथवा खाल तक पहुँचा हो और बगल की गाँठें बड़ी व फिक्स्ड हों।

ऐसे मरीजों को पहले एन्टी कैंसर दवायें देकर जब गाँठें छोटी हो जाय तब सर्जरी की जाती है। बाकी एन्टी कैंसर दवायें व बिजली की सिकाई की जाती है।

मेटैस्टैटिक कैंसर (शरीर के दूरस्थ अंगों में फैला कैंसर)

कैंसर जब दूरस्थ अंग जैसे हड्डी फेफड़ा लीवर या अन्य अंगों में फैल गया हो ऐसे मरीजों के उपचार के परिणाम बहुत अच्छे नहीं होते। ऐसे में एन्टीकैंसर दवायें बिजली की सिकाई तथा हारमोन दिये जाते हैं। मरीज की स्थिति में सुधार के बाद ही सर्जरी की जाती है।

हारमोन द्वारा उपचार

कैंसर के ऊतक में स्त्री हारमोन्स ईस्ट्रोजिन व प्रोजेस्ट्रान की जाँच की जाती है जिसके आधार पर हारमोनल दवायें दी जाती हैं।

नई तकनीक (टारगेटेड चिकित्सा) जिन महिलाओं के ऊतक में Zn4 रिसेप्टर प्रोटीन पाजिटिव होता है उनमें हरकैप्टिन का रोल बहुत अच्छा देखा गया है।

सारांश स्त्रियों में पाया जाने वाला यह कैंसर बहुत ही कामन है।

दूसरे कैंसरों की अपेक्षा यह काफी कम उम्र में पाया जाता है।

शुरूआती दौर में पता चलने व उचित उपचार से इसके ठीक होने की काफी सम्भावना होती है।

स्तन में गाँठ होना ही इसका प्रमुख लक्षण है। प्रत्येक महिला को समय पर स्वयं गाँठ के लिये अपना परीक्षण करते रहना चाहिये। यह स्तन की गाँठ पकड़ने की सबसे प्रभावी विधि है।

उन महिलाओं में जिनके निकट रिश्तेदारों या रक्त सम्बन्ध जैसे माँ बहन या मौसी में कैंसर होता है उन महिलाओं में इस कैंसर का खतरा बहुत बढ़ जाता है।

स्तन कैंसर के इलाज की नई व प्रभावशाली तकनीक खोजने का प्रयास पूरे विश्व भर में चल रहा है जोकि कैंसर को पूरी तरह ठीक कर महिला को साधारण जीवन व्यतीत करने में सहायक हों।

अन्ततः एन्जीलिना जोली (प्रसिद्ध हॉलीवुड अभिनेत्री) जिन्होंने अपने दोनों स्तन इसलिये ऑपरेशन द्वारा निकाल दिये क्योंकि उनके परिवार में आनुवंशिक स्तन कैंसर होने की सम्भवना ८० प्रतिशत थी। यह एक नई सोच तो अवश्य है पर अभी भारत में जाँच की उतनी उच्च तकनीक नहीं प्राप्त है इसलिये यहाँ महिलाओं को इसके बारे में नहीं सोचना चाहिये।

शुभकामनाओं सहित :

आयुर्वेद : आयु यानि जीवन, वेद यानि ज्ञान

ममता आयुर्वेदिक एजेन्सीज

एस 6/132, आजाद मार्केट, एच.ए.एल. गेट के सामने,
इन्दिरा नगर, लखनऊ फोन 0522-2344328

उच्च कोटि की आयुर्वेदिक एवम यूनानी औषधियों हेतु पधारें।

वैद्यों के नुस्खे बनाने की सुविधा उपलब्ध है।

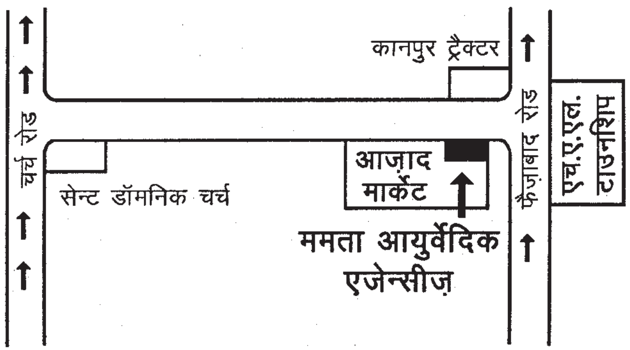

PUBLIC INTEREST LITIGATION (PIL)

AN INTRODUCTION

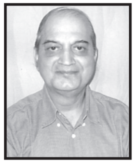

R.G. Shukla

When justice had not been given to the persons, who are very poor are not getting their due because they are illiterate, they belong to lower class of society, they are handicapped, downtrodden, they have no access to justice, they are women, children, socially backward class, and so, by providing justice to these class of people a branch of legal proceeding known as Social Interest litigation or Public Interest litigation was introduced in Courts of Law.

In the case of **D.K. Parihar Vs. Union of India (AIR 2005 Raj 171)**, the Court defined the Public Interest Litigation in very simple and clear terms. " The Pubic Interest Litigation means a legal action initiated in a court of law for the enforcement of public interest or general interest in which the public or a class of community has pecuniary interest or some interest by which their legal rights or liabilities are affected". Further, in the case of **Janta Dal Vs. H.S. Chawdhary (1992) 4 SCC 305**, the Supreme Court says : "PIL means a legal action intended in a Court of Law for enforcement of public interest or general interest in which public or class or the community have pecuniary interest or general interest by which their rights or liabilities are affected". Therefore, what rights and liabilities have As long as the legislature or executive fail to perform their duty, act arbitrarily by not giving justice to millions of needy, neglected people and who are suffering hardships at the hands of some people or class of people, Public Interest litigation is a powerful sword for giving salace to them by protecting or

providing them justice so that they also live with dignity and honourably in their mother land.

in case there is a violation of fundamental rights of section of society, our Constitution has provided remedy under article 32 and 226. Under Artcle 32, the aggrieved persons may file petition before the Supreme Court and similar petition can be filed under Article 226 of the Constitution before the respective High Court having territorial jurisdiction for the cause of action.

"PIL" is usually filed to enforce the fundamental rights of the general citizen when the government fails to perform its duties are infringed. It gives an opportunity to challenge the wrong doing of the Government before the Courts having competent jurisdicton to provide relief to the sufferings of the public, who by reason of drawback such as illiteracy, ignorance, poverty or fear of the powerful persons or Government servants cannot gather courage to reach or approach the petitions (PIL), where the matters relate to large section of public involving their interest in general.

Any member of public or group of such persons, who have no personal interest in the matter in issue but acting with bonafide, can file PIL for securing justice to the PIL with intent to secure political mileage or personal publicity. Further, "PIL"cannot be allowed to be filed as means of setting personal disputes or with intent to serve some malafides.

"PIL" are welcomed for basic amenities to the public like right to city residents to have drinking water, citizens have statutory right to clean city, upgradation of sewerage system, Regulation and Licensing of blood Banks, to prevent exploitation of children, such as bounded labourers, employment of minors in various factories in the state, prevention of child marriage etc.

In a famous case of **A.R. Antuley** Supreme Court held in 1984 that politicians must answer for corruption and directon was given that MLA is not 'public servant' and his trial should go on irrespective of sanction **(R.S. Nayak Vs. A.R. Antuley AIR 1984 SC 684).** In the PIL initiated by former Chief Minister Against working of the Chief Minister of Sikkim the Supreme merely on the ground of delay in filing. Nothing in the petition is an abuse of process of law". **Kazi Lhendeep Dorgi Vs. CBI 1994 AIRSCW 2190.**

For correction of enviroment pollution etc. PIL is a good tool for the general public. Pollution of Ganga by tanneries in kanpur is great nuisance for the general public of kanpur. In PIL by social activist M.C. Mehta seeking to restrain the tanneries located in kanpur from letting out trade effluents in to Ganga till they put up the necessary effluent cleaning treatment plants. It was held by the Supreme Court that the state is under obligation to perfect the enviroment under Article 48A and 51A of the Constitution and under Enviroment Protection Laws and the tanneries cannot be allowed to continue to carry on the industrial activity unless they take steps to atleast set primary treatment plants, irrespective of their financial capability **(M.C. Mehta Vs. Union of India AIR 1988 SC 1037, AIR 1988 SC 1115)** A PIL was filed by Dr. Rawat, Member of Social ActionGroup called 'Nainital Bachao Samiti ', for keeping Nainital pollution free alleging that water, air, noise and VIP pollution in Nainital and seeking direction from the Court for preserving the natural beauty of Nainital. The Supreme Court directed for preventive and remedial measures to be taken on war footing so that Nainital may regain its unsoiled beauty and attract tourist **(Ajai Singh Rawat Vs. Union of India (1995) 3 SCC 266).**

Certain News Items are taken into consideration by the

Supreme release all such prisons from jail immediately on personal bonds **(Hussainara Khatoon Vs. Home Secretary State of Bihar 1979 SC 1360).**

A letter by journalist Sheela Barse to Court complaining of voilence against women prisoners confined to police lock-ups in Bombay. In this case, the Court Issued several directions to provide safety and security to women in public lock-ups such as setting up a lock-ups specially for women in reasonably good localities, women constables to guard them, interrogation of women should be done only before female police officers, a Sessions Judge should make periodic visits to the lock-ups to meet the prisoners etc. **(Sheela Barse Vs. State of Maharashtra AIR 1983 SC 378).**

In the case of citizens for democracy Vs. State of Assam **(AIR 1996 SC 2193)** a letter by President of citizens for democracy alleging that the police is indulging in handcuffing of under trial prisoners in violation of law declared by Supreme Court **(Prem Shanker Shukla Vs. Delhi Administration AIR 1980 SC 1535).** Further, it was alleged that seven patient prisoners in Hospitals were handcuffed and tied with ropes, it was held that handcuffing of under trials and convicts and putting them under fetters is not permissible under the fundamental freedom as provided in the constitution except where permission is obtained from the magistrate in rare cases. Handcuffing and tying with ropes of patient prisoners is

We cannot forget famous Bhaopalpur blinds case. Letter brought the Bhopalpur blinds to light. Letter from Bihar Lawyer was treated as writ petition (PIL). Allegation was that about 20 undertrials prisoners in Bhopalpur Central Jail were tortured by police. During investigation, their eyes were

pierced with spikes and acid poured into them making them totally blind. The Court ordered medical aid and rehabilitation facilities at the expenses of the Bihar Government and also made directions to bring the offenders to book; Superintendent of Jail was asked to give the names of the jail staff and doctors, who were the incharge of the blinded prisoners. The Court also observed that these victims could claim compensation from the Government and other directions were also made **(Anil Yadav Vs. State of Bihar (1981) 1SCC 622).**

Lately, the exposure of CWG scam and 2G Scam are also the result of Public Interest Litigation.

So Many PILs, such as, Protection of Sanctuaries and National parks, Air and Noise Pollution, Conversion of CNG or other Clean Fuel in cities, Cleaning Domestic Garbage, providing Minimum Wages to Labourers, Child Abuse case, provide Health Safety and medical care, to prevent harmful drugs to be kept in medicine stores, hospitals to ensure emergency Medical Aid to the accidental victims, prevent nuisance caused by stray cattle and dogs creating health hazards for the public of the city, financial irregulariiiities in hospitals etc.

The above are a few examples of PILs. There are hundred of PILs. which were filed before the Court for providing justice to the people and have become milestones in the judicial system.

The foregoing instance of PILs and its difinition itself go to show that PIL is the service to people which is in other words service to God. How can we forgot to perform such a pious duty to human being? We should always be ready to do everything by which the needy get justice and deprivation of justice become foreign to such people.

Mob.: 9450652974
9936415106

KALYANI TOURS & TRAVEL

कल्याणी टूर एण्ड ट्रैवल्स

Sector-D, Kailashpuri, Alambagh, Lucknow-226005

सेक्टर-डी, कैलाशपुरी, आलमबाग, लखनऊ-२२६००५

नोटः यहाँ सभी प्रकार की ए०सी० एवं
नान ए०सी० गाड़ियाँ किराये पर लेने हेतु
सेवा का अवसर प्रदान करें।

प्रो०
प्रवीण बाजपेई
कमल बाजपेई

.....यह दिन भी बीत जायेंगे !

सुरभि दीक्षित त्रिवेदी
गुड़गाँव हरियाणा

जीवन सुख और दुःख का अद्भुत सम्मिश्रण है। लोग सुखद क्षणों को संजो कर रखते हैं और दुखद यादों को विस्मृत करने का प्रयत्न करते हैं। लेखिका का मानना है कि यदि दुःखद समय को याद रखा जाय तो आने वाले सुखमय दिनों की उत्फुल्लता तो बढ़ ही जाती है साथ ही सामान्य जीवन भी ज्यादा रोचक लगने लगता है। ईश्वर न करे यदि दुःख भरे क्षण आये भी तो पुराने दुःख को याद करने पर वर्तमान कष्ट बहुत ही हल्के हो जायेंगे। ऐसे दुःख भरे समय की कथा सुरभि सकारात्मक ढंग से प्रस्तुत कर रही हैं।

सम्पादक

२१ नवम्बर १९९० इन्दिरा नगर, कानपुर

मैं और मेरे दोनों भाई गेट पर खड़े होकर मम्मी और डैडी के घर वापस लौटने का इन्तजार कर रहे थे। वह जरूरी कार्य से उन्नाव गये थे। रात का आठ बजा था। हम तीनों डैडी के स्कूटर की आवाज पर कान लगाये थे। तभी भइया का एक मित्र स्कूटर से आया। उसने बताया कि डैडी के स्कूटर का एक्सीडेन्ट हो गया है। सुनते ही हमारे होश फाख्ता हो गये। उसने बताया कि एक्सीडेन्ट घर के ही पास हुआ है। किसी साइकिल वाले को बचाने में एक्सीडेन्ट हुआ। हेल्मेट लगाये होने के बावजूद डैडी सिर की चोट से बेहोश हो गये। रात के अन्धेरे सुनसान रास्ते में किसी ने मम्मी को लाचारी में देख कालोनी में खबर दी। हम लोग कुछ कर सकें तब तक पड़ोसी के साथ डैडी घर आ गये। उस समय तक पूरी कालोनी के लोग हमारे घर पहुँच चुके थे। हर कोई अपने तरीके से हमें समझाने की कोशिश कर रहा था। आज बरसों बाद जब उस पल को याद करती हूँ तो एहसास होता है कि दुःख के समय सबसे पहले पड़ोसी ही काम आते हैं। सत्य है अच्छे पड़ोसी भी किस्मत से मिलते हैं जो कष्ट के समय एकजुट होकर खड़े हो सकें।

डैडी उस समय तक होश में थे और सबसे सामान्य रूप से बातें कर रहे थे। किन्तु पड़ोसी डा० अंकल पूरी तौर पर आश्वस्त नहीं थे। डैडी को ऊपरी तौर पर कोई चोट नहीं थी फिर भी जाते समय डा० साहेब ने कहा कि इनको अभी सोने मत देना। यदि बेहोशी या उल्टी हो तो फौरन खबर करना। डैडी हम

सबको समझा रहे थे कि वे एकदम ठीक हैं। पर आधी रात होते-होते उनको बेहोशी सी आने लगी और उल्टी भी हुई। हमने तुरन्त पड़ोसी डा० अंकल को खबर की । वह आये और डैडी को देख कर बोले इनकी हालत ठीक नहीं है। इन्हें अस्पताल ले जाना पड़ेगा। किसी को मदद के लिये बुला लो। हमने तुरन्त लखनऊ में रहने वाले अपने मौसा जी को फोन किया। वह सर्जन हैं। फोन सुनते ही उन्हें स्थिति की गंभीरता का अन्दाजा हो गया। तुरन्त ही वह कानपुर के लिये चल पड़े और सुबह होने तक घर आ गये। आते ही उन्होंने कानपुर के जाने माने न्यूरो सर्जन को कॉल कर घर बुलाया। न्यूरो सर्जन ने तत्काल ही डैडी का सी टी स्कैन कर मेडिकल कालेज शिफ्ट करने की सलाह दी। डैडी के सिर के अन्दर दिमाग के ऊपर चोट की वजह से क्लाट पाया गया। यह एक बहुत ही गम्भीर स्थिति मानी जाती है।

डैडी की चोट की खबर हमारे रिश्तेदारों को मिल चुकी थी। वह सभी उतनी दूर से कानपुर पहुँच गये। अब हम अकेले नहीं थे। बुरे समय में अपने कितने सहायक होते हैं यह मैंने तब ही महसूस किया। हर कोई मदद करने को प्रस्तुत था। कोई भी काम होता तो दो तीन लोग एक साथ दौड़ पड़ते। हमें ऐसे परिवारीजनों पर आज भी गर्व है। रिश्तों की एहमियत हमने तभी जानी।

डैडी कोमा में थे। उनकी ब्रेन सर्जरी हुई परन्तु फिर भी उन्हें होश नहीं आ रहा था। .... और फिर अचानक .....६ दिसम्बर को बाबरी मस्जिद कांड हुआ। चारों ओर कर्फ्यु लग गया। हमारा अस्पताल से घर व घर से अस्पताल आना मुश्किल हो गया। ईश्वर परीक्षा ले रहा था। डैडी से लगाव रखने वाले उनके भाई और भतीजों के लिये भी मुश्किल थी। हर कोई अस्पताल में डैडी के निकट रहना चाहता था पर अस्पताल के नियमों की वजह से यह मुमकिन नहीं था। ऊपर से डैडी की स्थिति में कोई सुधार नहीं दिख रहा था। मम्मी तो जैसे पागल हो रहीं थीं। हमारे मौसाजी अस्पताल से छुट्टी लेकर कानपुर में ही थे। बाबरी मस्जिद काण्ड के बाद सभी डॉक्टरों की छुट्टियाँ कैंसिल कर दी गईं। मौसाजी को लखनऊ वापस ड्यूटी पर जाना मजबूरी थी।

मौसाजी बड़ी उहापोह की स्थिति में थे। उनका ड्यूटी ज्वाइन करना फर्ज था पर डैडी के प्रति उनका लगाव उन्हें रोक रहा था। उनके जाने की बात सुन कर मम्मी रो पड़ीं। मम्मी को मौसाजी का बहुत सहारा और विश्वास था।

आखिर मौसा जी ने ऐसी कन्डीशन में डैडी को अपने साथ लखनऊ ले जाने का फैसला लिया।

लखनऊ में डैडी की दो ब्रेन सर्जरी और हुई। कई रिश्तेदारों ने खून भी दिया*। फिर भी उनकी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं हो पा रहा था। वह दो महीने से कोमा में ही थे। हम केवल उम्मीद पर ही आश्रित थे। दवा और दुवा दोनों ही चल रही थीं।

मैं बचपन से ही हर साल अपनी मौसी के यहाँ महीने पन्द्रह दिन के लिये आती रहती थी। मौसाजी कभी भी ''अर्ली राइजर'' नहीं रहे। वह हमेशा गर्म पानी से ही नहाते थे। किन्तु जब डैडी का लखनऊ में इलाज चल रहा था तो दिसम्बर जनवरी की कड़कड़ाती हुई सर्दी में भी मौसाजी सुबह पाँच बजे उठ जाते थे। ठंडे पानी से स्नान करके वे एक घंटा ''दुर्गा शप्तशती'' का पाठ करते। उसके बाद ही वह अस्पताल जाते। यूँ तो वह स्वयं बहुत व्यस्त सर्जन हैं पर उस दौरान उन्होंने कोई भी ऑपरेशन नहीं किया। शायद वह भी अन्दर से काफी विचलित थे।

उन्हीं दिनों मैंने स्कूल से निकल कर कॉलेज में एडमिशन लिया था। हालाँकि उस समय तक मेरा कोई भाई सेटेल नहीं हुआ था फिर भी जो भी डैडी को देखने आता वह मुझे बहुत ही तरस भरी नजर से देखता। एक तो डैडी की ऐसी स्थिति और ऊपर से सबकी तरस भरी दृष्टि ..... मेरा दुःख और बढ़ा देती थी। एक दिन मेरा सब्र टूट गया और मैं फूट-फूट कर रो पड़ी। मौसा जी ने देखा और शायद मेरी मनः स्थिति को समझ गये। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे उठाया फिर मेरे सिर पर हाथ रख कर कहा ''बेटा ईश्वर पर विश्वास रखो यह दिन भी बीत जायेंगे''! उसके बाद हम सभी को मंदिर चलने को कहा। उस दिन मंगलवार था। हम सभी संकट मोचन मन्दिर गये। वहाँ प्रसाद चढ़ा कर वापस अस्पताल आये और प्रसाद नानी को दिया। नानी ने प्रसाद लेकर डैडी के होठों पर लगा कर प्रसाद की माला उनके गले में डाल दी और माथे पर हनुमान जी का तिलक लगा दिया ..... और फिर एक चमत्कार हुआ। दो महीने की कोमा के बाद डैडी ने आँख खोली। धीरे से नानी को इशारे से पास बुलाकर बहुत ही धीमे से बुदबुदाए ''वो पूँछ वाला बड़ा सा जीव आया उसने मुझे बचा

लिया''। हम सब आश्चर्यचकित थे और प्रसन्न भी। मौसा जी तुरन्त भैया को लेकर दुबारा संकटमोचन गये और फिर भगवान को नमन कर के प्रसाद चढ़ाया।

उसी दिन से डैडी की स्थिति में सुधार प्रारम्भ हुआ । धीरे-धीरे डैडी एकदम ठीक हो गये (हालाँकि पूरी तौर से ठीक होने में उन्हें लगभग १० महीने लगे)।

हमारा परिवार पुनः पटरी पर आ गया

मौसा जी के वह शब्द ''यह दिन भी बीत जायेंगे और ईश्वर पर अटूट विश्वास रखो'' आज भी मेरे मानस में दृढ़ हैं। डैडी के स्वस्थ होते ही इनकी सत्यता सिद्ध हो चुकी थी। अब जब भी बहुत खुशी होती तो ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ और कष्ट होता है तो प्रार्थना करती हूँ। यकीन मानिये दोनों ही परिस्थितियों मं '' यह दिन भी बीत जायेंगे'' मुझे समभाव में रहने की प्रेरणा देते हैं।

*डैडी को ब्लड डोनेट करने वाले मेरे एक चाचा जी उन दिनों लखनऊ विश्वविद्यालय में छात्र नेता थे। यह शायद उनके खून की नेतागिरी ही थी कि डैडी ने स्वस्थ होते ही कानपुर बार एसोसिएशन के एलेक्शन में भाग लिया। यह घटना याद करके आज भी हम सबके होंठों पर हँसी आ जाती है और चाचा जी के लिये कृतज्ञता की अनुभूति होती है।

Rate of Advertisement in Kanya Kubj Vaani and Website <kanyakubj.org>

Coloured Full Page	Rs. 5000/-
Coloured Half Page	Rs. 3000/-
Black and White Full Page	Rs. 2000/-

Cheque Should be drawn on - Akhil Bhartiya Shri Kanya Kubj Sabha, Lucknow.

संस्मरण

गंगाधर वृक्ष

श्रीमती नीरज शुक्ला ''रानी''

हम लोग अपने बलरामपुर अस्पताल परिसर के आवास से बेली गारद (रेजीडेंसी) रोज सुबह टहलने जाते थे। हाँ बारिश के दिनों में कुछ अड़चन अवश्य आती थी किन्तु प्रयास यही रहता था कि टहलने का क्रम चलता रहे।

एक रोज हम लोग जैसे ही रेजीडेंसी परिसर पहुँचे बहुत तेज बारिश आ गई। गेट के निकट ही एक विशाल पीपल के पेड़ के नीचे हम लोगों ने आश्रय लिया। चारों ओर पानी बरस रहा था पर हम लोग सुरक्षित थे। मैं सोच रही थी कि इतना सारा पानी वृक्ष कैसे रोक रहा है तभी मेरी निगाह पीपल के विशाल तने पर पड़ी। तना पूरी तरह भीगा हुआ था। वृक्ष की डालियों से होता हुआ बहुत सारा पानी तने से उतर कर जड़ों द्वारा पृथ्वी की कोख में प्रवेश कर रहा था।

कुछ समय के बाद पानी शान्त हो गया। हम लोग टहलने के निर्धारित चक्र के लिये निकल पड़े। वापसी में जब पीपल के पास से गुजरे तो देखा कि पीपल के नीचे बड़ी-बड़ी बूँदों में पानी अभी टपक रहा था और पेड़ के नीचे मिट्टी में जज्ब होता जा रहा था। मैने कहा देखिये जब चारों ओर वर्षा हो रही थी तब वृक्ष के नीचे सूखा था और अब जब वर्षा बन्द हो गई तो अब पत्तों से टपक-टपक कर पेड़ के नीचे बरसात हो रही है। मेरे पति ने भी इस बात को नोटिस किया और बोले ''यह वृक्ष गंगाधर शिव की तरह कल्याण कारी है''। मैं वृक्ष और शिव की साम्यता नहीं समझ पाई। घर पहुँचने की जल्दी, बच्चों के स्कूल और पति के अस्पताल जाने का समय आदि बातों में उलझकर यह बात वैसे ही रह गई।

रात को डाइनिंग टेबल पर मैनें बच्चों से सुबह का वृत्तान्त बताया पप्पा से खाने के समय वृक्ष के गंगाधर होने की जिज्ञासा करना। पिता के टेबल पर बैठने पर बच्चों ने सुबह उनके कहे वाक्य बारे में उनसे प्रश्न किया ..... मम्मू ने बताया कि आपने वृक्ष को गंगाधर शिव कहा ..... ऐसा क्यों।

पति एक बार फिर से आनन्द की मुद्रा में आ गये। बोले .... क्या तुमको मालूम है कि गंगा की उत्पत्ति कैसे हुई। सभी जानकार थे एक साथ बोले .... ''हिमालय में गोमुख से''।

यह तो विज्ञान की बात हुई मैं पौराणिक कहानी पूछ रहा हूँ कि गोमुख के पहले गंगा कैसे उत्पन्न हुई?

सभी चुप।

कथानक आगे बढ़ा।

जब राजा बलि की यज्ञशाला में विराट रूप वामन ने आकाश की ओर चरण बढ़ाया तो स्वर्ग के देवताओं ने चरण वन्दना की। स्वयं ब्रह्मा ने चरण धोने चाहे। भगवत्चरण इतना विशाल था कि ब्रह्मा के कमंडल का जल से केवल उनके पैर के नाखून को ही धो सके। ब्रह्मा ने उस गंगाजल को पुनः अपने कमंडल में एकत्र कर लिया यही जल ''नख निर्गता मुनि पूजिता '' और ''पतित पावनी'' कहलाई।

भगीरथ जब अपने पूर्वजों के कल्याण के लिये ब्रह्मा को गंगा पृथ्वी पर लाने के लिये प्रसन्न किया तो प्रश्न था कि इतने ऊपर से आती गंगा का प्रबल आवेग पृथ्वी को विदीर्ण कर सकता था। तब भगवान शिव भगीरथ के सहाय हुए। उन्होंने गंगा के आवेग को अपनी जटाओं मे तिरोहित कर लिया

''जटाकटाहसभ्रमंभ्रमंनिलिम्पनिर्झरी विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्द्धनि''।

(शिव ताण्डव स्तोत्रम ।२।)

जब गंगा का वेग मन्द हुआ तब शिव ने जटा की एक लट हटाकर गंगा को मंथर गति से पृथ्वी पर आने दिया जिससे उस कल्याणकारी जल से भगीरथ के पूर्वज ही नहीं तब से आज तक सभी को तारती हुई गंगा आज भी भारत को ''शस्य श्यामलाम्'' बना रही है।

इसी प्रकार जब बहुत तेज बारिश होती हे तो पानी का थोड़ा अंश ही धरती की कोख में जा पाता है। अधिकाँश भाग सतह पर बहता हुआ नालों और नदियों द्वारा समुद्र में चला जाता है। यह जल अपने साथ जमीन की उपजाऊ मिट्टी (humus) भी बहा ले जाती है जिससे जमीन अन-उर्वरा हो जाती है और ग्राउन्ड वाटर भी रिचार्ज नहीं हो पाता। बारिश के इसी हानिकारक वेग को वृक्ष शिव की भाँति अपने पत्तों द्वारा रोकते हैं और बारिश के पानी को शाखाओं से होते हुये तने तथा जड़ों द्वारा भूगर्भ में भेज देते हैं। इससे भूगर्भ जल फिर से पूरित होता है। पत्तों से होकर पानी धीरे-धीरे टपकता है और वह भी पृथ्वी द्वारा शोषित हो जाता है।

इसीलिये मैंने वृक्षों को ''गंगाधर'' कहा।

बेटा बोला '' क्या इसीलिये बरगद, पीपल आदि वृक्षों की पूजा करने की परम्परा है?''

हाँ भारतीय संस्कृति में कृतज्ञता एक सद्गुण माना जाता है। इसीलिये ''पुत्रोऽहं पृथिव्याम्'' की धारणा से हम सारी प्रकृति को पूजते हैं। उनमें वृक्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। उत्तराखण्ड में वृक्षों की अंधाधुंध कटाई से ''गंगाधरीय'' क्षमता का ह्रास हो जाना भी वहाँ की प्रलयकारी जल सुनामी का कारण बना।

इस वर्ष अमेरिका की भयानक ठण्ड में ठिठुरती स्टेचू ऑफ लिबर्टी

C.V. NETRALAYA

Viram Khand-2, Gomti Nagar,
Lucknow.

Centre of Comprehensive Eye Care

Eye Surgeon

Dr. V. K. Mishra

बिना शीर्षक

एक साथ घटना पर आधारित कथा जो तत्कालीन ग्रामीण अंचल के जीवन का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करती है। प्रेमचन्द आदि ने गावों के समाज की निचले वर्णों की विपन्नता लाचारी व उत्पीड़न दर्शाया है। प्रस्तुत कथा बताती है कि ब्राहम्ण परिवार भी गरीबी में थे और उत्पीड़ित थे। यह कथा जिसे लेखक ने किशोरवस्था में सुना था जिसने उसके किशोमन को झझकोर दिया था।

वह आंगन में बैठ कर बर्तन मांज रही थी कि उसे बड़ी बहन की आवाज़ उसके कानों में पड़ी ''अरी कलमुही माँ बाप को खा कर अब तू मेरे घर को आग लगाने लगी''। सुनकर उर्मिला का पहले से ही दुखी मन फट गया। वह राख से बर्तन मांजते हाथों से अपना मुँह ढांप कर रोने लगी। मन हल्का होने पर चेहरे से हाथ हटा कर उसने अपने काले हाथों को देखा। उसे अपने चेहरे को काले का भान ही नही हुआ। कालिख भरे हाथों में ही उसे अपनी जिंदगी की सारी घटनायें चलचित्र के समान आंखों से दिखने लगी।

माँ बाप की मृत्यु के बाद कोई और सहारा न होने की वजह से एक अदद एकलौते आवारा भाई के साथ उर्मिला अपनी बड़ी बहन सुशीला के यहाँ चली आई। बहन भी कोई बड़े अमीर घराने में नही ब्याही थी पर रोज़ दो जून रोटी की व्यवस्था अवश्य थी। खाने को दो मुँह और आ जाने से घर की अर्थ व्यवस्था चरमराने लगी। नालायक भाई की आवारगीके किस्से जो कि पहले दूर होने से और कभी कभी ही सुनाई पड़ते थे अब रोज़ पता चलने लगे। पति जो पहले प्रायः आँखों से ही नाराज़गी जताते थे मुखर होकर सुशीला को ताने भी सुनाने लगे थे।

लड़कियाँ हमेशा ही अभिशाप मानी जाती हैं। गरीब के घर वह भी सुन्दरता से लदी बेटी पैदा होते ही चर्चा का विषय बन जाती हैं। नाउन सारे गांव में बताती फिरती की फला पंडित के यहाँ गोरी कि लागे मालिश के लिये हाथ लगाने पर मैली हो जाय। महिलायें चुहुल करती ''का नाउन भउजी पंडिताइन यही मारे तुमसे मालिश नही कराती?'' नाउन मुँह बना कर कहती ''करावैं तो उई दौर के पर नेग ओ मजूरी देय क टेंट म रकमऔ तो होय क चही। पंडितन म खाय क चाहे न जुरै पर रूप भगवान जरूर देत है''।

जैसे जैसे बेटियाँ बड़ी होती यह चर्चा आम होने लगती। छिछोरी निगाहें पीछा करती जिन्हें बच्चियाँ पहले तो नही जान पाती पर फिर सजग होने लगती।

ग्राम्य जीवन में सुन्दर बेटी गरीबी से भी बड़ा अभिशाप है।

सुशीला और उर्मिला के साथ भी यही त्रासदी थी। गरीब ब्राह्मण के घर रूपवान बेटी!

सुशीला का ब्याह तो किसी तरह पड़ोस के गांव में हो गया। इसमें दोनों बहनों की सुन्दरता और सुगढ़ता की तारीफ का बड़ा योगदान था। सस्ती से सस्ती शादी में भी कर्ज़ तो लेना ही पड़ता है। कर्ज़ और नालायक बेटे की करतूतों से माँ बाप पीड़ित थे। गरीबी, कर्ज़ और कुपूत के त्रिशूल ने थोड़े दिनों में ही उर्मिला के माँ बाप को इहलोक से मुक्ति दिला दी। मुर्दनी में आये रिश्तेदारों की आव भगत व कर्मकांड के टंटों में घर भी बिक गया। अब सवाल था कि उर्मिला अपने आवारा भाई व सुन्दरता के ''कलंक'' को लेकर कहां जाये? ऐसे में एक पखवारे से पहुनाई कर रहे बड़े बूढ़ों ने व्यवस्था दी। ''बड़े बहन और बहनोई तो माँ बाप के समान होते हैं। इसलिये सुशीला को अपने छोटे भाई बहन को अपने साथ ले जाना चाहिये''।

हांलाकि सभी पुरूषों के मन में सुन्दर उर्मिला को साथ ले जाने की हसरत थी। पर वह पत्नी की वर्जनात्मक दृष्टि के सामने विवश थे।

नतीज़न सुशीला के साथ ही उसके भाई और बहन भी उसके घर पहुंच गये।

उर्मिला ने बहन के घर का चौका बरतन व अन्य ऊपर के काम संभाल लिये। सुशीला अब अपने बच्चे और पति को ज्यादा समय दे पाने की वजह थोड़ा आश्वस्त थी। पर भाई ? यह गांव की शोहदों की टीम का कैप्टन बन गया। शोहदों में उसकी खासी साख हो गई। सिर्फ खाने और रात सोने के ही लिये उसकी शक्ल घर में दिखती थी। बहनों के लिये यह व्यवस्था भी सुखद थी। कम से कम घर में शान्ति तो थी। पर शनैः शनैः भाई की आवारगी की शिकयतें बाकायदा घर व राह चलते होने लगी। धन की ज़रूरत केवल गृहस्थी में ही नही आवारगी में भी होती है। धन का कोई अन्य स्रोत के सुलभ ने होने की वजह से उसको मजबूरी में कभी-कभी राहजनी भी करनी पड़ जाती है। इतना साधारण अर्थशास्त्र गांव वाले तो चलो गैर हैं खुद उसके बहन, बहनोई नही समझ पाते, इस बात इस बात से उसे बड़ा कष्ट होता।

एक रोज़ उसके बहनोई ने अपने साले को समझाया कि उसे अपनी बहन उर्मिला के विवाह के लिये वर खोजनें के लिये उसको भी कुछ करना चाहिये। वह बहनोई का बहुत आदर करता था अतः इस कार्य के लिये उसने हाँ कर दी। उसकी अर्थशास्त्री बुद्धि ने तत्काल ही राह सुझाई। पड़ोस के गांव में ही उसे एक खाता पीता वर मिल गया। घर का अकेला था। उससे उर्मिला की शादी होने पर उर्मिला को यावज्जीवन खाने और पहनने की कोई तंगी नही होगी। क्या हुआ यदि उसकी उम्र ५५ या ६० की थी। मर्द तो मर्द होता है शादी में उसकी उम्र देखने का क्या औचित्य ? उर्मिला को ज़िदंगी भर ठाठ से रखेगा। गांव का माना जाना घराना है। क्या हुआ यदि एक हाथ से लूला है ? वह तत्काल ही इस लूले वर के यहाँ पहुँचा और अपनी बहन की शादी का प्रस्ताव रखा। लूलें तक भी उर्मिला के सौंदर्य व सुगढता की चर्चा पहुँच चुकी थी। वह गिल गिल हो गया। कहाँ उसके लूलेपन की वजह से उसे कोई बदसूरत कन्या भी अब तक नही नसीब हुई, और कहाँ साक्षात मेनका का भाई देवदूत बन वैवाहिक प्रस्ताव लेकर उसके घर आया। उसने सावधानी से अपना लूला हाथ भावी साले को दिखाते हुए सेवक को जलखवा लाने को बोला। साले साहब ने जलखवा के बाद भी उसके लूलेपन को कोई नोटिस लेते हुए शादी में लेन देन की बात जारी रखी।

रात में ही खाने के समय उसने अपनी दीदी और जीजा के सामने उर्मिला की शादी के बारे में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत कर दी। लूला वर अपने कुवॉरेपन के लिये अड़ोस पड़ोस के गांव कुख्यात था। सुशीला ने पहले एतराज़ किया तो उसके पति ने धुड़क दिया। किन्तु यह सुन कर कि शादी का सारा खर्च वर ही करेगा उसका प्रतिवाद भी शान्त हो गया। दहेज रहित आदर्श विवाह। यह बात दीगर है कि दहेज लड़की वाले न देकर वह ही पांच सौ रूपये (घूस में) अपने साले ने भी इसी दूरदृष्टि से शादी का प्रस्ताव ऐसे सुयोग्य वर के घर से लेकर आया था। साला तो सौ रू० में ही मान जाता पर जीजा ने तो दिया उसका पाँच गुना ! सभी संतुष्ट थें, सिवाय उर्मिला के जिसको कि विकलांग पति से शादी करना था। परन्तु उसकी राय जानने की किसी ने भी जरूरत नहीं समझी। आज शायद यह बात बड़ा अत्याचार लगे परन्तु ५० के दशक के ग्रामीण भारत में लड़की से राय लेने की परिपाटी बिल्कुल नही थी। (रमई काका की कविता''जब पछपन के घरघाट भयेन तब देखुआ आये बड़े बड़े शायद आज वरिष्ठ नागरिक

हो चुके पाठकों को याद होगा)

परन्तु उर्मिला उस ज़माने की '' गऊ लड़कियों की भाति लूले पति को भी शायद पौराणिक सतियों की भांति स्वीकार कर लेती परन्तु आज सुशील के नाराज़ होने की वजह ने उसका दिल ही तोड़ दिया।

सुशीला की नाराज़गी भी काफी जेनुइन थी। भारतीय नारी सारी विपदायें हँसते-हँसते झेल सकती है। परन्तु सौत की परछाई उसे सपने में भी सह्य नहीं हुआ यों कि एक दिन काम करने में उर्मिला आंगन में फिसल कर गिर पड़ी। अभी वह सोच ही रही थी कि उसे चोट कहां लगी, कि उसका बहनोई आ गया। उसने उर्मिला को हाथ पकड़ कर उठाया था कि सुशीला आ गई । उसे कुछ गलतफहमी हो गई । उस समय तो बगैर कुछ बोले ही वह दोनों को आग्नेय दृष्टि से देखते हुए वहाँ से तमक कर चली गई । उर्मिला इस मौन ज्वालामुखी को नही भांप सकी। वह उठकर बर्तन मांजने लगी। परन्तु पति के जाते ही सुशीला अपनी ही लाचार बहन पर बरस पड़ी। यह आरोप उर्मिला के लिये अपत्याशित और हृदय विदारक था। महिलाओं में कष्ट में सबसे पहले आँसू निकल पड़ते हैं। रोने से उनका कष्ट कुछ कम हो जाता है, पर आँसुओं से भी जब आत्मिक कष्ट कम नहीं हो पाता तो वह कुछ भी कर सकती हैं.... '' का न करै अबला प्रबल ! पर भारत में नारी कष्ट बर्दाश्त के बाहर हो जाने पर किसी और पर घात न करके आत्मघात की प्रवृति ज्यादा पाई जाती है। यही मानसिकता इस समय उर्मिला के मन पर भी छा रहा था। गरीबी, सुन्दरता, माँ बाप की असमय मृत्यु, बहन बहनोई पर आश्रित होना और तो और शरीर तोड़ परिश्रम के बाद भी सम्मान की कमी, नालायक भाई और उसके द्वारा ढूंढ़ा विकलांग बूढ़ा पति! कहां तक अपने कष्ट गिने और सहे ? और अन्त में बहन द्वारा घिनौना लांछन। इसके बाद वह अपने बहनोई के सामने कैसे पड़ेगी। बहन का बहन पर इतना अवश्विास!

उसकी आँख के आँसू सूख गये। निश्चय ने उसके सभी कष्टों को समाप्त कर दिया था।

वह धीरे से उठी कमरे में जा कर बड़ी बहन के सोते बच्चे को प्यार किया। रसोई में बड़ी बहन कुछ काम कर रही थी। उर्मिला धीरे से घर से बाहर निकली

और चल पड़ी । घर से आधे कोस पर ही बड़ी नहर थी। संयत पंगों से वह उधर ही चल पड़ी । नहर में पानी पूरे वेग से हहरा रही थी। पुल पर खड़ी उर्मिला कुछ देर खड़ी रही। फिर उसने धीरे से अपना पल्ला.....................

गांव से दो कोस दूर बड़ी नहर में किसी महिला का शव उतराया है। खबर पूरे गांव में फैल गई । पुलिस के पहले ही तमाशबीन वहाँ पहुँचने लगे। ऐसी घटना या दुर्घटना की सूचना सबसे पहले ठेलुहा युवकों को ही मिलती है। कोई काम न होने से वह ग्रुप ही सबसे पहले पहुँचता है। ठेलुओं का कप्तान होने की वजह से और ऊपर से बीती दोपहर से उर्मिला की घर से अनुपस्थिति से उर्मिला का भाई और भी तेजाई से नहर पहुँच गया। रास्ते में उसकी बाई आँख भी बुरी तरह फड़क रही थी। नहर पर लाश के कपड़े देखकर ही वह जान गया कि मृतका उसकी अपनी बहन उर्मिला ही थी। वह तुरन्त वापस लौट पड़ा खेत वर अपने जीजा को बताने के बाद वह सुशीला को बताने भागा। सुशीला अपनी छाती पीटने लगी पर अपने दुधमुँहे बच्चे की वजह से नहर तक नही जा सकी। पुलिस पहुँची पँचनामा हुआ और **Dead Body** रिश्तेदारों को सौंप दी गई।

उर्मिला का पार्थिव शरीर सुशीला के घर के आँगन में रखा गया। महिलायें अन्तिम संस्कार के लिये एकत्र थी। सभी के मुँह पर उर्मिला की शील, सुन्दरता तथा सुगढ़ता की तारीफें थीं। उसके चरित्र की भी प्रशंसा हो रही थी। यह चर्चा सुशीला के दिल को अपराध बोध से और भी साल रहा था। महिलायें बतिया रही थी। देखो मरते समय भी उर्मिला नहर की धारा में शरीर के उघड़ने से बचाने के लिये अपना आँचल शरीर के ऊपरी हिस्से को सावधानी से बाँध लिया था और साड़ी के निचले हिस्से को लांग बाँकर कर उघड़ने से बचा लिया था। इस तरह मृत्यु के बाद भी बेपर्दा होने से अपने को बचाने का प्रयास किया था जिसमें वह पूर्ण रूप से सफल रही थी।

भीड़ में सबसे ज्यादा रोने वाला उर्मिला का नालायक भाई ही था। लोग समझ नही पा रहे थे कि वह बहन की मृत्यु से ज्यादा दुःखी था अथवा ''लुल्ले से मिलने वाले पाँच सौ रूपये के नुकसान से ज्यादा पीड़ित था ?

नवसंवत्सर एवं होली पर्व की हार्दिक ुभकामनाएँ

उचित मूल्य पर वि वसनीय
दवाओं हेतु पधारें

भारत
मेडिसिन कम्पनी

ाहर का एक प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान

निकट बलरामपुर अस्पताल,
गोलागंज, लखन

वि ोषता :

जो दवाएँ ाहर की अन्य दुकानों पर उपलब्ध न हों उनके लिए भी पधारें।

दूरभाष : **9336666322, 0522-6568011**

पंडित जी तिवारी जी का अंग्रेजी दवाखाना

कान्यकुब्ज कार्यकारिणी

अध्यक्ष

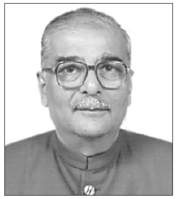

न्यायमूर्ति डी०के० त्रिवेदी

महासचिव

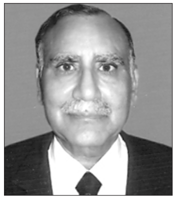

उपेन्द्र मिश्र
एडवोकेट

कोषाध्यक्ष

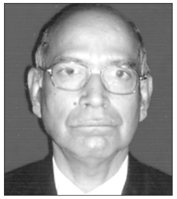

ए० के० त्रिपाठी
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

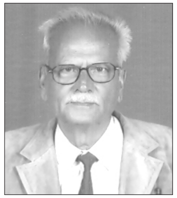

जे० के० त्रिपाठी
संस्कृत मातृ भाषी

उपाध्यक्ष

पी०एन० मिश्रा
एडवोकेट

उपाध्यक्ष

डा० आर०के०मिश्रा
आर्थो सर्जन

उप मंत्री

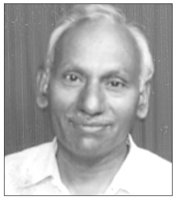

के० एस० दीक्षित
आडीटर

सदस्य

जी० एस० मिश्र
स्थायी अधिवक्ता

सचिव महिला प्रकोष्ठ

कु० प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा
एडवोकेट

सदस्य

हरेन्द्र कुमार मिश्रा
उप लेखाधिकारी

सम्पादक मण्डल

सम्पादक

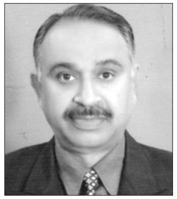

डा० डी० एस० शुक्ला
चिकित्सक, सर्जन

सह-सम्पादक

एस० एन० दीक्षित
इंजी० लेसा

सह-सम्पादक

डा० अनुराग दीक्षित
अपोलो अस्पताल, लखनऊ

कान्यकुब्ज वाणी आभा मंडल

संरक्षक : अनुदान रु० १०००० (दस हजार मात्र)

न्यायमूर्ति पं० डी० के० त्रिवेदी (अ.प्रा.)

वाणीपुत्र : अनुदान रु० ५००० (पाँच हजार मात्र)

१- डा० यू०डी० शुक्ल, लखनऊ मो० ६३३५६२६६३७
२- डा० वी० के मिश्रा आई सर्जन, लखनऊ मो० ६४१५०२०४२६
३- इं एस एन मिश्रा, लखनऊ मो. ६४५३६४५४६०

विशिष्ट सदस्य : अनुदान रु.२००० (दो हजार मात्र)

१- श्री सूर्य प्रकाश बाजपेई, लखनऊ मो ६३३५१५६३६३
२- श्री उपेन्द्र मिश्र, लखनऊ मो० ६४१५७८८८५५
३- डा० आर एस बाजपेयी, लखनऊ
४- प्रो० डा० पी०पी० त्रिपाठी, बलरामपुर
५- डा० आर के मिश्रा, लखनऊ मो ६४१५०१२३३३
६- श्री प्रमोद शंकर शुक्ल, रायबरेली
७- श्री विनोद बिहारी दीक्षित, लखनऊ मो० ६३३५६०८०८१
८- स्व० विजय शंकर शुक्ल, लखनऊ
६- श्रीमती रोली तिवारी, राय बरेली

आजीवन सदस्य : अनु० रु० १०००/- (एक हजार रु० मात्र)

१- श्री जितेन्द्र कुमार त्रिपाठी, लखनऊ मो. ६३०७२२२०२७
२- स्व० भारतेन्दु त्रिवेदी, सीतापुर
३- श्री रमा रमण त्रिवेदी, सीतापुर फोन ०५८६२२४७६२६
४- श्री के० के० त्रिवेदी, लखनऊ मो० ६४१५०२०५१०
५- श्री आर० सी० त्रिपाठी, लखनऊ मो० ६४१५०१२०४०
६- श्री नवीन कुमार शुक्ल, लखनऊ मो० ६५०६६६७३१
७- श्रीमती मीनू द्विवेदी, कानपुर मो० ६३३६१६६३८०
८- इं० बसंत राम दीक्षित, लखनऊ मो० ६३३५०७५४८२
६- श्री सुधीर कुमार पाण्डे, लखनऊ मो० ६४१५५२१०३१
१०- श्रीमती मनोरमा तिवारी, लखनऊ
११- कु० प्रेम प्रकाशिनी मिश्रा, लखनऊ मो० ६४१५०२६०८७
१२- श्री अनिल कुमार त्रिपाठी, सीतापुर मो० ६४१५५२४८४८
१३- ब्रिगेडियर शीतान्शु मिश्र, लखनऊ मो० ६४५४५६२४११
१४- श्री कृपा शंकर दीक्षित, लखनऊ मो० ६४५५७१३७११

१५- डा. अनुराग तिवारी, कानपुर मो ६४१५७३५६३०
१६- श्री आर के शुक्ल, लखनऊ मो० ६६१६६२३१२१
१७- डा आर सी मिश्र, लखनऊ फोन ०५२२-६५२१३५३
१८- श्री विनोद कुमार मिश्र, फतेहपुर ८४ उन्नाव
१६- राज किशोर अवस्थी, लखनऊ
२०- डा० पी० एन० अवस्थी, लखनऊ
२१- कौशल किशोर शुक्ल, लखनऊ
२२- विनय कुमार शुक्ल, रूरा रमा बाई नगर
२३- मनीकान्त अवस्थी, लखनऊ
२४- श्रीमती अनुराधा शुक्ल, पत्नी पं त्रयम्बकेश्वर प्रसाद शुक्ल, खाली सहाट, रायबरेली
२५- के० बी० शुक्ल, लखनऊ
२६- हेमा दिनेश मिश्रा, लखनऊ
२७- ब्रह्म शक्ति दीक्षित, लखनऊ
२८- श्रीमती सुमन शुक्ला, लखनऊ मो० ८००५३६६६०७
२६- शम्भु प्रसाद पाण्डे, मलिहाबाद, लखनऊ मो० ६४५६७१७७११
३०- इं० एस.एस. शुक्ला, लखनऊ मो० ६४५०७६१४०३
३१- प्रवीण कुमार द्विवेदी, लखनऊ
३२- ज्ञान सिन्धु पाण्डेय, लखनऊ मो० ८७६५५३१२८१
३३- डी.एन. दुबे, लखनऊ मो० ६४१५४०८०१८
३४- श्रीकान्त दीक्षित, लखनऊ मो० ०६४१५७६६६०१
३५- उमेश चन्द्र मिश्रा, लखनऊ मो० ६३०५२४५५६६
३६- ओंकारनाथ मिश्रा, लखनऊ मो० ६४१५०२२६५७
३७- राम जी मिश्रा, खैराबाद मो० ६४५०३७६०५४
३८- डा० प्रांजल त्रिपाठी, बलरामपुर
३६- डा० निधी त्रिपाठी, बलरामपुर
४०- अश्विनी कुमार शुक्ल, फतेहपुर
४१- राघवेन्द्र मिश्रा, लखनऊ

बाहरी प्रान्तों के सदस्य

१- डा० आर० के० त्रिपाठी, देहरादून, उ०ख० मो० ६६३५४७८८१५
२- श्री यतीन्द्र कुमार दीक्षित, दिल्ली मो० ०६८१८४३४३७७
३- श्री राम चन्द्र अवस्थी, ट्राम्बे, मुम्बई मो ०६८२००२६६१४
४- नीरज त्रिपाठी, हरिद्वार, उत्तराखंड
५- अशोक कुमार तिवारी, जबलपुर मो० ०६४०७२६०६३६
६- अशोक कुमार पाठक, होशंगाबाद, म०प्र०
७- वैज्ञानिक अलका दीक्षित, दिल्ली मो० ०११३२३२०२६८
८- श्रीमती सविता दुबे, धारवाड़, कर्नाटक
६- देवेन्द्र कुमार शुक्ला, जयपुर मो० ०६४१४०७५१७४

वर्ष २०१३-१४ में मंच पर दी जाने वाली पारितोषिक/छात्रवृत्ति

०१- कु० अकांक्षा पुत्री श्री राजेश, कक्षा ६ रु० १०००.००
पं० जयशंकर त्रिवेदी।
स्व० न्यायमूर्ति
प्रदत्त स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक

०२- कु० अंजली पुत्री श्री मुकेश, कक्षा ८ रु० १०००.००
स्व० न्यायमूर्ति
पं० जयशंकर त्रिवेदी
प्रदत्त स्व० श्रीमती दुर्गावती त्रिवेदी पारितोषिक

०३- कु० शीतल पुत्री श्री देवनारायण, कक्षा ७ रु० १०००.००
स्व० श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक
प्रदत्त डा० एल० पी० मिश्र, सीनियर एडवोकेट

०४- कु० आकांक्षा तिवारी पुत्री श्री पुनीत तिवारी रु० १०००.००
कक्षा ८ स्व० श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक
प्रदत्त डा० एल० पी० मिश्र, सीनियर एडवोकेट

०५- कु० दिव्या पुत्री श्री गणेश दत्त रु० १०००.००
कक्षा ८ स्व० श्री बाँके बिहारी मिश्र (पितामह) पारितोषिक
प्रदत्त डा० एल० पी० मिश्र, सीनियर एडवोकेट

०६- कु० भावना पुत्री श्री सर्वेश कुमार
कक्षा बी० काम० (प्रथम वर्ष) स्व० श्रीमती रामा देवी
पारितोषिक प्रदत्त श्री हरेन्द्र कुमार मिश्र

०७- कु० अनामिका पुत्री श्री राजकुमार, रु० ५००.००
कक्षा ११ स्व० श्री जयशंकर मिश्र पारितोषिक
प्रदत्त सुश्री प्रेम
प्रदत सुश्री प्रेम प्रकाशिनी मिश्र, एडवोकेट

०८- कु० रूचि पुत्री श्री दुःखहरण, कक्षा ६ रु० ५५०.००
स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक II(a) ENT
प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

०९- कु० क्षमा पुत्री श्री हेमन्त रु० ५५०.००
कक्षा बी०ए०(प्रथम)
स्व० श्रीमती आशा त्रिवेदी पारितोषिक II(b) ENT
प्रदत्त स्व० न्यायमूर्ति पं० जयशंकर त्रिवेदी जी

१०- कु० प्रज्ञा पुत्री श्री जितेन्द्र रु० ५००.००
कक्षा १२
स्व० श्रीमती विभा बाजपेई पारितोषिक ॥
प्रदत्त श्री ज्ञान बाजपेई

११- कु० नीतू पुत्री श्री सोहन लाल रु० ५००.००
कक्षा १०
प्रदत्त स्व० श्रीमती कादम्बरी देवी मिश्रा पारितोषिक ENT
श्रीमती किशोरी बाजपेई

१२- कु० दीपाली मिश्रा पुत्री श्री सुशील कुमार मिश्र, रु० ५००.००
कक्षा ११
प्रदत्त स्व० श्रीमती डा० शकुन्तला मिश्रा पारितोषिक **ENT**
माननीय श्री सतीश चन्द्र मिश्र

१३- कु० दीप्ति पुत्री श्री विश्वामित्र, कक्षा ६ रु० ५००.००
स्व० श्रीमती रानी सुभद्रा कुँवर पारितोषिक प्रदत्त स्व० राजा
विजय कुमार आफ सिसेन्डी

१४- कु० काजल पुत्री श्री जगतराम, कक्षा १२ रु० ५००.००
स्व० श्रीमती माया देवी त्रिपाठी पारितोषिक प्रदत्त स्व० राजा
विजय कुमार ऑफ
सिसेन्डी

साइकिल व वार्षिक सत्र फीस प्रदाताओं के नाम

श्री अनिल कुमार जी मिश्र शक्ति नगर लखनऊ अपनी माँ शकुन्तला मिश्रा की स्मृति में	रु० ३००० मात्र
श्रीमती मीनू द्विवेदी एल्गिन मिल बंगला कानपुर अपने पति स्व० पं० रत्नेश कुमार द्विवेदी की स्मृति में	रु० ३००० मात्र
डा० आर०के० मिश्र, आर्थो सर्जन, गोमती नगर लखनऊ अपनी पुत्री कु० सोनल मिश्रा की स्मृति में	रु० ३००० मात्र
ब्रिगेडियर सीतान्शु मिश्र अपने पिता स्व० पं आर० के० मिश्र ''मान भाई'' की स्मृति में	रु० ३००० मात्र
श्री गोविन्द शरण निगम एडवोकेट राजाजीपुरम लखनऊ	रु० ५००० मात्र
अलका दीक्षित वैज्ञानिक डी आर ओ दिल्ली	रु० ४५०० मात्र
श्रीमती शैल मिश्रा आई टी कालेज के सामने फ्लैट्स लखनऊ पति पं जी पी मिश्रा की स्मृति में	रु० ३००० मात्र
श्री विजय कुमार पांडे एडवोकेट गोमती नगर लखनऊ	रु० ३००० मात्र
श्री अखिलेश पाठक पाठकगंज मलिहाबाद, लखनऊ अपनी माँ की स्मृति में	रु० २००० मात्र
डा० परेश शुक्ल सर्जन अवध अस्पताल आलमबाग लखनऊ	रु० २००० मात्र

सहयोग के लिये जिनके हम आभारी है

इं अनिल कुमार मिश्र शक्ति नगर फैज़ाबाद रोड लखनऊ अपनी माँ श्रीमती शकुन्तला मिश्रा के स्मृति में	रु० २०००
श्रीमती मीनू द्विवेदी एल्गिन मिल बंगले कानपुर अपने पति स्व० रत्नेश कुमार द्विवेदी की स्मृति में	रु० २०००
डा० आर० के० मिश्र आर्थो सर्जन गोमती नगर लखनऊ अपनी पुत्री स्व० सोनल मिश्र की स्मृति में	रु० २०००
ब्रिगेडियर सीतान्शु मिश्र त्यागी बिहार लखनऊ अपने पिता स्व० पं आर०के०मिश्र ''मान भाई''	रु० २०००
श्री वैभव शुक्ल अहमदाबाद गुजरात अपने स्व० पितृव्य स्व० पं आनन्द शंकर शुक्ल की स्मृति में	रु० २०००
डा० डी०एस० शुक्ल ने अपनी माँ स्व० विद्या शुक्ला की स्मृति में वृद्धाश्रम में एक कक्ष बनवाने हेतु सभा की तरफ से	रु० ५१०००

साइकिल व वार्षिक सत्र फीस पाने वाली छात्रायें

नग़द फीस

१. हिमानी बी०ए० पार्ट-१, फतेहपुर ८४ उन्नाव	रु० ३०००
२. लक्ष्मी बी०ए० पार्ट-३, लखनऊ	रु० ३६००

साइकिल

१. प्रभा कक्षा-११, लखनऊ
२. खुशी कक्षा-६, लखनऊ
३. शिवानी, राजाजीपुरम, लखनऊ
४. अलिश्का बी०-कॉम
५. रोशनी
६. अमीषा, बालामऊ, हरदोई
७. निरूपमा देवी, रायबरेली
८. लक्ष्मी, लखनऊ
९. अंजली, बी०ए० पार्ट-१

प्राक्कथन

अलका निवेदन

''१६ दिसम्बर की काली रात'' को, जब हमारा पूरा देश विजय दिवस मना रहा था, उस समय दिल्ली की अति भीड़-भाड़ वाली सड़क पर एक बच्ची अपनी अस्मिता बचाने में पराजित हो रही थी। कितना रोई होगी वो, चिल्ला-चिल्ला कर गुहार भी लगाई होगी, पर क्या मानव दरिन्दिगी की इतनी हदें पार कर गया है कि उस बच्ची में उसे अपनी माँ-बहन और बेटी न दिखी। अस्मिता तार-तार होने के बाद वह मृत्यु से भी पराजित हुई। हमने क्या किया? मृत्यु के बाद उस बहादुर लड़की का नाम उजागर करना तक हमें नागवार गुजरा कभी दामिनी तो कभी निर्भया ये तमगे दिये गये उसे, मोमबत्तियाँ जलाई गई, नारे लगाये गये, परन्तु उसे क्या कोई बचा पाया? क्या दामिनी के बाद बच्चियों के साथ बलात्कार की घटनायें और नहीं बढ़ीं। **क्यों पुरुष अपनी माँ, बहन, बेटी की तो रक्षा करता है परन्तु अन्य स्त्री भोग्या बन जाती है।** यहां स्त्रियों की पोशाकों पर, उनके बाहर घूमने पर तो प्रतिबंध लगाये जाते हैं परन्तु जब पुरुष उलूल-जुलूल स्लोगन वाले कपड़े पहनते हैं, हाफ पैंट पहनकर घूमते हैं, जिससे स्त्रियों को भी परेशानी होती है, तो उन पर प्रतिबंध क्यों नहीं लगाया जाता है? बच्चियों के पहनावे, उनकी चाल-ढाल, उठने बैठने के तरीके और बाहर निकलने पर प्रतिबंध लगाने से बेहतर है कि हम अपने बेटों को अच्छे संस्कार, उच्च शिक्षा देने के साथ उन्हें बनाये सभ्य और संवेदनशील ताकि वो दूसरों के कष्ट और पीड़ा को महसूस कर सकें।

अब तो सुबह के अखबार से भी डर लगता है, प्रथम पृष्ठ से अन्तिम पृष्ठ तक रंगा है सिर्फ इन घटनाओं से कि तीन वर्ष की बच्ची से दुराचार, छः वर्षीय बच्ची से दुराचार के बाद गला दबाकर हत्या इत्यादि। क्या बेटियां सिर्फ जन्म ही इसी लिये लेती हैं? क्या वे मात्र दूसरों के सुख और भोग का साधन है, जिन्हें भोगने के बाद उन्हें जीने का भी हक नहीं दिया जाता, मार दिया जाता है, जिन्दा जला दिया जाता है। क्यों? क्यों हक नहीं उसे जीने का खिलखिलाने का। अचानक जीवन में आयी एक वीभत्स रात्रि ने सब डाँवाडोल कर दिया। चली गयी छोड़कर वो यादों के नश्तर, माँगते है ख्वाब जख्म बीते लम्हों के । चलती फिरती, चमकती, मचलती दामिनी बनकर रह गयी बस एक खबर, तस्वीर खूब बिके फूल और मोमबत्तियाँ पर क्या निकली किसी भी पुरुष के दल से ये आवाज कि-

हे दाता दे के सुख बिटिया का इस तरह वापस लेना नहीं,
कुछ भी करना जुल्म पर, दुश्मन को भी ऐसी यातना देना नहीं।

नहीं रुक रही हैं घटनाएं नन्हीं-नन्हीं बच्चियों के साथ बलात्कार की । शायद माँ भी डरती है कि जन्म तो दिया बिटिया को पर उसकी सार-सम्भार और सुरक्षा कैसे करेगी। कैसे बचायेगी समाज के भूखे भेड़ियों से उसे, इसी लिए उसे जन्म लेते ही कभी झाड़ियों में, तो कभी मन्दिर के दरवाजे पर या कभी कूड़े के ढेर में फेक आती हैं वो जननी। जो ६ महीने उसे अपने गर्भ में धारण करती है, असहूय पीड़ा सहकर उसे जन्म देती है पर कभी ससुराल वालों-पति के ताने उलाहनों के डर से, कभी सामाजिक दरिंदगी के डर से उसका त्याग कर देती हैं, पर माँ उस बच्ची का दर्द क्यों नहीं समझती जो अभी उसके गर्भ की गरमाहट भी न भुला पायी और फेक दिया गया उसे कूड़े के ढेर में। ये एक बच्ची की हृदय विदारक रुदन-सिंचित गुहार है, अपनी माँ के लिए। मेरी लेखनी रुक न पायी और यह क्रन्दन उतार दिया श्री कान्यकुब्ज प्रतिनिधि सभा में।

मैं कहां जाऊ ....यह कविता पृष्ठ ८० पर दी गई है।

Muhammad Ali's advice to his daughters...

An incident transpired when Muhammad Ali's daughters arrived at his home wearing clothes that were quite revealing. Here is the story as told by one of his daughters: "When we finally arrived, the chauffeur escorted my younger sister, Laila, and me up to my father's suite. As usual, he was hiding behind the door waiting to scare us. We exchanged many hugs and kisses as we could possibly give in one day. My father took a good look at us. Then he sat me down on his lap and said something that I will never forget. He looked me straight in the eyes and said, "Hana, everything that God made valuable in the world is covered and hard to get to.Where do you find diamonds? Deep down in the ground, covered and protected. Where do you find pearls? Deep down at the bottom of the ocean, covered up and protected in a beautiful shell. Where do you find gold? Way down in the mine, covered over with layers and layers of rock. You've got to work hard to get to them." He looked at me with serious eyes. "Your body is sacred. You're far more precious than diamonds and pearls, and you should be covered too."

From the book: More Than A Hero: Muhammad Ali's Life Lessons Through His Daughter's

पितृत्व

तिलक शुक्ल
रायबरेली

पितृत्व अक्सर चर्चा में रहता है। सन् १९६६ अंग्रेजी में डब की एक फ्रेन्च फिल्म देखी थी। एक नाविक अंतरंगता के क्षणों में अपनी प्रेयसी को अनजाने ही गर्भ दे कर समुद्री यात्रा पर चला जाता है। यह घटना सभी के संज्ञान में आ जाती है। लोग फैनी पर ताने कसते हैं। फैनी का पतिवार क्षुब्ध होता है। नाविक का पिता फैनी के संत्रास से परिचित था और उससे सहानुभूति रखता है। तभी स्थानीय जनरल स्टोर का मालिक जो कि धनी होने के साथ निःसंतान भी था, फैनी को बताता है कि उसकी वर्तमान जेनरेशन में कोई संतान नहीं है। वह फैनी की दशा से परिचित है। यदि फैनी उसकी पत्नी होना स्वीकार कर ले तो सात महीने में ही उसके परिवार को वारिस मिल जायेगा। व्यवसाई तलाकशुदा था और उम्र में भी काफी था। फिर भी फैनी बदनामी रोकने के लिये शादी कर लेती है। पुत्र होता है। व्यवसाई के यहाँ जश्न होता है।

जब बच्चा ६ महीने का होता है तभी शिशु का 'जैविक पिता' नाविक वापस लौट आता है और फैनी तथा उसके बच्चे को वापस प्राप्त करना चाहता है। नाविक का पिता नाविक को समझाता है। वह संवाद मेरे जेहन में आज भी ताजा हैं-

पिता : जब तुम फैनी को छोड़ कर गये थे तब तुमने ध्यान नहीं किया कि तुम्हार कृत्य से फैनी अनब्याही माँ भी बन सकती है। जब शिशु पैदा हुआ तब वह मात्र ९ पाउन्ड का था आज वह २४ पाउन्ड का है। यह १५ पाउन्ड हाड मांस के नहीं बल्कि व्यवसाई के १५ **pounds of love** हैं।

नाविक : **But I have given life to that child.**

पिता : **Shut up. Even dogs give life & you have proved no better than that**
नाविक चला जाता है।

पितृत्व भारत में ही नहीं विदेशों में भी विवाद में रहता है। इसी लिये अंगेजी में कहावत है-

"Paternity is always in doubt. Only maternity is sure"

जीवन चक्र चलाने के लिये ही विधाता ने काम या सेक्स की रचना की जिससे संतति हो। भूख और भय के बाद यही सबसे प्रबल संवेग है। श्रेष्ठ संतति का ही **Propogation** हो इसलिये संबंध के लिये हाँ कहने का अधिकार ईश्वर ने स्त्री को दिया। पारिवारिक संरचना के बाद भी वरण का अधिकार स्त्री के पास ही रहा और यहीं से पितृत्व की अनिश्चतता प्रारम्भ हुई।

भारत ही ऐसा देश है जहाँ इस लोक से ज्यादा परलोक सुधारने पर बल दिया जाता है। अधिकतर ग्रन्थ परलोक को अधिक मान्यता देते हैं। जिससे एक साधारण धर्म भीरू मनुष्य के सारे कृत्य परलोक सुधारने के निमित्त होते हैं। पुत्र परलोक सुधारने का सबसे बड़ा साधन है क्योंकि -

''पुन्नाम्ना नरकस्तस्मात्त्रायते पितरं सुतः। तस्मातपुत्रः इति प्रोक्तः स्वमेव स्वयंभुवः'' श्लो १३७ अध्य ९ मनु स्मृति

यहाँ ''पुं'' शब्द से अभिप्राय है ''नरक'' तथा ''त्र'' का अर्थ है रक्षक। अतः नरक से पितरों की रक्षा करने वाले को ही बृम्हा जी ने ''पुत्र'' कहा है।

इस पुत्र रूपी स्वर्ग के द्वार की चाभी को धारण करने और जन्म देने में केवल स्त्री ही सक्षम है। इसी लिये स्त्री का मातृ रूप सदैव वंदनीय रहा। पुत्र द्वारा तर्पण से मोक्ष प्राप्ति के लालची कुछ ऐसे लोग भी हुए जिन्होंने संतानोत्पत्ति के लिये अक्षम होते हुए भी स्त्री का वरण किया। पुत्र होता था और वह तरते भी थे......?

इस जटिलता ने पुत्रों की कई श्रेणियाँ उत्पन्न कर दीं।

'औरस पुत्र' - (उरस=कोख) विवाहित पति पत्नी से उत्पन्न पुत्र।

'जारज पुत्र' - (जार=पत्नी का प्रेमी) विवाहिता का अपने पति के अलावा किसी अन्य पुरूष से उत्पन्न पुत्र।

मानस पुत्र - मन से स्वीकृत अथवा वैचारिक पुत्र

कानीन पुत्र- कुमारी कन्या से उत्पन्न पुत्र

दत्तक पुत्र - विधिपूर्वक गोद लिया पुत्र

कानीन पुत्र को छोड़कर बाकी सभी पुत्रों को तर्पण का अधिकार प्राप्त है, वहीं ''जारज पुत्र'' को अपने 'जैविक पिता' को तर्पण करने का अधिकार नहीं है।

पति की मृत्यु के बाद या पति के संतानोत्पति में अक्षम होनें पर स्त्री नियोग द्वारा संतान प्राप्त कर सकती थी। नियोग से उत्पन्न पुत्र उसी व्यक्ति का पुत्र माना जायेगा जिससे कि उसकी माँ का विधिवत विवाह हुआ। धृतराष्ट्र और पाण्डु पिता की मृत्यु के बाद और पाण्डु पुत्र राजा पाण्डु के जीवन काल में ही नियोग द्वारा उत्पन्न हुए।

कथा है कि एक राक्षस ने १६००० कन्याओं को कैद कर रखा था। वह सभी उसके द्वारा व उसके सैनिकों द्वारा यौन शोषित हुई। इनमें से अनेकों गर्भवती भी थी। कृष्ण ने राक्षस को मार सभी कन्याओं को मुक्त किया। उन पर हुए अनाचार का भान होने पर उन्होंने सभी १६००० कन्याओं से सामूहिक विवाह कर उन्हें अपनी पत्नी का दर्जा दिया जिसके फलस्वरूप

उन पीड़ित कन्याओं से उत्पन्न सन्तानें योगेश्वर कृष्ण की संतान कहलाई। इस प्रकार कृष्ण ने उन कन्याओं और उनकी संतान के सम्मान की रक्षा की। यह घटना द्रौपदी की लाज रक्षा से अधिक क्रान्तिकारी और महान थी।

आधुनिक काल मे legitimate son की परिभाषा में बताया गया है कि वैवाहिक संम्बन्ध के दौरान उत्पन्न हुए पुत्र को **legitimate son** माना जायेगा और वह अपनी माँ के वैधानिक पति की ही संतान माना जायेगा।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी कामता देवी के बाद में ऐसी ही टिप्पणी की **"This may look hard from the husband's point of view who would be compelled to bear the fatherhood of a child of which he may be innocent. But even in such a case, the law leans in favor of innocent child from being bastardized."**

माः सर्वोच्च न्यायालय ने २००६ के एक निर्णय में कहा कि साधारण नीति के अंतरगत उस बच्चे के पितृत्व की जाँच करना उचित नहीं है जिसके जन्म के समय उसके माता पिता के आपसी दाम्पत्य संबन्ध समाप्त न हुए हों। Legitimacy दाम्पत्य बंधन में जन्म से ली जाती है गर्भधारण से नहीं।

यहाँ पर प्रश्न उठ सकता है कि आधुनिक काल में जब D.N.A. test के द्वारा पितृत्व पूरी तरह से प्रमाणित हो जाता है तो क्या वर्तमान वैधानिक स्थिति में कोई परिवर्तन हो सकता है।

मा० सर्वोच्च न्यायालय इसे सहमत नहीं है। D.N.A. test की आवश्यकता तब होती है जब कि जैविक पिता के बारे में कोई आशंका हो। (धृतराष्ट्र और पाण्डु अथवा पाण्डु पुत्रों के जैविक पिता के बारे में कोई भ्रम नहीं था, परन्तु वह सब अपने जननी के पति के ही पुत्र कहलाये)

मा सर्वोच्च न्यायालय **"we may note sect. 112 was en-acted at a time when modern scientific advancement with D.N.A. as well as R.N.A. tests were not even in contemplation of the legislature.**

"The result of a genuine D.N.A. test is said to be scientifically accurate. But even that is not enough to escape from the conclusiveness in law would remain un-rebuttable."

Section 112 of Indian Evidence Act---" The fact that any person born during the continuance of a valid marriage between his mother and any man, or within 180 days after its dissolution, the mother remaining un-married, shall be conclusive proof of that he is the legitimate son of that man, unless it

can be shown that parties to the marriage had no access to each other at any time when he could have been begotten".

अतएव पितृत्व की अद्यतन स्थिति शास्त्रों के अनुसार और देश के प्रचलित कानून के अनुसार यदि '' विधिक रूप से विवाहित पति-पत्नी एक साथ रह रहे हैं तो पत्नी द्वारा उत्पन्न संतान उसके पति की ही मानी जायेगी चाहे संतान का जैविक पिता उसकी माँ के पति से अन्य क्यों न हो।''

यह संतान अपने जैविक पिता को तर्पण करने या उसकी संपत्ति का अधिकारी नहीं माना जायेगा।

डी एन ए टेस्टिंग व्यवहारिक होने के बाद की स्थिति

डी एन ए टेस्टिंग के बाद चरित्रहीनता के आधार पर पति को तलाक मिल सकता है तथा जैविक पिता पर धारा ४९७ के अंतर्गत infidelity का केस चल सकता है। कानून में व्यवस्था है कि ऐसी परिस्थिति में महिला को 'abbetter' होने का अपराधी नहीं माना जायेगा। वर्तमान कानून में यह व्यवस्था सम्भवतः इसलिये है कि अभी भी पत्नी को पुरूष की सम्पत्ति माना जाता है, अतः ऐसी घटना को घर के अंदर घुस कर चोरी के समकक्ष माना गया। परन्तु अब नारी अपने को पुरुष के बराबर मानती है सम्पत्ति नहीं। इन परिस्थितियों में विधि निर्माताओं का इस विषमता पर ध्यान देना वांछनीय है।

छपते-छपते

टाइम्स आफ इन्डिया ६ जनवरी २०१४ के अंक में सर्वोच्च न्यायालय का एक निर्णय छपा है जो कि ऊपर लिखे निर्णय से कुछ हटके है। लता की नन्दलाल से १९९० में शादी हुई और १९९१ से वह एक दूसरे से **Separated** थे। १९९६ में जब उनकी शादी **Subsist** कर रही थी, लता ने एक बेटी को जन्म दिया। इस बेटी के भरण पोषण के लिये लता ने नन्दलाल पर दावा किया। नन्दलाल का कहना था कि वह अलग-अलग थे अतएव नन्दलाल की पुत्री नहीं हो सकती। लता का कहना था कि नन्दलाल कभी-कभी उसके पास आता था। सुप्रीम कोर्ट में अपनी बात की सत्यता को सिद्ध करने के लिये नन्दलाल ने डी एन ए टेस्ट कराना चाहा। डी एन ए टेस्ट की रिपोर्ट में आया कि नन्दलाल उस बच्ची का ''जैविक पिता'' नही था। सुप्रीम कोर्ट ने नन्दलाल के कथन 'कि वह अलग होने की वजह से बच्ची का पिता नही हो सकता' को सत्य माना और उसे पोषण की जिम्मेदारी से बरी कर दिया। कुछ लोग इसे सेक्शन ११२ से अलग मानते है पर कुछ विधि विशेषज्ञों का कहना है यह सेक्शन तब लागू नही होगा जब **"It can be shown that the parties to the marriage had no access to each other at any time when he could have been begotten".** और डी एन ए टेस्ट ने नन्दलाल के कथन को सत्य प्रमाणित कर दिया।

Safety Tips

Take following precautionary measures to prevent offences:-

- The main gate of the house should be strong and sturdy; the doors and windows of the house should be kept closed and locks of good quality should be used.
- While going outstation, request your neighbor to look after your house.
- Ensure that at least one light is kept on in the house. It gives the impression that someone is present in house
- Ensure that information about your being out station is not passed to unknown person.
- Inform the police if any unknown person is found wondering in your society or Mohlla.
- Keep name, address, photograph and contact details of domestic servant.
- Insure of your vehicle and other valuables.
- Do not park your vehicle without locking it and as far as possible use "Pay and Park" facility.
- Do not park vehicle with valuables in it.
- If you have to go out in emergency, leaving valuables behind, a companion should be kept or if required help of the local police can be taken.(this is practiced at Ahemedabad but may not be of much help else- where)
- Do not count money in such a way that others can see it.
- Cover gold chain with clothes wore.
- While travelling do not entrust your luggage with any un-known person.
- Do not take or eat anything from any un-known person.
- Do not give your personal details to co passengers
- Do not allow any unknown person in home.
- Women should not give their ornaments to any un-known person for cleaning.
- Avoid being over friendly with strangers.
- Register the name of domestic help and drivers at the nearest police station by filling in the appropriate form. This form with

their photos will then be sent to the police stations at the workers' native places so their background can be immediately verified.

- Install safety features such as a peephole facility, safety latch or iron grill so that you can scan each visitor before allowing them entry. Be extra careful while allowing unknown persons like vegetable sellers, washer men and milkmen inside.
- Do not open cupboards, show valuables or discuss financial matters in front of domestic help. They may be tempted to carry out an unlawful act.
- Do not withhold pay, derogate or mistreat domestic workers. They may seek revenge.
- Develop a network of friends and talk to your neighbor to ensure that you do not live a secluded life. Go for regular walks in groups and socialize.
- Do not keep valuables at home. Store jewelry in a bank locker and cash in your savings account.
- Keep important telephone numbers handy. This includes that of friends or relatives living nearby as well as that of your local police station.
- You may also dial 100 in case of emergency.
- For ladies :- Do not blame law & order situation or trust only police to always protect you. Take some precautions yourself.
- Avoid lonely places alone specially in the dark.
- Avoid lonely parking.
- Do not accept free lifts in car.
- Unless unavoidable try to return back to residence by 8 pm.
- Be prepared & Train for any eventuality:-
- You should have stamina to run for 300meters. It may save your honor & life some day.
- Learn fighting techniques like knee kick to groin, elbow hit to jaw, forceful push to solar system, attacking eyes of offender. Always shout at top of voice while attacking.
- Learn, practice & reherse them so that it becomes habit so you react naturally when need be.

- There are 60% chance the attacker will flee when gets such violent reaction. But it will be safer if you attack to un-nerve assailant then run for safety. DO NOT stay there to teach him lesson.
- For senior citizens & single ladies: - Senior citizens like lonely ladies are most vulnerable. They should not open doors to unknown persons. For courier or letters they not open doors fully but should talk with safety latch on.
- Senior citizens should start practicing cleaning & mopping or other house hold cores from early sixties, later it will become habit. It will keep them healthy & ALIVE.
- Call plumber, electrician, or gas cylinder change when some male member is present or call neighbor at that time.
- Install CCTV & boldly display that YOU ARE BING WATCHED.
- Always mention name of you sons or daughters on your name plate. It may confuse a totally new burglar that you are not alone.

Complied by-
Vaibhav, Ahmedabad

पृष्ठ ८३ का शेष भाग

★ ★ ★ भुवाली सन्यासी केस ★ ★ ★

एक राजा की मृत्यु के कुछ वर्षों बाद एक सन्यासी आया जिसने कि अपने को मृत राजा बताया उसने बताया कि उसे चिता पर बगैर जलाए छोड़ दिया गया था। और उसे कुछ सन्यासियों ने जीवित कर अपने साथ ले गए।कई वर्षों के बाद जब उसे याद आया कि वह कौन है, अपने राज्य लौटा है। राज्यासीन राजा वा मृत राजा की पत्नी ने उसे राजा मानने से इन्कार किया। अदालत के निर्देश पर सन्यासी कि और मृत राजा कि पहचान चिन्ह **Compare** किये गये। आकृति, देहयष्टि, लम्बाई, शरीर पर पुराने चोटो के निशान, आंख की पुतली पर चोट का निशान व **Private Part** पर पुराने रोग के निशान राजा के व सन्यासी के समान पाये गये। अदालत ने निर्णय दिया कि उक्त सन्यासी ही राजा है। राज्य का हस्तान्तरण होने के पहले सन्यासी की मृत्यु हो गई। यह केस 'विधि जगत' में भुवाली सन्यसासी केस के नाम से प्रसिद्ध है।

Practical Ramayana

November 22, 2010 at 3:24am

Anurag
Woodstock, Maryland, U S A

** This is just my imagination, and not related to any facts. I'm not challenging any holy book or anyone by sharing my thoughts with you.

Characters:1. Rama : Positive side of your brain ('Do the right ' thinking)2. Ravana : Negative side of your brain (Evil thoughts/ Krodh/Lobha)3. Seeta : "Piousness of soul".4. Hanuman : Shaurya(valor) & utsaah (enthusiasm) side of your heart.5. Jamvant : Calm side of your heart.6. Lakshman : Support in ALL ODDS to (people you care about).7. Bharat : Devotion towards people (you care about).8. Shatrughan : "Positive Anger Reaction" in ODD situation.9. Kaikai : Bad phase of your life (for reason)10. Sursa : Time (when you struggle with bad phase of your life)11. Ocean : Big challenge in your life (Teaches us: Sama/Dama/Dand/Bheda)

I'm not any philosopher or Gyani, but I actually interpret this Practical Ramayana as depicting Human body, and its emotions. According to me, it teaches us the RIGHT kind of behavior and how to become street smart. I read Ramayana when I was a little kid in my family, and soon I knew it by heart without really knowing what it meant. With time, the words started to make more sense to me and I felt like it's an interesting tale. Suddenly few thoughts came to my mind about Tulsiads's intention behind writing this great epic. (It's just my way of understanding Ramayana, no offense to anyone's religion or feelings). I thought it had great moral value for all of us in the modern world, so wanted to share with everyone. It might help us in choosing the right path when we are confused or caught in a situation when decision making is difficult. Here are a few thoughts I'd like to share, which goes with Ramayana's story (Prasang). When you get evil thoughts (Ravana) in your mind, you might lose your most precious thing/s (Seeta), even if you are capable of handling other big stuff in your life with the capability (Lakshman/Right Hand) of handling bigger issues. Your Shaurya & utsaah (valor & enthusiasm) side of your heart (HANUMAN) jumps to take any risk to get your most liked/precious things back (Hanuman flew over the Ocean to find out Seeta's whereabouts

and also stuck with Rama in all odds). When you think your phase in life is bad, you should not have any EGO, and tactfully get over the phase by keeping low profile. (When SURSA confronted Hanuman, he tactfully instigated her to become "BIG MOUTH", and transformed himself into really TINY self (Low profile). By going inside her mouth and safely came coming back out, thus satisfying Sursa's challenge to go in her mouth. Hanuman achieved his motive, satisfied Sursa and actually ended up receiving Sursa's blessings. When you fight/struggle for anything like Rama, you need FULL heart (Both Hanuman and Jamvant) which is a good balance of utsaah/excited and calm qualities. When you are struggling with life's down phases, Ramayana teaches us few things from VEDAS as well (SAMA/DAMA/DAND/BHEDA). Like when Rama was struggling to cross over the ocean (Palk Strait) near Rameshwaram in South India. First He prayed to Ocean to calm down so that they can cross over the ocean, but at that time Ocean (Big challenge) was very hard on him. After so many requests (SAMA), Rama decides to punish Ocean (DAND) by drying all Ocean. Soon after that crossing over the Ocean (Big Challenge) became easy task. Above relative incidents, I've personally seen and felt. And I'm sure so many more to come in life. Try to relate this Practical Ramayana to your life incidents. I'm sure you will find so many incidences in Ramaayan which may guide you. Pl. feel free to share it with us any such incidences if you.

कर्ता का अहंकार.....दुःखों का मूल

शिवाजी बहुत ही योग्य शासक थे। उन्हें माँ का आशीष व समर्थ गुरु रामदास का मार्गदर्शन प्राप्त था। शिवा ने एक बार अपने गुरु को बताया कि अब उनके राज्य में कोई भूखा नहीं सोता। सभी के लिये कम से कम दो जून के भोजन की व्यवस्था कर दी गई। गुरु रामदास को अपने शिष्य के इस कथ्य में अहंकार भासित हुआ। उन्होंने शिवा को शिक्षित करने हेतु पास ही पड़ा एक मिट्टी का ढेला देकर तोड़ने को कहा। ढेले से एक मेढक निकल कर फुदकता हुआ भाग गया। गुरु ने पूछा '' शिवा इसे भी तू ही भोजन कराता है''। शिवाजी को अपनी चूक का एहसास हुआ। उन्होंने गुरु को शीश नवाकर कहा ''चूक हुई गुरु देव। ईश्वर ही सबका पालन करता है। मैं केवल गुरु की आज्ञा का पालन कर रहा हूँ''।

भारतीय वर्षा की विशेषताएँ

डा० एस. एम. द्विवेदी
अध्यक्ष भूगोल विभाग

भारत एक कृषि प्रधान देश है। कृषि में वर्षा का विशेष महत्व है। खाद्यान्नों, व्यापारिक तथा औद्योगिक फसलों का उत्पादन प्रमुख रूप से वर्षा पर ही आधारित है । अतः भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरुदण्ड होने के कारण यहाँ की वर्षा का विशेष महत्व है।

भारत में वर्षा का बड़ा भाग मानसूनी वर्षा के रूप में प्राप्त होता है। 'मानसून' शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के 'मौसिम' शब्द से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ मौसम है। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग अरब सागर की पवनों के लिये किया गया था जो छः महीने उत्तर-पूर्व की ओर से तथा छः महीने दक्षिण-पश्चिम की ओर से चलती है।

मानसूनों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में निम्नलिखित संकल्पनाएं प्रचलित हैं-

(१) **तापीय संकल्पना** – इस प्राचीन संकल्पना के अनुसार मानसून पवनें जल तथा स्थल के विरोधी स्वभाव तथा तापीय भिन्नता के कारण उत्पन्न होती हैं। अतः मानसून पवनें स्थलीय तथा जलीय समीर का ही विशद् रूप है। यह संकल्पना अब अमान्य हो गई है।

(२) **गतिक संकल्पना** – फ्लोन नामक मौसम विज्ञानवेत्ता ने इस परिकल्पना का प्रतिपादन किया था। उनके अनुसार मानसून पवनें वायुदाब एवं पवन पेटियों के खिसकने से उत्पन्न होती हैं।

(३) **जेट स्ट्रीम संकल्पना** – १९५० के बाद मानसून की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कोटेश्वरम्, यिन, फ्लोन, रामारत्ना, अनन्तकृष्णन् आदि विद्वानों द्वारा क्षोभमण्डल में ऊपरी तथा मध्यवर्ती परतों के प्रेक्षणों एवं गहन शोधों के द्वारा नवीन तथ्यों को प्रकाशित किया गया। सन् १९७३ में भारतीय तथा रूसी मौसम वैज्ञानिकों द्वारा मानसून अभियान **(Monex-Monsoon Expedition)** संचालित किया गया। इसके अन्तर्गत मई से जुलाई १९७३ के मध्य अरबसागर तथा उत्तरी हिन्दमहासागर में वैज्ञानिक उपकरणों से युक्त चार रूसी तथा दो भारतीय जलयानों द्वारा मानसूनों पर अनुसंधान किये गये। इनसे प्राप्त तथ्यों के आधार पर भारतीय मानसूनों की उत्पत्ति एवं क्रियाविधि पर नवीन जानकारियाँ प्राप्त हुईं इससे पूर्व भारतीय वेधशालाओं के महानिदेशक पी० कोटेश्वरम् ने तिब्बत के पठार के ग्रीष्मकालीन ऊष्मन को भारतीय मानसून को उत्पन्न करने तथा नियन्त्रित करने में एक प्रमुख कारक बताया था।

ध्रुवों के ऊपर धरातल पर वायु के नीचे उतरने तथा एकत्रीकरण के कारण उच्चदाब स्थापित हो जाता है जबकि ऊँचाई पर क्षोभमण्डल में इस उच्चदाब के ऊपर उच्चस्तरीय निम्न दाब का क्षेत्र निर्मित होता है। ऐसी स्थिति में ध्रुवों के ऊपर उच्चतलीय परिध्रुवीय भँवर उत्पन्न

होता है जिससे पवन का संचार चक्राकार भंवर के रूप में होता है। एशिया के ऊपर इसकी दिशा सामान्यतः पश्चिम से पूर्व की ओर होती है। इस उच्चस्तरीय पवन संचार को विषुवतरेखीय क्षेत्रों में 'जेट स्ट्रीम' कहा जाता है जो अत्यधिक तीव्रगति से मोड़ बनाते हुए चलता है। उत्तरी गोलार्द्ध में शीत ऋतु में धरातल पर उच्चदाब के ऊपर उच्चतलीय प्रबल निम्नवायुदाब की दशाएं उत्पन्न हो जाती हैं जिससे पछुआ जेट पवनें २०° से ३५° उत्तरी अक्षांशों के मध्य चलने लगती हैं। दक्षिणी एशिया के ऊपर जेट पवनें क्षोभ मण्डल में १२ कि. मी. की ऊँचाई पर स्थित होती हैं जिन्हे उपोष्णीय पछुआ जेट कहा जाता है।

भारत की जलवायु के विभिन्न तत्वों में वार्षिक वर्षा सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस वर्षा का मौसमी प्रकार एवं वितरण विभिन्न क्षेत्रों की जलवायु दशाओं को निर्धारित करता है जिनके आधार पर ही यहां की कृषि प्रधान आर्थिक व्यवस्था का विकास हुआ है। सम्पूर्ण देश में वार्षिक वर्षा की मात्रा ३X१०^{१२} घन मीटर अनुमानित की गई है, जिसका अधिकाँश जल के रूप में प्राप्त होता है। केवल उत्तर के ऊँचे पर्वतीय क्षेत्रों तथा शीतऋतु में उत्तरी मैदान के कुछ भागों में हिम के रूप में वर्षा होती है। सम्पूर्ण देश में वार्षिक वर्षा की औसत मात्रा लगभग ११२ से.मी. है। देश में वर्षा का मासिक वितरण भी समान नहीं है। जून से सितम्बर तक औसत वार्षिक वर्षा का लगभग ८० % प्राप्त होता है जबकि शेष महीनों में बहुत कम वर्षा होती है।

देश के विभिन्न भागों में प्राप्त होने वाली वार्षिक वर्षा का वितरण प्रमुख रूप से प्राकृतिक धरातलीय दशाओं द्वारा प्रभावित होता है। यही कारण है कि मानसूनी पवनों के सम्मुख स्थित पर्वतीय ढालों पर होने वाली वर्षा की मात्रा पृष्ठ क्षेत्रों की तुलना में अधिक होती है। उदाहराणार्थ सह्याद्रि के पश्चिमी ढाल तथा शिलांग पठार के दक्षिणी ढालों पर सर्वाधिक वर्षा होती है जिसकी मात्रा ३५० सेमी० से भी अधिक रहती है। इसी क्षेत्र में मालाबार एवं कोंकण तटों पर वार्षिक वर्षा की मात्रा क्रमशः ६० एवं ७७ सेमी० है उत्तरी-पश्चिमी मरुस्थलीय भाग में कोई पर्वतीय अवरोध न होने के कारण वर्षा की मात्रा पूर्वी राजस्थान में ६३ सेमी० एवं पश्चिमी राजस्थान में केवल ३३ सेमी० ही है।

भारत में प्राप्त होने वाली वार्षिक वर्षा की मात्रा के आधार पर देश को निम्न चार प्रदेशों में बांटा जा सकता है-

(१) **अत्यधिक वर्षा वाला प्रदेश** – इसके अन्तर्गत देश के वे सभी क्षेत्र सम्मिलित हैं जहाँ वार्षिक वर्षा की मात्रा ४०० सेमी. से अधिक होती है इसके अन्तर्गत देश के तीन क्षेत्र सह्याद्रि पर्वतीय भाग के पश्चिमी ढाल से अरबसागर तक संकीर्ण पट्टी के रूप में, मेघालय राज्य में शिलाँग पठार के दक्षिणी पूर्वी भाग में चेरापूँजी स्थान के आस-पास तथा असम राज्य में ब्रह्मपुत्र नदी की घाटी के मध्यवर्ती भाग से लेकर पूर्वी हिमालय के दक्षिणी ढाल सम्मिलित किये जाते हैं। चेरापूँजी स्थान पर वार्षिक वर्षा की मात्रा लगभग ११४१ सेमी. है। दक्षिण भारत का नीलगिरि पर्वतीय क्षेत्र भी अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में सम्मिलित किया जाता है।

(२) **अधिक वर्षा वाला प्रदेश** – २०० से ४०० सेमी. तक की वार्षिक वर्षा वाले सभी क्षेत्र इसमें सम्मिलित किये जाते हैं। इसके अन्तर्गत केरल, कर्नाटक एवं महाराष्ट्र के समुद्रतटीय भाग, मेघालय शिलांग पठार का दक्षिणी भाग, ब्रह्मपुत्र नदी की दक्षिणी घाटी, पूर्वी हिमालय के दक्षिणी ढाल एवं हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय भागों का कुछ क्षेत्र सम्मिलित है।

(३) **सामान्य वर्षा वाला प्रदेश** – १०० सेमी. से २०० से.मी. वार्षिक वर्षा वाले इस प्रदेश में भारत के अधिकांश पूर्वी भाग, प्रायद्वीपीय भारत का अधिकाँश पूर्वीतटीय भाग तथा सह्याद्रि के निकट का पश्चिमी आन्तरिक भाग सम्मिलित है। असम का अधिकाँश भाग, मध्य प्रदेश का पूर्वी भाग, आन्ध्र प्रदेश का उत्तरी-पूर्वी भाग, महाराष्ट्र का पूर्वी भाग, उत्तर-प्रदेश का उत्तरी एवं पूर्वी क्षेत्र, हिमाचल प्रदेश, पंजाब एवं जम्मू एवं कश्मीर का कुछ भाग और तमिलनाडु राज्य के तटीय भाग का उत्तरी क्षेत्र इस प्रदेश में सम्मिलित है।

(४) **न्यून वर्षा वाला प्रदेश** – इस प्रदेश में वार्षिक वर्षा की मात्रा ५० से.मी. से १०० से. मी. रहती है। इसके अन्तर्गत पश्चिमी भारत का अधिकाँश भाग आता है। यह प्रदेश साधारणतः तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्र-प्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात के आन्तरिक भाग, उत्तर-प्रदेश का दक्षिणी-पश्चिमी भाग तथा हरियाणा और पंजाब का दक्षिणी भाग तथा राजस्थान एवं मध्य प्रदेश के सीमावर्ती भागों मे विस्तृत है।

(५) **न्यूनतम वर्षा वाला प्रदेश** – इसे शुष्क प्रदेश भी कहते हैं। इसके अन्तर्गत पाकिस्तान के सीमावर्ती भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग को सम्मिलित किया जाता है जहाँ वर्षा का वार्षिक औसत ५० से.मी. से कम रहता है। इस प्रदेश के पश्चिमी भाग में वर्षा की मात्रा २० से. मी. से कम रहती है। इस प्रदेश के पश्चिमी भाग में वर्षा की मात्रा २० से. मी. से भी कम रहती है। इसके अन्तर्गत बाड़मेर एवं जोधपुर जिले आते हैं।

साधारणतः वर्षा के साथ कुछ घटनाएं जन-धन की आधार हानि के लिये भी उत्तरदायी है, जिनमें बादल फटने की घटना प्रमुख है। यह घटना प्रमुख रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में होती हैं, जिसमें बिजली की चमक और तूफान के साथ अचानक असाधारण रूप से भारी वर्षा होती है। थोड़े ही समय में इससे भारी नुकसान होता है तथा भूमि अपरदन से गहरे खड्डों का निर्माण हो जाता है। जब पर्वतीय क्षेत्रों के ऊपर से जल की बूँदों एवं ओलों से युक्त बादल गुजरते हैं तब धरातल से उठने वाली हवा का दबाव जो उन्हें ऊँचाई पर रोके रखता है अचानक लुप्त हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप थोड़े ही समय में बादलों में उपस्थित समस्त जल एवं हिम धरातल पर भारी वर्षा के रूप में गिर जाता है और उस क्षेत्र में भीषण तबाही का कारण बनता है।

डा० एस० एम० द्विवेदी
अध्यक्ष, भूगोल विभाग (अ० प्रा०)
एस० एम० कालेज, चन्दौसी

अफगानिस्तान : २०१४ के बाद क्या ?

के.एन. मिश्रा
बड़ौदा, गुजरात

सन् १९९२, पेशावर में गवर्नर का राजभवन, आठ अफगान मुजाहिदीन कमांडर, जिनके खजाने और शस्त्रागार अमेरिकी डॉलर और हथियारों से अटे हुए थे, इकट्ठा हुऐ यह तय करने के लिये कि अफगानिस्तान पर पूरी तरह कब्जा कैसे जमाया जाए और सत्ता का बँटवारा कैसे किया जाए।

उनको इकट्ठा करने वाले और कोई नहीं, तब ४३ वर्षीय श्री नवाज शरीफ थे, जो पिछले वर्ष ही पहली बार पाकिस्तान के प्रधानमंत्री बने थे। सीधे सादे,उन्होंने बौद्धिक होने का कभी दावा नहीं किया, असीम संयम और लगन के साथ, अफगानिस्तान में शान्ति और व्यवस्था कायम करने के प्रयत्न में लगे रहे और करीब-करीब सफलता के कगार पर भी पहुँच गये थे।

आज २१ वर्षों के बाद अफगानिस्तान फिर दूसरे मोड़ पर खड़ा नजर आता है। अमेरिका के तालिबान के साथ किसी भी प्रकार के समझौते की बात तो दूर, तालिबान से बातचीत होने के आसार भी नजर नहीं आते। ऐसे में नवाज शरीफ का फिर पाकिस्तान के प्रधानमंत्री के रूप में होना, आशा की कुछ किरणें जगाती हैं।

पिछली बार, सन् १९९२ में नवाज शरीफ ने जो समझौता कराया था उसमें सेन्ध उनके ही जासूसी संस्थान आइ एस आई ने लगाई थी। हालाँकि आइ एस आई के एक धड़े ने मुजाहिदीनों के नेताओं को पेशावर में इकट्ठा कर शरीफ को समझौते तक पहुँचाने में सहयोग दिया, दूसरे धड़े ने अपने चहेते जिहादी सरगना गुलबादिन हेक्मतयार के लड़ाकों को, सैकड़ों की तादाद मे काबुल मे चोरी छुपे घुसाने की कोशिश की थी। आइ एस आई की यह तिकड़म चली नहीं। गुलाबदीन के सैकड़ों लड़ाके, अहमदशाह मसूद के लड़ाकों द्वारा, जिनका काबुल पर कब्ज़ा था, मारे गये और उसके बाद तालिबान के काबुल पर कब्जा होने तक, काबुल मुजाहिदीनों के बीच होने वाले संघर्ष का केन्द्र बना रहा था।

आज फिर स्थिति १९९२ जैसी ही हो गई है। अफगान सेना , जिसका आज काबुल पर प्रभुत्व है, तालिबान द्वारा, उत्तरी संगठन की तरह ही, ताजिक और

उजबेकों की सेना मानी जा रही है। तालिबान पर आज भी यदि किसी का कुछ प्रभाव है तो वह पाकिस्तानी सेना का ही है और पाकिस्तानी सेना अपने ही विरोधाभासों में फँसी हुई है । तालिबान पर उसका कुछ प्रभाव तो है परन्तु नियंत्रण नहीं। तालिबानों के भी अलग अलग गुट अलग अलग तरह से व्यवहार करते हैं। जहाँ मुल्ला ओमर और हक्कानी समूह, पाकिस्तानी सेना के सहायक सेना के रूप में व्यवहार करते हैं।

उत्तरी वजीरिस्तान में केन्द्रित पाकिस्तानी तालिबानों ने खैबरपख्तूनवा, फाटा, बलोचिस्तान और कराँची में आत्मघाती हमलों, बम धमाकों और हत्याओं से पूरे पाकिस्तान में दहशत की स्थिति पैदा कर दी है। पाकिस्तानी तालिबान के मुख्य निशाने पर पाकिस्तानी सेना, आइ.एस.आई. पुलिस और शिया मुस्लिम हैं। ऊपर से वे अवश्य अलग-अलग लगते हैं लेकिन अन्दर उन में पूरा तालमेल है। तीनों समूह मुल्ला ओमर को ही अपना सर्वोच्च नेता मानते हैं।

नवाज शरीफ आज फिर इस स्थिति में हैं कि वे तालिबान को अमेरिका से २०१४ के बाद की स्थिति के लिये बातचीत के लिये मना सकें। वे शायद अफगानिस्तान के राष्ट्रपति हामिद करजाई जिनके अजीबो गरीब और अड़ियल व्यवहार से सभी तंग हैं, पाकिस्तानी सेना के मुकाबले, बेहतर सम्बन्ध बना सकें।

वर्षों से चले आ रहे, अविश्वास के बावजूद, यह तभी संभव है यदि पाकिस्तानी सेना फिर से, नवाज शरीफ के नेतृत्व वाली नागरिक सरकार को मंत्रणा में पहल करने दे और खुद नेपथ्य में जाने के लिये तैयार हो। अभी तक तो नागरिक प्रशासन, पाकिस्तानी सेना के लिये ''ब्लडी सिविलियन ईडियट्स'' ही हैं।

अफगानिस्तान में शान्ति की कुन्जी , निरपेक्ष राष्ट्रपति के चुनाव और काबुल सरकार एवं तालिबान के बीच सत्ता के लिये समझौते पर निर्भर करती है। इस समझौते में शरीफ फिर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, यदि (उनके अधीन?) पाकिस्तानी सेना उन्हें इसकी अनुमति दे तो।

यदि पाकिस्तानी में, जैसा कि अबतक होता आया है, अफगानिस्तान और भारत के मामले में जनरलों की ही चलती है, भारत के लिये तस्वीर कुछ अच्छी नहीं दिखती। जनरलों ने, तालिबान को इतने दिनों तक इसी आस में बचाए रखा कि अन्ततः उनके सहयोग से फिर से अफगानिस्तान में अपनी पैठ बनाई जा सके। हालाँकि इसमें पाकिस्तान का हाँथ ही नहीं लगभग पूरा शरीर ही झुलस गया है।

अमेरिका अब अफगानिस्तान से किसी भी तरह छुटकारा पाने के लिये उतावला है। २०१४ के बाद दोनों, अमेरिकी जनता और अमेरिकी प्रशासन, अमेरिकी सैनिकों को किसी भी स्थिति में वापस लाना चाहते हैं, चाहे दक्षिण अफगानिस्तान में फिर से तालिबान का प्रभुत्व ही क्यों न हो जाय। ऐसे में पाकिस्तानी सेना के जनरल, तालिबान लड़ाकों को, विशेष कर, हक्कानी ग्रुप को, जिसकी काबुल में कब्जे के बाद विशेष भागीदारी निश्चित है, काबुल पर कब्जा करने के लिये हर प्रकार से प्रेरित करेंगे और सहायता देंगे।

ऐसे में ६० के दशक की स्थिति फिर दोहराई जा सकती है जिसमें ईरान पश्चिम में हजाराओं को और रूस और भारत उत्तर में उजबेक और ताजिक गुटों से सहयोग करने पर मजबूर हो जायेंगे। इस स्थिति से बचने के लिये, जिस में भारत को शायद काबुल से १९९६ के तर्जपर बोरिया बिस्तर बाँधना पड़े, शरीफ के हाथ मजबूत करने में ही भारत की भलाई है। परन्तु सवाल यह है कि दिल्ली में किसी की भी मनमोहन-सोनिया, या मोदी-भागवत की निगाह काबुल की ओर है भी क्या?

दृष्टिकोण

एक ही तथ्य के विरोधी संदेश भी हो सकते हैं। कौन मनुष्य किस तथ्य को ग्रहण करता है यह ग्रहण करने वाले के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। दृष्टिकोण स्वयं ग्रहणकर्ता के संस्कार तथा कभी-कभी स्वार्थ पर भी निर्भर करता है। कोयल और कौवे का सम्बन्ध भी ऐसे ही विरोधी तथ्य प्रस्तुत करता है।

१-शिशु कोयल कौवे के बच्चों के साथ एक ही घोंसले में जन्म लेते हैं कौवे के द्वारा ही पोषित होते हैं परन्तु फिर भी कोयल के स्वर में कौवे की कर्कशता नहीं आती। वह अपनी मीठी बोली ही बोलता है। बुरी संगत के बावजूद वह स्वर की मधुरता नहीं छोड़ता।

२- कौवा भ्रमवश ही सही शिशु कोयल को अपने बच्चे की तरह ही पालता है। परन्तु समर्थ होने पर वही कोयल कौवे के अण्डों को नष्ट कर उनके स्थान पर अपने अण्डों को रख देती है। यह उपकार और कृतघ्नता का चक्र प्रकृति में निरन्तर चलता रहता है।

साकार होगा ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' का मूल मंत्र?

दुर्गेश नारायण शुक्ल
२८, खुर्शेदबाग, लखनऊ-२२६००४
मो० ६३३६५०३२८०

समस्त संसार को एक परिवार बताने वाले भारत के मूलमंत्र ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की याद एक बार फिर आ गयी। ऐसा नहीं कि हम भूल गये थे। परन्तु परिस्थितियाँ जिस तरह रूप धारण कर रही थी उसे देखते हुए उपरोक्त मंत्र अप्रासंगिक होता जा रहा था। अब जब इलाहाबाद उच्च न्यायालय की लखनऊ खण्डपीठ ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाकर न केवल राजनीतिक दलों की नींद उड़ा दी है, सामान्य भारतीयों को हार्दिक संतोष प्रदान किया है। क्या भारत जैसे महान राष्ट्र में धर्म, सम्प्रदाय और जातीय स्तर पर ''लोकतांत्रिक खेल'' खेल कर उसकी गरिमा को नहीं गिराया जा रहा है। संसद व राज्य विधानसभाओं के चुनाव जीतने के लिए धनबल और बाहुबल का प्रयोग ही लोकतांत्रिक मूल्यों के विरुद्ध है, फिर जब धर्म, सम्प्रदाय के नाम पर चुनाव लड़े जाने लगे तब राष्ट्रीय फूटन की आशंका उत्पन्न होना स्वाभाविक था। इन गन्दे हथकंडों का उपयोग पहले राष्ट्रीय स्तर के राजनीतिक दलों ने किया। फिर राज्य स्तरीय और क्षेत्रीय दलों ने इसे स्वार्थश अपना लिया। क्योंकि इसमें उन्हें जीत की सम्भावनाऐं दिखने लगी। इतना ही नहीं इन विनाशक हथियारों के साथ-साथ विदेशी तथा काला धन, हिंसा व अपराध ने भी अपने पैर फैला दिये जिससे सज्जन वर्ग चुनाव लड़ने से ही कतराने लगा । कारण न तो उसके पास विदेशी या काला धन था और न ही वह हिंसक प्रवृत्तियों का सहारा ले सकता था। नतीजन धनपशुओं, बाहुबलियां, अपराधी तत्वों की विजय होती चली गयी। जो अब बहुत बड़ी संख्या तक पहँच चुकी है। लोकतंत्र के लिए यह नितांत घातक स्थिति है।

उच्च न्यायालय पीठ ने इसी ११ जुलाई के अपने निर्णय द्वारा उत्तर प्रदेश में जातियों के आधार पर की जा रही राजनीतिक दलों की रैलियों पर तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी है। कोर्ट का मानना है कि इन जातीय रैलियों से समाज बंटता है जो संविधान की मूल भावना के खिलाफ है। जाहिर है उन सभी राजनीतिक दलों के लिये बहुत जबरदस्त आघात है जो पिछले कई वर्षों से भाईचारा सम्मेलन, दलित सम्मेलन, ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय, पिछड़ा वर्ग और अति पिछड़ा वर्ग सम्मेलनों के नाम बेतहाशा धन की बर्बादी करते हुए अपने वोट इकट्ठा करने के कुत्सित काम में लगे हुए थे।

संक्षेप में, भाईचारा सम्मेलन के नाम से ब्राह्मणों के २१ व दलितों के १७ सम्मेलन ऐसे क्षेत्रों में कराये जा चुके हैं जहाँ इन जाति के लोगों का या तो बाहुल्य है अथवा वहाँ से जाति विशेष के उम्मीदवार लड़ाये जाने वाले हैं।

इसी प्रकार अपने को समाजवादी बताने वाले दल ने भी अति पिछड़ा सम्मेलन कराये हैं जिनमें अनेक जातियों को दलितों के समान अधिकार दिलाने की वकालत करते हुये अपने वोट

बैंक को संवारने का भोंडा प्रयास किया गया। सवर्णों की पार्टी मानी जाने वाली भाजपा भी पिछड़ा सम्मेलन, वैश्य सम्मेलन, कुशवाहा सम्मेलन आदि कराने मे नहीं हिचकी है। अन्य बड़े व छोटे क्षेत्रीय दल भी इस दिशा में सक्रिय रहे हैं। विडम्बना है कि ये सभी सम्मेलन उक्त पार्टियों के पदाधिकारियों द्वारा ही संचालित, आयोजित किये जाते रहे हैं जो उस वर्ग विशेष से आते हैं जिनके सम्मेलन हो रहे हैं। इसमें भागीदारों का शायद एक पैसा भी स्वयं का खर्च नहीं होता है बल्कि खान-पान, सैर सपाटा मुफ्त में मिल जाता है। ऐसे सम्मेलनों की गरिमा या महत्व किस काम का जिसमें भागीदार स्वतः लिप्त न हो।

बहुत दूर न जाकर केवल अंग्रेज शासन काल तक (१९४७) का सर्वेक्षण किया जाय तो ज्ञात होगा कि इस महारोग (जातिगत बँटवारा) का सूत्रपात उन्हीं के द्वारा हुआ था। यह मात्र सत्ता पर कब्जा बनाये रखने के लिये अपनाया गया था। एक सेमिनार में मैने लगभग २० वर्ष पूर्व कहा था कि इस जहर (अपराध व जातिवाद) का स्वाद स्वतंत्र भारत के राजनीतिक दलों को ''मीठा'' लगा था और उन्होंने भी संसद या विधानसभा चुनावों में जाति के आधार पर उम्मीदवारों का चयन स्वीकार किया था ताकि जाति विशेष के वोटर भारी संख्या में उसके ''अपने उम्मीदवार'' को वोट देकर विजयी बनायें। १९७० आते-जाते तो यह एकदम बढ़ गया। सफलता मिलने पर यह मंत्र आगे चलकर प्रायः सभी राजनीतिक दलों ने अपनाया जो आज असाध्य रोग का रूप ले चुका है। प्रदेश के तत्कालीन प्रमुख गृह सचिव श्री के० के० बख्शी ने स्पष्ट रूप से मेरे कथन का समर्थन किया था।

उच्च न्यायालय पीठ के वरिष्ठ न्यायाधीश उमानाथ सिंह व न्यायमूर्ति महेन्द्र दयाल सभी लोकतंत्र प्रेमियों की बधाई के पात्र हैं जिन्होंने राजनीतिक दलों की जातीय रैलियों पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाने का फैसला देकर सभी राजनीतिक दलों , केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकार सहित भारत के चुनाव आयोग को पक्ष रखने का निर्देश दिया है।

क्या सभी राजनीतिक दल जो आज फैसले का स्वागत कर रहे हैं वास्तव में आगामी चुनावों में निर्णय का पालन करेंगे? हमें अंदेशा है कि जैसे पूर्व में भी कई प्रकरणों पर देखा जा चुका है- नाम बदलकर ऐसे सम्मेलन कराने की होड़ जारी रहेगी। आवश्यकता है तो बस यही कि मतदाता प्रबुद्ध बना रहे ताकि इन गंदे खिलाड़ियों का खेल सफल न होने पाये।

भारत में फिर से सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय लोकतांत्रिक परिवेश कायम हो और वसुधैव कुटुम्बकम् का मंत्र साकार हो सके।

If you lose your mobile:

1) Dial *#06# from your mobile.

2)Your mobile shows a unique 15 digit.

3)Note down this number anywhere, which will help trace your mobile in case of theft.

4)Once stolen you just have to mail this 15 digit IMEI number to cop@vsnl.net

5)You will find where your hand set is being operated even in case your number is being changed.

Share this message to all your friends and relatives.

जनकवि गया प्रसाद शुक्ल 'सनेही'

डा० एस० पी० दीक्षित

पूर्व डीन, लखनऊ विश्वविद्यालय

सनेही जी द्विवेदी युगीन काव्य संचरण के अंतिम चरण में सर्वाधिक गणमान्य कवि रहे हैं। वे युग-प्रवर्तक कवि कहे जाते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने साथ एक समूचे काव्य-सम्प्रदाय का गठन किया था। इतिहासकारों ने उसे सनेही-सम्प्रदाय, सनेही मंडल, सनेही स्कूल और सनेही निकाय की संज्ञा दी है। यह युग वैसे तो लगभग पचास वर्षों तक सक्रिय रहा है, फिर भी ''सुकवि'' के प्रकाशन काल (१९२८ से १९५१) तक इसकी नियामक भूमिका रही है। इस अवधि में सनेही जी ने अपने समकालीन कवि कलाकारों और अपने परवर्ती शिष्यों का एक बहुत बड़ा समुदाय निर्मित किया और उत्तर भारत में मंचीय कविता के माध्यम से उनका सूत्र संचालन किया। सनेही जी ने युगाचार्य के रूप में न केवल अपने मंडलीक कवियों की रचनाओं का भावात्मक और भाषिक संस्कार किया, बल्कि उनका दिशा-दर्शन भी किया। साथ ही समग्रतः उनके कवि व्यक्तित्व की प्राण प्रतिष्ठा की। सनेही जी के इन शिष्यों में अनूप शर्मा, हितैषी, प्रणयेश, अभिराम आदि विशेषतः उल्लेखनीय है। इनके अतिरिक्त उनके समवयस्क कितने ही कवियों ने उन्हें अपना ''मानस-गुरु'' माना। अस्तु, इतने बड़े साहित्य-साम्राज्य के शास्ता बनकर उन्होंने जो गौरव अर्जित किया, वह युग गुरु आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के बाद सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि आचार्य नन्द दुलारे बाजपेयी तक ने सनेही जी को ''कवि चक्रवर्ती'' की उपाधि दी और अन्य अनेक विद्वानों ने उन्हें व्यक्ति नहीं, बल्कि संस्था स्वीकार किया।

सनेही जी की बहुत बड़ी देन है कवि प्रतिभाओं की खोज अथवा उनके कवि व्यक्तित्व का निर्माण। उन्होंने नवोदित कवियों को पिंगल का प्रशिक्षण दिया, उनकी काव्य-भाषा का परिमार्जन किया, उन्हें अभिव्यन्जना कौशल सिखाया और काव्योचित विषय वस्तु का बोध कराया। यदि अपनी इस कारयित्री प्रतिभा का विनियोग वे अपनी रचना-धर्मिता में करते तो स्वयं और बेहतर कवि सिद्ध होते। वस्तुतः दूसरों को बनाने में वे बिगड़े उसी तरह जैसे आचार्य द्विवेदी परिनिष्ठित-भाषा के निर्माण में खप गये। इससे सनेहीजी को तात्कालिक प्रसिद्धि भरपूर मिली। वे बराबर कवि सम्मेलनों के सभापति रहे बारम्बार सम्मानित किये गये। बड़े-बड़े दिग्गज साहित्यकार उनकी तेजस्विता से पराभूत और वर्चस्व से आतंकित रहे, लेकिन वे इतिहास के लम्बे दौर में स्थायी कीर्ति अर्जित न कर सके। सनेजी जी ने एक छन्द में स्वयं ही कहा है -

''जलना हो जिसे वो जले मुझ सा बुझना हो जिसे मुझ सा बुझ जाये।''

वास्तव में उनका कवि-व्यक्तित्व उल्का की गति से उभरा और अपने प्रभामण्डल से चकाचौंध पैदा करके भभक कर समाप्त हो गया। आज तो उसकी क्षीण धूम रेखा ही दिखायी दे रही है। निश्चय ही वे अब इतिहास की वस्तु हैं और एक गुजरे हुए जमाने के व्यतीत-व्यक्ति हैं। किसी साहित्यकार के आविर्भाव और तिरोभाव का ऐसा उदाहरण और नहीं मिलता है। सनेही जी को अपने जीवन के अंतिम चरण में स्वयं के कालातीत हो जाने का गहरा अहसास हुआ था तथापि उनका अहं पराभव स्वीकार करने को तैयार न था। एक छन्द में वे कहते हैं – 'पथ सैकड़ों को दिखला चुका हूँ।' इस गर्वोक्ति के पीछे गहरी अन्तर्वेदना है।

सनेही जी का यह व्यक्तित्व-विलयन सकारण है। उनका रचना-संसार चूंकि द्विवेदी युगीन प्रवृत्तियों से प्रेरित प्रभावित था और उनके ही समानान्तर चूंकि छायावादी काव्य-आन्दोलन चल रहा था, अतः उसकी अवमानना तथा अंधस्पर्धा का मूल्य उन्हें चुकाना पड़ा। छायावादी कविता वस्तु और शिल्प दोनों दृष्टियों से इतनी सुललित और चित्ताकर्षक सिद्ध हुई कि उसके समक्ष सनेही जी की इतिवृत्तात्मक, सामयिक स्थूल-विवरणों पर आधारित खुरदरी कविता नहीं ठहर पायी।

समसामयिक प्रसंगों से जुड़े रहने का यही अवश्यम्भावी परिणाम होता है। सनेही जी स्वाधीनता आन्दोलन में विशेष सक्रिय थे। उन्होंने अपनी कविताओं में असहयोग आन्दोलन तथा गांधी जी के सत्यागह को स्वर दिया। विचारों से उग्र और क्रांतिकारी होते हुए भी उन्होंने अहिंसा का समर्थन किया और यदाकदा नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की जयकार की। आन्दोलन से सम्बद्ध होने के कारण उन्होंने भारत-भक्ति के गीत गाये। प्रभात फेरियों के प्रयाण-गीत लिखे और सामाजिक सुधार के उद्देश्य से दहेज, छुआछूत, गरीबी आदि समस्याओं का चित्रण किया, लेकिन उनका यह काव्य शाश्वत मूल्य-बोध से न जुड़ पाया। उनकी इन रचनाओं को मात्र सामयिक महत्ता मिली। उनकी सूक्तियाँ जन-जन का कण्ठहार बन गयीं। यहाँ तक कि वे प्रतिनिधि पत्रों के मुख्य-पृष्ठों पर छपने लगीं। जैसे- ''स्वदेश'' पत्र में मोटो के रूप में उनकी यह सूक्ति प्रकाशित होती रही –

''जो भरा नहीं है भावों से,
बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है,
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।''

कानपुर से प्रकाशित ''वर्तमान'' में यह सूक्ति निरन्तर प्रकाशित होती रही-

''शानदार था भूत, भविष्यत् भी महान है। अगर सम्भालें आप उसे जो वर्तमान है।'' इसी प्रकार आगरा से प्रकाशित प्रसिद्ध ''सैनिक'' में उनका यह उद्धरण अर्से तक छपता रहा –

कमर बाँधकर अमर समर में नाम करेंगे।
सैनिक हैं हम विजय स्वत्व संग्राम करेंगे।।

स्वातंत्र्य-पूर्व युग का शायद ही कोई ऐसा प्रबुद्ध नागरिक हो, जिसके कानों में सनेही जी की ये पंक्तियाँ न गूँजी हों –

''जिसको न निज गौरव तथा
निज देश का अभिमान है।
वह नर नहीं, नर-पशु निरा है
और मृतक समान है।''

इस प्रकार की रचनाएँ वर्तमान शती में यदि और किसी ने लिखीं हैं, तो वे हैं राष्ट्रकवि पं० वंशीधर शुक्ल। किंतु वंशीधर जी जनपदीय बोली-बानी तक सीमित रहे, जबकि सनेही जी पूरे हिन्दी जगत में छाये रहे। उनके साथ कानपुर का श्रेष्ठिवर्ग था और ब्रज तथा खड़ी बोली का काव्य-मंच था। उनके कवि सम्मेलनों के समक्ष उर्दू मुशायरे फीके पड़ गए थे।

सनेही जी की कविता मूलतः मंचों की कविता थी। समस्यापूर्ति उनका व्यसन था। सनेही रूप में वे ब्रजभाषा की श्रृंगारपरक रचनायें करते थे और 'त्रिशूल' तरंगी नाम से राष्ट्रीय रचनाएँ। 'ओज' के कवि होते हुए भी करुण उनका अंगी-रस प्रतीत होता है, क्योंकि उनकी श्रेष्ठ रचनायें-कौसल्या-विलाप, शैव्या-विलाप, दुर्योधन-विलाप, अशोक वाटिका में सीता, कृषक क्रन्दन आदि करुण रस प्लावित हैं।

सनेही की इन रचनाओं में वर्णनात्मकता, इतिवृत्तात्मकता तथा सपाटबयानी की जब अति हो गयी तो उनसे जन मानस ऊब गया। अब उसे ऐसी भाव-व्यंजना की चाह थी, जिसमें नयी भंगिमा हो। ये संभावनाएँ, छायावादी काव्य में थी, अतः छायावादी व्यंजना के आगे ''सनेही-स्कूल'' निःशेष और अपदस्थ हो गया।

सनेही जी 'द्विवेदी युग' के पंच महाकवियों में माने जाते हैं। काल-क्रमानुसार वे मैथिलीशरण गुप्त से वरिष्ठ रहे हैं। कहना न होगा कि उन्होंने काव्य की एक विशिष्ट पृष्ठभूमि निर्मित की थी। उनकी रचनाओं में प्रखर राष्ट्रीय चेतना और सौन्दर्य की गहन अनुभूति थी। बस, इसका परिविस्तार करते हुए वे देशकाल की सीमा का अतिक्रमण नहीं कर पाये, अर्थात् सामयिक संदर्भों से जुड़े हुए नारे ही लिखते रहे। जिस कवि ने १६१३ में 'कृषक क्रन्दन' और १६२० में ''साम्यवाद'' पर कविता लिखी हो, उसकी दूर दृष्टि पर संदेह नहीं किया जा सकता, लेकिन दैनिक घटनाओं से ऊपर न उठ पाने के कारण वे शाश्वत जीवन-बोध को आत्मसात नहीं कर पाये और इसीलिए छायावाद से पिछड़ गये। यों लम्बे अर्से तक उन्होंने छायावाद को निष्प्रभाव रखा। उन कवियों को कई बार मंचों से उखाड़ दिया और उनका परिहास किया, किन्तु अन्ततः उनको छायावाद को अंगीकार करना ही पड़ा। निराला पर लिखा गया उनका

यह छंद इसका प्रमाण है -

कोई समझे न, पै सनेही मैंने समझा है,
'कवि है, सुकवि है, महाकवि निराला है।'

छंदोबद्ध कविता के प्रबल पोषक होते हुए भी सनेही जी ने यहाँ मुक्तक छंद के प्रवर्तक निराला जी का यशोगान किया है। संभवतः इसीलिए कि छायावादी कवियों ने अपनी काव्य साधना द्वारा उनको अभिभूत कर लिया था।

सनेही जी के काव्य का तुलनात्मक विवेचन करने से उनकी सर्जना का प्रामाणिक परिचय मिल सकता है। उन्होंने संध्या, एकतारा, किरण, पावस, शरद्, ज्योत्स्ना पर अनेक रचनाएँ कीं, किन्तु इनमें वे रीतिकालीन पच्चीकारी से ऊपर नहीं उठ पाये, जबकि छायावादियों ने प्रकृतिपरक रचनाओं में बिम्ब प्रतीक की मालायें सजा दी हैं। सनेही जी के राष्ट्रगीतों में भी ऐसी ही स्थूलता दिखाई देती है। एक उदाहरण देखिए -

'जय जय भारत राष्ट्र
परम प्रिय प्राण हमारे।
सम्भव विभव विभूति
जयति जय त्राण हमारे।''

यह गीत प्रसाद के ''अरुण यह मधुमय देश हमारा'', निराला के - ''भारति जय विजय करे'' और पंत की कविता - ''भारत माता ग्रामवासिनी'' के समक्ष शिथिल है। सनेही जी भले ही राष्ट्रीयता से कहीं अधिक ओत-प्रोत रहे हों पर उनकी राष्ट्रीयता वर्तमान से ही संदर्भित है, उसके सांस्कृतिक उत्कर्ष से। इसके साथ ही उनकी रचनाएँ जनसाधारण को संबोधित हैं, इसलिए उनका स्तर पूर्णतः उभर नहीं पाया है। नारा बन जाने के कारण उनकी कविताएँ भाषिक प्रमाद से त्रस्त भी हो गयीं, जबकि छायावादी कवियों ने शब्द सचेत होकर एक एक अर्थ-ध्वनि को उसकी परिपूर्ण छवि के साथ उकेरा है। इसका उदाहरण सनेही जी की ''दिल्ली चलो'' अथवा 'असहयोग कर दो'' जैसी रचनाओं से दिया जा सकता है।

वस्तुतः जनजागरण में उनकी बहुत बड़ी भूमिका रही है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि सनेही जी ने काव्य पत्रकारिता की पहल की और कविता को जनसंवाद की भूमिका पर आरूढ़ किया। उन्होंने भाड़ झोंकने वाले तक को, अपने पारस-प्रभाव से छवि बना दिया। परन्तु उनकी अधिकाधिक सर्जनाशक्ति जननायकों के प्रशस्ति लेखन और दल संयोजन में व्यय हो गयी। इसमें उनका ''बैसवारी-बानक'' भी एक कारण रहा है। उनकी ब्रजभाषा की रचनाएँ इस कथन की साक्षी हैं कि उनके पास अकूत शब्द-सम्पदा थी और अद्भुत उद्भावना शक्ति थी। एक उदाहरण विचारणीय है -

''नारी गही बैद सोऊ बनिगो अनारी सखि,
जानै कौन रोगु याहि गहि-गहि जात है।
कान्ह कहै चौंकति चकित चकराति ऐसि,
धीरज की भीत देखि ढहि-ढहि जाति है।
सही-सही जात नहिं, कही कहि जाति नहीं,
कछु को कछु सनेही कहि-कहि जाति है।
बहि-बहि जात नेह, दहि-दहि जात देह,
रहि-रहि जात प्रान, रहि-रहि जात हैं।।''

इस छंद में देव की सी आनुप्रासिक छटा है और सबल-भाव संवेदन भी, किन्तु विचारणीय बिन्दु यह है कि सनेही युग तक यह मध्ययुगीनता बोध अप्रासंगिक हो चला था। इसलिये यह चिर-तृप्ति न दे सका। ये कविताएं रीतिकाल में महत्व पा सकती थीं, बीसवीं शती में नहीं। सनेही जी ने फारसी काव्य शास्त्र के बल पर इसे काफी ताजगी दी पर वह भी स्थायी न सिद्ध हुई। छायावादी सार्वभौम चिन्तन के समक्ष वह महफिली स्वर हल्का पड़ गया।

सनेही जी ने युग सम्वत् आस्वाद के विपरीत बोलचाल की हिन्दी अपनायी किन्तु वह उर्दवी प्रयोगों से बोझिल रही इससे उनकी भाषा में कहीं-कहीं जीवन्तता तो आ गयी पर साथ ही हल्कापन भी प्रकट हो गया। इसे स्पष्ट करने के लिए उनकी ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं-

''क्षण में तलातल रसातल को जाती भेद,
क्षण में ही लेती है खबर आसमान की।''

यहाँ खबर लेना मुहावरा इसलिए खटक रहा है क्योंकि वह पूरे वाक्य की बुनावट में पैबन्द सा लगा हुआ है। इस प्रकार का भाषिक प्रमाद प्रायः तभी आता है जब कवि अपने काव्य कौशल को महफिली अंदाज देने लगता है। सनेही युग के अन्य कवियों में त्रिशूल-त्रिपुटी के दो कवि, अनूप और हितैषी कहीं बेहतर टकसाली-भाषा का प्रयोग कर रहे थे। शवार्णी, दर्शना, कल्लोलिनी आदि से ऐसे अंश उद्धृत किये जा सकते हैं।

तात्पर्य यह है कि सामयिकता, महफिलबाजी और भाषिक शैथिल्य के कारण कवि सनेही का आयुष्य-क्रम क्षरित हुआ है। यदि वे मठ का मोह संवरण कर लेते, निरन्तर अवधान तथा अध्यवसाय पूर्वक भाषा एवं बोध के स्तर पर वैश्व-चेतना से जुड़ जाते तो निस्सन्देह वे इस युग के मूर्धन्य कवियों में होते। हाँ, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद आदि प्रवृत्तियों के बीच एक अन्तःसलिला युगधारा के भागीरथ बनने का श्रेय उन्हें अवश्य है। हिन्दी साहित्येतिहासिक में यह युग छायावाद-प्रगतिवाद का समवयस्क है। इसलिये नये सिरे से काल-विभाजन एवं नामकरण करते हुए इसको पुनर्प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए। इतिहास के पुनर्लेखन द्वारा ही सनेही के यशः-काय को संरक्षित किया

जा सकता है। सनेही जी का काव्य-इतिहास बोध विशद् है। उन्होंने मांगलिक आयोजनों पर आशीर्वचन, स्वागत, विदाई, प्रशस्ति, आक्षेप, समस्यापूर्ति तथा सूक्ति से सम्बन्धित अनेक कविताएँ लिखीं। कई इतिवृत्तात्मक लम्बी कविताएँ लिखी। गजलें, नज्में, प्रयाण-गीत और पारम्परिक विषयों पर पन्द्रह, बीस हजार छन्द रचे, जो उस युग की पत्र-पत्रिकाओं और सहृदय सामाजिकों से प्राप्य हैं। यदि इनका शोध सर्वेक्षण करके उनकी उत्कृष्ट रचनाओं का एकत्र संकलन प्रकाशित कर दिया जाये तो उनका पुनराकलन किया जा सकता है।

पात्रता

जिसमें ग्रहण करने की क्षमता हो उसी को पात्र कहते और इस गुण को पात्रता कहते हैं। घड़ें में पात्रता होती है इस लिये वह जल संग्रह कर लेता है। परन्तु यदि उसे उलट कर रख दें तो उसकी पात्रता समाप्त हो जाती है और वह जल संग्रह नहीं कर पाता। मानवों में यह पात्रता विनय से आती है। विनय का आधार विद्या है।

देखा गया है कि सभी विद्वान धनी नहीं होते। कारण... ऐसे विद्वानों में विनय का अभाव उनकी पात्रता अहंकार गर्वोक्ति और कटु वाणी की वजह से नष्ट हो जाती है। पात्रता की कमी से ऐसे विद्वान विपन्नता में जीवन यापन करते हैं।

लक्ष्मी को देवी माना गया है। देवी बगैर विनय के कैसे प्रसन्न हो सकती है अतः विद्या के साथ साथ विनय से उपजी पात्रता ही सभी सुखों के साधन धर्म और धन की उपलब्धता का मूल अस्तु कहा है

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धानमाप्नोति धनादद्धर्मः ततः सुखम।।

विद्या से विनय आती है विनय पात्रता लाती है। पात्रता से धन की प्राप्ति होती है धन से धर्म और तब सुख प्राप्त होता है।

राम भजन कर ले रे प्राणी

राम भजन कर ले रे प्राणी
वर्ना पीछे पछतायेगा।
पता नहीं कितना है जीवन
अन्त समय कब आ जाएगा।
राम भजन कर ले रे प्राणी
वर्ना पीछे पछताएगा।

बहुत करी औरों की चिन्ता
बहुत करी सेवा औरों की।
बहुरि करोगे अपनी चिन्ता
समय कहाँ फिर तू पाएगा।
राम भजन कर ले रे प्राणी
वर्ना पीछे पछताएगा।

मान-प्रतिष्ठा धन और दौलत
इनकी चिन्ता अब तो छोड़ो।
राम नाम से प्रीति लगा लो
साथ तेरे बस ये जाएगा।
राम भजन कर ले रे प्राणी
वर्ना पीछे पछताएगा।

हर इच्छा पूरी करने को
बहुत करी तूने मनमानी।
जैसे कर्म किए हैं तूने,
वैसे ही तो फल पाएगा।
राम भजन कर ले रे प्राणी,
वर्ना पीछे पछताएगा।

प्राणी ये जग है एक सपना
कोई नहीं यहाँ है अपना।
ठेस लगेगी जब अपनों से
भेद समझ में तब आएगा।
राम भजन कर ले रे प्राणी
वर्ना पीछे पछताएगा।

मनुष्य जनम मिलना है मुश्किल
बड़े भाग्य से ये तन पाया।
राम शरण तू आ जा पगले
जनम नहीं फिर पाएगा।
राम भजन कर ले रे प्राणी
वर्ना पीछे पछताएगा।

डा० नरेन्द्र कुमार मिश्र
नेपालगंज मेडिकल कालेज
नेपाल

मैं कहाँ जाऊँ

डा० अलका निवेदन
५२१/१६६, भैरो प्रसाद मार्ग
बड़ा चाँद गंज, लखनऊ,२४

निर्दयी दुनिया, बेरहम जहाँ,
अब कभी भी न आऊँगी यहाँ।
मेरी निर्माता तू है कहाँ,
मुझे जन्म देकर खो गई कहाँ?
जन्म लेते ही मुझे अनाथ किया।
मुझे कूड़े के घर का वास दिया।
तेरी आँखों में न आया एक कतरा आँसू,
कड़कती बिजली ने मुझे कँपा दिया।
खुले नभ तले धरती की गोद में,
तेरी याद ने मुझे न जाने कितना रुलाया।
नन्हीं जान सहम गई तब,
जब कुत्तों का झुण्ड आया।
मेरी आँखों में भय,
हलक में माँ-माँ-माँ,
कतरा-कतरा मेरा वो नोच कर खा गया।
निर्दयी दुनिया, बेरहम जहाँ
अब कभी भी न आऊँगी यहाँ।

जो तोड़ी तुमने कलियाँ,
तो फूल कहाँ से लाओगे?
बेटी की हत्या करके ,
बहू कहाँ से लाओगे?
माँ को धरती पर आने दो
उनको भी लहलहाने दो।
बंद करो ये नृशंस पाप
जीवन ज्योति जलाने दो।

माँ दुर्गा की भक्ति करके,
भक्त बड़े बन जाते हो।
कहाँ गई भक्ति सारी
जब माँ को मार गिराते हो।
बिटिया को जीवन पाने दो।
घर-आँगन महकाने दो।
बंद करो ये महा पाप
जीवन-ज्योति जलाने दो।

मैं कृतज्ञ हूँ कान्यकुब्ज वाणी के संपादक डा० डी० एस० शुक्ला जी का जिनके द्वारा प्रकाशित काले पृष्ठ को पढ़कर अपने हृदयोद्गार प्रकट करने का मुझे अवसर मिला। नमन शत-शत नमन।

शिल्पी

प्रमोद शंकर शुक्ल
सुरजूपुर, रायबरेली

तुमने जब से मूर्ति गढ़ी है,
देवालय का चलन चला है।
धूप दीप में अर्चन उतरा
घड़ियालों का स्वर मुखरा है।

निराकार था ब्रह्म पूर्व में,
तुम ने ही साकार किया है।
माला पुष्प सुगन्ध आदि से
नव नूतन श्रृगांर किया है।।

पौराणिक जिस पृष्ठभूमि पर,
गढ़ी मूर्ति, हँस उठी कल्पना।
सत्य शिवम् सुन्दर बनकर,
जाग उठी साकार सर्जना।।

तेरे श्रम का ही प्रतिफल है,
निराकार साकार हो गया।
ध्यान-कर्म की भक्ति भावना
का संबल, सोपान हो गया।।

इसी समारोह में लोकार्पित होने वाले खण्ड-काव्य ''शिल्पी'' से उद्धरित

श्रद्धाँजलि

THOSE WHOM GOD LOVES DIE YOUNG

आनन्द शंकर शुक्ल (१६४२-७३)

नयनन में जो रहते थे सदा, उनकी अब कान कहानी सुन्यों करैं

जन्म दशमी भाद्रपद सम्वत् २००१ जुलाई १६४४, मृत्यु अष्टमी ज्येष्ठ २०३१ ६ जून १६७३

स्व० आनन्द शंकर शुक्ल का जन्म अपने फूफा नाना पं० उदित नरायन पाठक के यहाँ लखनऊ में हुआ था। इनके पिता पं० यू० डी० शुक्ल और बाबा पं० द्वारका प्रसाद शुक्ल ''शंकर'' दोनो ही जज थे। बचपन से ही बहुत शालीन और गम्भीर स्वभाव के थे। किशोरावस्था में पहुंचते-पहुंचते यह बहुत ही संयत और मुंतजिम हो चुके थे। परिवार में कोई उत्सव हो या किसी की बीमारी सारी जिम्मेदारी स्वतः वहन करते थे। फैजाबाद से बी. एस-सी. करने के बाद लखनऊ विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. कर दो साल रायबरेली में वकालत करने के बाद ६६ में पी.सी.एस. (जे) में चयनित हो कर आगरा में मुंसिफ के पद पर तैनात हुए। मृत्यु के समय यह मुंसिफ फतेहबाद आगरा थे। वकालत में ज्यादा आर्थिक लाभ होने के बावजूद पिता की आज्ञा पालन कर मुंसिफी में योगदान दिया। यह बहुत ही स्नेही, पितृ भक्त और caring थे। जब मैं कानपुर मेडिकल कालेज हास्टल मे रह रहा था दद्दा रात ६ बजे हास्टल आये। मेरा खाना कमरे में आया। मैने भाई से खाने को पूछा बोले खा कर आया हूं। बाद में पता चला कि वह स्वयं उस रात भूखे रहे ताकि छोटा भाई भूखा न रह जाये। ८ जून १६७३ को रात में जब बीमार पड़े तो मित्रों से कहा कि सुबह मेरे भाई जो डाक्टर हैं को सूचित कर देना। वह आकर सब संभाल लेगा। रात में उसे मत डिस्टर्ब करो थका होगा। दुर्भाग्य से सुबह आने के पहले ही ब्रह्म मुहूर्त सुबह ४ बजे वह नहीं रहे।

लौट कर नहीं आता कब्र से कोई लेकिन, प्यार करने वालों को इन्तजार होता है। भाई का संस्कार स्वयं मैने ही किया था परन्तु वर्षों तक यह उम्मीद बनी थी कि शायद भुवाली सन्यासी* की तरह वह भी आ जाये।

* भुवाली सन्यासी की भारत के विधिक इतिहास की एक अद्भुत परन्तु सत्य घटना है। देखें पृष्ठ ६२

डा० डी.एस. शुक्ल
अनुज

Sonal Misra - The Fertile Mind

डा० आर० के० मिश्रा (पिता)

सोनल द्वारा बनाया गया स्वयं का रेखाचित्र

उरई के जिला अस्पताल मे १७ जून १९८१ में जन्मी सोनल जन्म से ही अत्यन्त स्वाभिमानी और आत्म-निर्भर रही। छोटी सी थी और यदि रात में कहीं अकेले जाना होता तो कहती थी ''मुझे डर नहीं लगता है''। एक बार जब मात्र ५-६ साल की थी, वो अपनी बहनों के साथ अपनी माँ के ननिहाल में खेल रही थी। तब उसने एक दौड़ते हुए बछड़े से अपनी एक साल की बहन को बचाया जब कि उससे बड़े बच्चे डर कर भाग गये थे।

पढ़ने में अत्यंत कुशाग्र सोनल, हाई-स्कूल की परीक्षा के समय बीमार हो गयी। उसकी तबीयत इतनी खराब थी की वो बैठ भी नहीं पाती थी। सभी काफी परेशान थे कि पास भी हो पायेगी या नहीं। जब यू० पी० बोर्ड रिजल्ट आया तो साइंस के सभी पेपर में ९० से ऊपर लाकर आनर्स से प्रथम आई थी। जब वह यू०पी० बोर्ड में डिस्टिंक्शन से पास हुई तो जगह-जगह उसको बुला कर पुरस्कृत किया जाने लगा। जब उससे खुश होकर पूछा गया कि उसे क्या चाहिये, तो जवाब में अपने पापा को बोली ''पापा, प्लीज अपने लिए एक नया सूट बनवा लीजिये!''

अपनी मजबूत इच्छा-शक्ति, चंचल मन और भोले स्वरूप से सबको मोहने वाली सोनल एक महत्वाकांक्षी इन्सान थी। सोनल का आग्रह था कि कार्मल से हाई-स्कूल की पढ़ाई पूरी कर के वह लॉरेटो से इण्टर करे जहाँ यू०पी० और आई०एस०ई० बोर्ड दोनो थे और उसके साथ-साथ उसकी सभी दोस्तें भी वहाँ जा रही थी। अपनी दोस्तों का अटूट प्यार खुद ही में एक मिसाल था। अपने शरारती गुट में अपने खुराफाती दिमाग की वजह से उसको ''थ्मतजपसम डपदक'' भी कहते थे।

इन सब के साथ-साथ सोनल एक लेखक, कवियित्री और प्रतिभावान चित्रकार भी थी। उसको कला में रूचि अपनी माँ की कलात्मकता से प्रेरित होकर आई और उसकी कलाकारी, रचनात्मकता और चित्रकारी ने हमेशा उसकी बहनों को प्रेरित किया। एक जिम्मेदार बहन की तरह उसने हमेशा अपनी छोटी बहन को प्रोत्साहित किया और उसको अपनी सारी कला सिखाई।

सोनल ने अपनी जिंदगी में काफी संघर्ष किए और मुसीबतों का सामना भी किया। लेकिन उसने कभी हार नहीं मानी और हर मुसीबत का मुस्करा कर सामना किया। १९ अप्रैल २००४ में जब वह अपने कॉलेज से लौट रही थी, एक काले रंग की गाड़ी ने उसे टक्कर मार कर उसके परिवार और प्रियजनों की जिंदगी में भी अंधेरा कर दिया। चार दिन कोमा और मल्टिपल फ्रैक्चर्स को झेलते हुए सोनल ने २३ अप्रैल २००४ को प्रातः अपना शरीर छोड़ दिया। एक अजीब सा सन्नाटा था हवाओं में उस दिन, बादल भी रो उठे थे। बाईस साल की उम्र में सोनल एक फरिश्ता बन कर हमारी जिन्दगी से चली गयी थी। इस पर उसी की डायरी में लिखी कविता''फरियाद'' से दो पंक्तियाँ यहाँ दोहराई हैं:

'' अब ऐसा तो इंसाफ न कर, छोड़ दे कुछ इस जमीन के लिए भी,
कितनी हवस है आखिर तुझे, फरिश्तों को अपने दरबार में सजाने की''

स्मृति शेष

श्रीमती शकुन्तला मिश्रा

दया, ममता, करूणा, प्यार, वात्सल्य अगर घनी-भूत हो एक आकार लें तो जो चेहरा उभरेगा वह मेरी माँ का होगा। मैं क्या हम सभी अगर आज हैं और जो कुछ हैं वह अपनी माँ की बदौलत। जब तक माँ हमारी ज़िन्दगी में रहती है वह हवा और पानी की तरह हमारी जिन्दगी में शामिल रहती है। ज्यादातर लोग उसकी एहमियत का ध्यान नहीं कर पाते। परन्तु जब माँ नही होती तब ही हमें माँ के महत्व का भान होता है।

पिता के सख्त अनुशासन की कड़ी धूप में माँ शीतल छाव थी। सज़ा के पाने के बाद माँ के दुलार से सभी कष्ट मिट जाते थे। परन्तु इतनी ममता के बाद भी उन्होंने अनुशासन हीनता को कभी प्रश्रय नही दिया। प्यार से ही पर स्पष्ट शब्दों में अनुशासन हीनता की हमेशा वर्जना की । सभी बेटे और बेटियों की शादी होने के बाद जब वह अपने बहू, बेटों, बेटी और दामाद तथा पौत्र पौत्रियों के साथ होतीं तो उनके मुख पर सन्तोष का भाव आज भी हमारी आखों में सुरक्षित है।

जीवन के अन्तिम पड़ाव पर वह कैंसर से पीड़ित थी। सभी ने मिल कर सेवा की और अन्त तक उन्हें इस घातक बीमारी का पता नही चलने दिया। पर संभवतः उन्हें आसन्न चिर निद्रा आभास था। हम जब भी उनसे ठीक होने की बात करते तो बड़े स्नेह से मुस्करा कर ईश्वर का नाम लेने लगती। बड़ी शान्ति से उन्होंने कष्ट सहा और शान्ति से ही भव बन्धन से मुक्त हो गई।

पूरे परिवार की ओर से

८१, शक्ति नगर, फैज़ाबाद रोड,
लखनऊ-२२६०१६

विनोद मिश्र (ज्येष्ठ पुत्र)
एवं समस्त मिश्र परिवार

रत्नेश कुमार द्विवेदी (राज बाबू)

1951-2005

रत्नेश कुमार द्विवेदी (राज बाबू) का जन्म जुलाई १९५१ में उन्नाव जिले के प्रतिष्ठित जमीदार पं० जगदीश प्रसाद द्विवेदी के पौत्र के रूप में उन्नाव में हुआ था। राजा बाबू के पिता पं० सूरज प्रसाद द्विवेदी शिव के अनन्य भक्त थे। उनका अधिक समय शिव अराधना व तीर्थ यात्रा में बीतता था।

रत्नेश परिवार के सबसे बड़े बेटे थे अतः पढ़ाई के साथ-साथ अपनी गाँव की खेती व अन्य पैत्रक सम्पत्ति की भी देख रेख करते थे। इस प्रकार ही उन्होंने कानपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. एल.एल.बी. किया। उनकी दो बेटियाँ कामाक्षी और मानसी उनकी दो आँखे थी। पढ़ाई के बाद उन्होंने मृत्यु पर्यन्त बी.आइ.सी. कानपुर के मैनेजर पद पर कार्यरत थे। अतः अपनी माँ व परिवार के साथ कानपुर में बी आइ सी के बँगले में ही रहने लगे थे। कानपुर रहते हुए भी वह अपनी जन्म भूमि उन्नाव व वहाँ के समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभाते रहे। वह एक बहुत ही सरल और मिलनसार स्वभाव के इन्सान थे। कभी किसी से कटुवचन नहीं बोलते थे और इसीलिये वह सभी को अत्यन्त प्रिय थे।

अकस्मात् एक कार दुर्घटना में २००५ में उनका आकस्मिक निधन हो गया।

मेरी व्यथा ....

मैं जो कुछ रोती गाती हूँ
किस विधि से दिवस बिताती हूँ
यह निष्ठुर दुनियाँ क्या जाने।
यह जीवनमरण विधान देख
सुख के अगनित अरमान देख
यह निष्ठुर दुनियाँ क्या जाने
जो दुःख पड़ते सहती हूँ
मैं हूँ सूनेपन में रहती
उन बिन सब सुन पाती

मैं संग सहित फिर भी असंग
मेरा तो अपना और ढंग, प्रभु के संग
कुछ चढ़ा हुआ है अजब रंग।
किस बल पर मैं इतराती हूँ
प्रभु चरणों में आकर मुझको
कुछ ऐसा जोश मिला
इस पागलपन में होश मिला
मैं जाग गई हूँ सो करके
अब खोज रही हूँ खो करके

सब अपनी व्यथा सुनाती हूँ यह निष्ठुर दुनियाँ क्या जाने

मीनू द्विवेदी (पत्नी)

Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow

Form for life membership of Kanyakubja Sabha/ Kanyakunj Vaani magazine

1. Name of Member : ....

2. Age : ....

3. Gotra : ....

4. Father's/Husband's Name : ....

5. Address : ....

....

6. Landline/Mobile No.: ....

7. Email : ....

8. Name of spouse / Father's Name : ....

9 Education : ....

10. Occupation (Post / Designation):

Unmarried Children   Name   Age   Education   Job

a) ....

b) ....

c) ....

11. Any other information :

I want to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow/Kanyakubja Vaani** and willing to pay Rs. ....in Cash/Cheque No. .... Name of Bank .... favouring *"Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow" payable at Lucknow.*

12. Name of person introducing : ....

Date :   (Signature)

Reciept

Received with thanks Rs. .... in Cash / Cheque No. .... Name of Bank .... from .... who wants to become life member of **Akhil Bhartiya Sri Kanyakubja Pratinidhi Sabha, Lucknow / Kanyakubja Vaani.**

(Signature)

Note :
1. Contribution for life member of **Kanyakubja Sabha** is **Rs. 500/-**
2. Contribution for life membership of **Kanaykubja Vaan**i is **Rs. 1100/-**
3. Contribution for one issue of **Kanyakubja Vaani** is **Rs. 25/- + postage charges.**

शुभकामनाओं सहित :

विन्ध्यवासिनी

✦ टेन्ट एण्ड फर्नीचर हाउस
✦ कैटरर्स
✦ लाइट एण्ड गेस्ट हाउस

श्रीराम मार्केट, सर्वोदय नगर,
निकट नया कुकरैल पुल, लखनऊ

मो० : 9415206550, 9415015780, 9415015650

होली मिलन समारोह 2013

कान्य कुब्ज रत्न

पत्रिका विमोचन

श्री झंझटी का हास्य

रायबरेली यूनिट से सम्मान

स्वागत

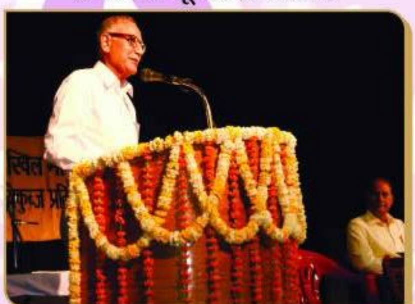

महासचिव की रिपोर्ट

16 दिसम्बर 2013 को निर्भय की स्मृति में दीप दान

26 जनवरी 2014 को संविधान की शपथ

प्रथम दीपावली मिलन समारोह

काली पीठ नैमिषारण्य, सीतापुर

सभा की मीटिंग

हृदय रोग विशेषज्ञ

सर्जरी विशेषज्ञ

निःशुल्क औषधि वितरण

स्त्री एवं बाल रोग विशेषज्ञ

ई.सी.जी.

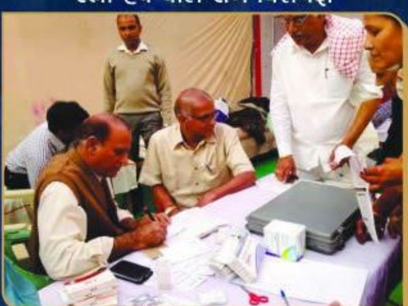

अस्थि रोग विशेषज्ञ

अध्यक्षीय सम्बोधन

Printed by : Printco Printers, 22, Jagat Narain Road, Lucknow. Ph.: 0522-4105512